✻ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ✻

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

जयतु भारतम्

जयतु भारती

भारत-भारती-वैभवम्

जयति मदीया भारतमाता

रचयिता

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज
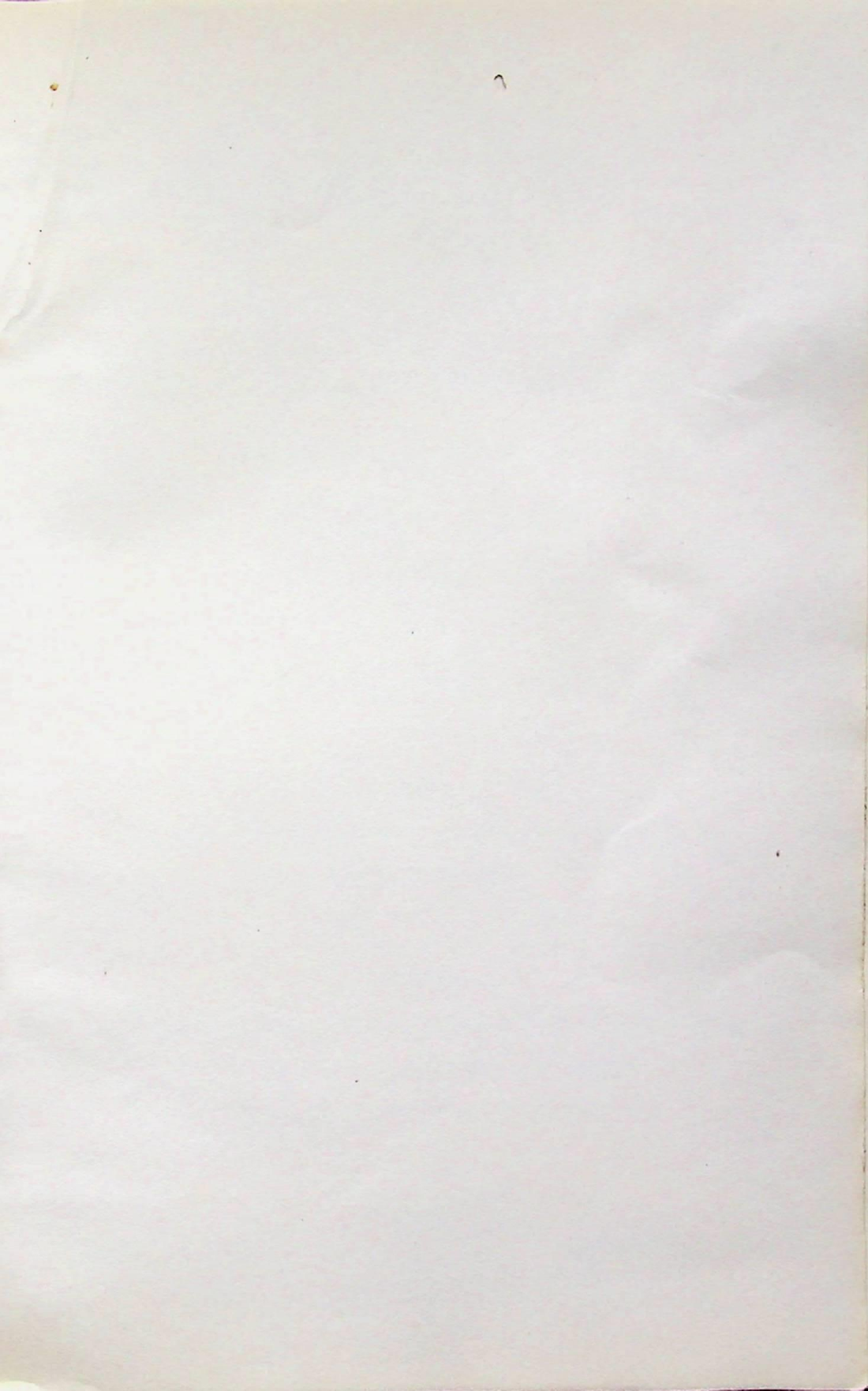
* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
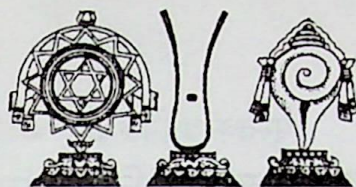
।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

अनन्तश्रीविभूषितजगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज-

प्रणीतम्-

भारत-भारती-वैभवम्

व्याख्याकारः--

पं० श्रीगोविन्ददासः ('सन्त') निम्बार्कभूषण

धर्मशास्त्री-पुराणतीर्थ

प्रकाशक--

अखिलभारतीय-श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ-शिक्षासमितिः

निम्बार्कतीर्थम् (सलेमाबादः), पुष्करक्षेत्रे

किशनगढः, जि० अजमेरः (राजस्थानम्)

गङ्गादशमी

वि० सं० २०६५ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०४

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

तृतीयावृत्ति--
दो हजार

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
पच्चीस रुपये

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

जयतु भारतम् --*-- जयतु भारती

समर्पणम्

नत्वा सर्वेश्वरं देवं राधामाधवमच्युतम् ।
भारत-भारतीमात्रे वन्दितायै सुरादिभिः ।।१ ।।

यत्कृपास्फुरितं स्वान्ते सर्वलोकहितावहम् ।
भारत-भारती वैभवाऽऽख्यं शास्त्रं समर्पये ।।२ ।।

समर्पकः
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

तिथिः आषाढ शुक्ला २ गुरुवासरः दिनाङ्कः २० जून १९८५

विक्रमाब्दः २०४२

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठम्
निम्बार्कतीर्थम्
(सलेमाबादः) राजस्थानम्

प्राक्कथन

राधामाधव-युगल-वर जय जय श्रीसर्वेश ।
जय जय निर्जर-भारती, जय जय भारतदेश ।।
उद्बोधन में जो हुआ, मङ्गलमय उपदेश ।
पढ़ो मनन पूर्वक उसे, 'सन्त' यही सन्देश ।।

श्रुति-स्मृति पुराण-इतिहास प्रभृति सभी सच्छास्त्रों में भारतवर्ष, भारती अर्थात् अनादिवैदिक सनातन भारतीय संस्कृति का परिज्ञान (महत्व) बताने वाली सुरभारती-संस्कृत भाषा की महिमा के विस्तार पूर्वक वर्णन मिलता है । भगवत्स्वरूप वेद का सभी के लिये यह आदेश है कि-मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव, इत्यादि ।

इस परम पावन उपदेश में देवगण भी जन्म धारण करने की अभिलाषा करते हैं । जैसे--भगवान् श्रीवेदव्यास कृत श्रीमद्भागवत के पञ्चम स्कन्ध अध्याय १९ श्लोक २१ से २३ पर्यन्त ३ श्लोकों में भारत की महिमा का सुन्दरतम दिग्ददर्शन कराया है । विस्तार भय से सब न बतलाकर केवल १ श्लोक का ही तात्पर्य बतलाना पर्याप्त है--

अहो अमीषां किमकारि शोभनं प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः ।
यै र्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहा हि नः ।।

(भा० ५/१९/२१)

देव-वृन्द भारतवर्ष में उत्पन्न हुये मनुष्यों की इस प्रकार महिमा का गुणगान करते हैं-अहो ! जिन प्रणियों ने भारतवर्ष में भगवान् की सेवा के योग्य मनुष्य जन्म प्राप्त किया है, उन्होंने ऐसा क्या पुण्य-धर्म किया है ? अथवा इन पर स्वयं श्रीहरि ही प्रसन्न हो गये हैं ? इस परम सौभाग्य के लिये तो सदैव हम भी लालायित रहते हैं ।

श्रीविष्णु पुराण में भी--

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे ।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ।।

(विष्णु पुराण अंश २ अ० ३ श्लोक २४)

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

ग्रन्थ विमोचन

अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक, परमकरुणामय, सर्वशक्तिमान्-सर्वमंगलविधायक श्रीसर्वेश्वर प्रभु की महती कृपा से अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा प्रणीत राष्ट्रभक्ति परक ग्रन्थ ''भारत-भारती-वैभवम्'' का विमोचन आज अ.भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ श्रीसर्वेश्वर-संस्कृत महाविद्यालय श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) के अर्द्धशताब्दी समारोह के शुभावसर पर भारत के सुप्रतिष्ठित राजनेता एवं राजस्थान राज्य एवं राजस्थान के लोकप्रिय **मुख्यमंत्री श्री हरिदेवजी जोशी** के करकमलों द्वारा सम्पन्न हो रहा है।

भौतिक चाकचिक्य, पाश्चात्य-अन्धानुकरण तथा वर्तमान आणविक युग की विषमताओं से सम्प्रति जनजीवन आस्थाहीन एवं राष्ट्रीय भावना से शून्य अधिकांशतः अनैतिक तथा उच्छृङ्खल हो गया है। ऐसी स्थिति में भारतीय वैदिक संस्कृति के उच्चतम आदर्शों, आध्यात्मिक शाश्वत परम्पराओं एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित मौलिक एवं कर्तव्यनिष्ठ भारतीय जीवन की चिरंतन धारा पुनः प्रवाहित हो - यही इस ग्रन्थ का उद्देश्य है। ''राष्ट्र ही सर्वोपरि है तथा राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च प्रेमभाव-संयुक्त भारतीयता ही हमारी राष्ट्रीयता है'' इस मूल भावना का जीवन में संचार हो यही ''भारत-भारती-वैभवम्'' ग्रन्थ का अन्तरङ्ग भाव है। भगवान् श्रीसर्वेश्वर से यही अभ्यर्थना है कि इस विमोचित ग्रन्थ ''भारत-भारती-वैभवम्'' की यह पुनीत अन्तरङ्ग भावना राष्ट्र के जनमानस में व्याप्त हो।

- व्याख्याकार 'सन्त'

शुभमिति पौष शु. 13 सोमवार
वि.सं. 2043
दि. 12 जनवरी, 1987

भारत–भारती–वैभवम्

ग्रन्थ प्रणेता
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी''
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज एवं
''**भारत–भारती–वैभवम्**'' ग्रन्थ का विमोचन करते हुए
राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय श्रीहरिदेवजी जोशी

देवगण भी निरन्तर यही गुणगान करते हैं कि जिन्होंने स्वर्ग अपवर्ग के मार्ग भूत भारतवर्ष में जन्म लिया है तथा जो इस कर्म भूमि में जन्म लेकर अपने फलाकांक्षा से रहित कर्मों को परमात्मस्वरूप श्रीविष्णु भगवान् को अर्पण करने से निर्मल (पाप-पुण्य से रहित) होकर अनन्त में ही समर्पित हो जाते हैं, वे पुरुष हम देवताओं की अपेक्षा अधिक धन्य अर्थात् भाग्यशाली हैं ।

श्रीविष्णु पुराण में २४ वें श्लोक से लेकर २८ वें श्लोक पर्यन्त इस भारत की महिमा का वर्णन है, अतः यहाँ पर भी विस्तार भय से एक ही श्लोक का भाव प्रदर्शित किया गया है ।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज ने भी इस विचार से कि व्यक्ति में व्यक्तित्व, समाज में सुसंघटन और अपने-अपने कर्तव्य पालन का उत्तरदायित्व सब शिक्षा पर ही निर्भर है । शिक्षित व्यक्ति ही भारत और भारती (देववाणी) संस्कृत भाषा के महत्व को जान सकता है कि हमारे पूर्वज तपोनिष्ठ उन ऋषि-महर्षियों ने अपने तपोबल से ऋतम्भरा प्रज्ञा द्वारा शास्त्रों का निर्माण कर आध्यात्मिक दृष्टि से देश और संस्कृत भाषा का कितना महत्व बताया है--इस पर विचार करते हुये आचार्यश्री ने **''भारत-भारती-वैभवम्''** नामक इस ग्रन्थ-रत्न की रचना की है । जिसमें आपने भगवान् के विराट् स्वरूप भारतदेश व भारत का महत्व बताने वाली भारती (देववाणी) संस्कृत भाषा की वन्दना करते हुए इनके वैभव (महत्व) का जो अनुपम दिग्दर्शन कराया है वह पढने योग्य है । साथ ही सर्व साधारण जन की समझ में आने हेतु इस ग्रन्थ की संस्कृत व्याख्या व् हिन्दी भावार्थ लिखने की मुझे आज्ञा दी । अतः आज्ञानुसार मैंने भी जैसी बनी संस्कृत व्याख्या एवं हिन्दी भाषा में भावार्थ की सेवा सम्पादित की है । यद्यपि संस्कृत भाषा में अपूर्व साहित्य भण्डार भरा हुआ है और अनेक ग्रन्थ भी हैं तथापि इस लघुरूपात्मक ग्रन्थ में जो भाव प्रदर्शित हुआ है ऐसा ग्रन्थ कहीं देखने में नहीं आया । आशा है, भारत और भारती के प्रेमीजन इसे पढकर परम लाभान्वित होंगे ।

निवेदक--

पं० गोविन्ददास 'सन्त'

सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकम्

श्रीमन्मुकुन्दचरणाब्जमधुव्रता ये संसारसिन्धुतरणेऽथ च तारणाय ।
लग्नानिरन्तरमहो ! रचयन्ति यस्मिन् तस्मै नमो भगवते व्रजवल्लभाय ॥

श्रीदेवर्षि नारदजी ने अशान्त चित्त वेदव्यासजी को अनन्त भगवान् के यशोङ्कित पदों वाली रचना करने का आदेश दिया--

तद्वाग्विसर्गो जनताऽघविप्लवो यस्मिन्प्रतिश्लोकमवद्धवत्यपि ।
नामान्यनन्तस्य यशोङ्कितानि यच्छ्रृण्वन्ति गायन्ति गृणन्ति साधवः ॥

(श्रीमद्भागवत १/५/११)

कृपण (दीन) वत्सल वेदव्यासजी ने तब भागवत की रचना की थी जो आज तक उस रचना ने अनन्त जीवों का कल्याण कर दिया, कर रही है और करती ही रहेगी । यद्यपि संस्कृत आदि किसी भी भाषा की कविता करने में तद्विषयक गम्भीर अध्ययन की अपेक्षा रहती है, तथापि यह अनिवार्य नियम नहीं है । वेदव्यासजी ने कहाँ पर कैसा, कितना गम्भीर अध्ययन किया था ? सम्भवतः इस प्रश्न का उत्तर मिलना असम्भव भी नहीं तो कठिन अवश्य है । आज हम देखते हैं बहुत से आचार्य पोष्टाचार्य आदि उपाधियों से विभूषित विद्वानों की काव्यसृजन की प्रगति होते हुए भी वे रचना नहीं कर पाते, शास्त्रों के अध्ययन में किया हुआ उनका श्रम अध्ययन मात्र ही फलित होकर रह जाता है। काव्यसृजन का फल सुयश प्राप्ति बतलाया गया है, किन्तु वह मिलता है भगवत् कृपा से ही और रचनायें भी भगवत्प्रेरणा से ही हो सकती हैं ।

आत्मा ज्ञानस्वरूप और ज्ञानधर्मी अर्थात् ज्ञानवान् है, अध्ययन उपदेश आदि सब उद्बोधक रूप से स्मृति करा देने वाले हैं, भगवद्विभूति रूप महापुरुषों को साधारण जनों जैसी अध्ययन की अपेक्षा नहीं रहती है । उन्हें संकेत मात्र से ही बहुत जानकारी हो जाती है । भगवान् ने समस्त वेदों का ज्ञान कुछ ही क्षणों में ब्रह्माजी को करा दिया था जिनके सम्बन्ध में बड़े-बड़े विद्वान् आज भी चकित हैं--"तेने ब्रह्म हृदाय आदिकवये मुह्यति यत्सूरयः" अन्तर्यामी रूप से आत्मा में विराजमान सर्वज्ञ प्रभु ने ब्रह्माजी को भी ज्ञानी और कुशल कर्मठ बना कर लोक पितामह सिद्ध कर दिया । ऐसे ही वेदव्यासजी अवतीर्ण हुए । लोकोक्ति भी है "कवि बनाये नहीं जाते आविर्भूत होते हैं ।" स्वयं भगवान् भी

यही कहते हैं--बुद्धि, ज्ञान, असम्मोह, क्षमा, सत्य, दम, शम, सुख, दुःख, भव, भाव, भय, अभय, अहिंसा, समता, तुष्टि, तप, दान, यश और अपयश प्राणियों को इन सबकी प्राप्ति मैं ही कराता हूँ । (गीता. २०)

साधारण जन तुकबन्दियां करते समय अर्थ का चिन्तन करते हुए शब्दों का विन्यास करते हैं, किन्तु प्रभु कृपा सम्पन्न विद्वानों के शब्दों के पीछे-पीछे अर्थ अनुसरण करता है, अर्थात् उनकी शब्दावली धाराप्रवाहवत् चलती रहती है ।

प्रस्तुत--'भारत-भारती-वैभवम्' रचना भी एक भगवत्प्रेरणा जन्य कृति अवगत होती है, जिसका सृजन लोक कल्याण की दृष्टि से ही हुआ है । "सर्व खल्विदं ब्रह्म" इत्यादि श्रुतियों तथा पुराणों में स्पष्टतया विश्व को विश्वम्भर का रूप बतलाया गया, इसी प्रकार श्रीनिम्बार्क भगवान् ने भी "ब्रह्मात्मकत्वादिति वेदविन्मतम्" "सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकम्" आदि "वेदान्तकामधेनु-दशश्लोकी" में अनुपम उपदेश किया है । अतएव पर्वत नद-नदी मठ-मन्दिर प्रतिमायें वृक्ष वनस्पति यहाँ तक की भूमिगत रज का कण-कण वन्दनीय है, इन सबकी वन्दना भी भगवद्वन्दना में ही समाविष्ट हो सकती है । 'भारत-भारती-वैभवम्' में आरम्भिक नव (९) गीतिपद्य और छब्बीस इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा उपजाति वसन्त तिलका आदि छन्दों में भगवद् दृष्टि से वस्तु प्रतिपादन किया गया है । इसी प्रकार भारती (सुरवाणी) वैभव का सृजन है । "सर्वं विष्णुमयं जगत्" इससे यह अच्छी प्रकार सिद्ध होता है । जिस प्रकार वेदों में पृथ्वी सूक्त, उषा सूक्त, मण्डूक सूक्त आदि हैं, उसी प्रकार इस रचना को एक सूक्त समझना चाहिये । जिस प्रकार उन सूक्तों के पाठ से अभ्युदय होता है उसी प्रकार आचार्यश्री द्वारा विरचित इस "भारत भारती वैभवम्" के पाठ से भी अभ्युदय होना स्वाभाविक है ।

भाव ज्ञात होने के लिये संस्कृत टीका और हिन्दी भाषा कर दिये जाने से यह सर्व साधारण के उपयोग की वस्तु बन गई है । आशा है भावुक भक्तों का इसके पठन-पाठन, मनन-चिन्तन से बहुत कुछ हित होगा ।

--**व्रजवल्लभशरण**, वेदान्ताचार्य-पंचतीर्थ

अधिकारी

ज्येष्ठ कृष्ण १४ शनिवार

वि० सं० २०४२ **अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद**

* दो शब्द *

आदिकवि वाल्मीकि से प्रारम्भ होने वाली ''भारत-भारती'' की पुनीत परम्परा रससिद्ध कवि कालीदास, भवभूति, तुलसीदास, केशवदास, हरिऔंध, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त प्रभृति अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन कवियों से होती हुई वर्तमान आचार्यकोटि के कवि अनन्तश्रीसमलङ्कृत जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के काव्य-सृजन तक आयामित हुई है । भारतवासियों में राष्ट्रीय चेतना की जागृति प्रस्तुत रचना का प्रमुख उद्देश्य है । भारतवर्ष के प्राचीन गौरव के मनोयोग पूर्वक वर्णन के साथ ही साहित्य, सङ्गीत, धर्म एवं दर्शन का चतुर्व्यूहात्मक रूप भी इसमें साकार हो उठा है ।

काव्य की दृष्टि से 'भारत-भारती-वैभव' उच्चकोटि की कृति है । रमणीयता की कसौटी पर भी यह खरी उतरती है । अभिधा का अवलम्ब इसका विशिष्ट गुण है । शैली का प्रवाह एवं भाषागत आज प्रस्तुत काव्य को दीप्ति प्रदान करते हैं । भावनाओं को उद्वेलित करने की अद्भुत शक्ति इसमें विद्यमान है । स्वतन्त्रता के पुजारी, देश-सेवक एवं विद्वद्वर्ग इसे आत्मसात् कर आपाद-मस्तक मग्न हुए बिना न रहेंगे । भारतदेश के प्रति कवि की मंगल-कामना इसमें मुखरित हो उठी है । निःसन्देह यह सभी के लिए समान रूप आदरणीय है ।

--डॉ० प्रेमनारायण श्रीवास्तव 'प्रियादास'
प्रोफेसर तथा शोधनिर्देशक स्नातकोत्तर
हिन्दी-विभाग
प्राच्य दर्शन महाविद्यालय, वृन्दावन

भारत - भारती - वैभवम्

भारत की अनन्त और असीम महिमा है । जिस भारत की रम्य धरा पर स्वयं सर्वेश्वर श्रीहरि नाना स्वरूपों से अवतीर्ण होते हैं । जहाँ की पवित्र भूमि की रज को देवगण भी शिर पर धारण कर अपना अहोभाग्य मानते हैं । अगणित ऋषि-मुनि तपस्वी योगी यति सन्यासी विरागी महात्मा जन इसकी मङ्गलमयी क्रोड में तपःसाधना करते हैं । गङ्गा-यमुना जैसी अनेक पुण्यसलिला नदियाँ जहाँ अपने कल-कल निनाद से प्रवाहित होती हुई मानव के पापों का क्षय करती हैं । जिस सुभग वसुन्धरा पर आध्यात्मिक चेतना का मनोहर दर्शन सर्वदा विद्यमान है वस्तुतः ऐसे भारतवर्ष का गुणगान व्रजेश्वर सर्वेश्वर का ही गुणगान है । इसी प्रकार सुरभारती संस्कृत भाषा का भी अपरिमित माहात्म्य है । यह देववाणी न केवल भारत की भाषाओं की ही जननी है, अपितु समस्त विश्व-भाषाओं की मूल स्रोत है । इस भारती में अनन्त ज्ञान-विज्ञान निहित है । अध्यात्मज्ञान की तो यह महासिन्धु रूप है । ऐसी दिव्य वाणी का स्वाध्याय परम पुण्य रूप है । अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर आचार्य श्रीचरण श्री ''श्रीजी'' महाराज ने परम कृपा कर 'भारत-भारती-वैभवम्' की अनुपम रचना कर जो अनुग्रह किया है वह निश्चय ही परम महत्वपूर्ण है । आपश्री ने भारत भारती के साथ-साथ मानव मात्र के प्रति जो उद्‌बोधन दिया है वह और भी अत्यन्त महत्वशाली एवं आदर्शरूप है । आज के विभ्रान्त जन मानस को सत्पथ की ओर अग्रसर करने का यह उच्चतम दृढ सोपान है । ''भारत भारती वैभवम्'' का भाव गाम्भीर्य विलक्षण है । रचना सरल सरस एवं अतीव मधुर है । अलङ्कार, अनुप्रास, उपमा आदि काव्यगत गुण स्वाभाविक एवं धारावाहिक है । आचार्यश्रीचरणों के पूर्व रचित ''स्तवरत्नाञ्जलि'' ''श्रीयुगलगीतिशतकम्'' ''श्रीराधामाधवशतकम्'' ''निकुञ्ज सौरभम्'' आदि संस्कृत वाङ्मय ग्रन्थों एवं ''श्रीसर्वेश्वर सुधा बिन्दु'' हिन्दी भाषा पद्यात्मक ग्रन्थों की भाँति यह प्रस्तुत ग्रन्थ भी अत्यन्त उपादेय एवं महनीय है । इस ग्रन्थ के अनुशीलन से जन समुदाय को देशभक्ति, संस्कृत भाषा के प्रति सहज अनुराग स्वतः जागृत होगा, तथा अपने समुचित कर्तव्यों का भी उद्‌बोधन होगा जिससे देश में फैले हुए भ्रष्टाचार, अनाचार आदि दुर्गुणों दुर्व्यसनों के निरोध की स्वस्थ

दिशा मिलेगी ।

आचार्यश्रीचरण अपने उज्ज्वल आचरण द्वारा, प्रवचन द्वारा एवं विविध धार्मिक-शैक्षणिक कार्यों द्वारा, अखिल भारतीय स्तर के अनेक आयोजनों द्वारा स्वदेश की जनता को सन्मार्ग पर चलने की दिशा प्रदान कर रहे हैं । आपश्री ने समस्त सम्प्रदाय के धर्माचार्यों को साथ लेकर मतवाद की संकीर्णताओं के ऊपर मानव मात्र के कल्याण के लक्ष्य द्वारा जो अनूठे आयोजन किये हैं उनसे न केवल राजस्थान ही परिचित है अपितु भारत की आध्यात्मिक चेतना पूर्ण रूप से परिचित है । भारत की विविधता में एकता का दर्शन आपके व्यक्तित्व की सर्वातिशायिनी विशेषता है । आपने अपने पूर्वाचार्यों की भाँति जिस वैदिक सनातन संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया है यह सर्वविध रूप से अत्यन्त महत्व-पूर्ण है ।

साथ ही परम वैदुष्यपूर्ण विविध रचनाओं द्वारा आप सुरभारती की उपासना में संलग्न हैं । आगरा विश्वविद्यालय (आगरा) द्वारा सम्पादित प्रकाशित बी. ए. प्रथमवर्ष के पाठ्य ग्रन्थ 'काव्यसुधा' में संग्रहीत आपकी संस्कृत पद्यात्मक रचना परीक्षार्थी एवं संस्कृतानुरागी सभ्य को बलात् आकृष्ट करती हैं । सैकड़ों स्तोत्रों द्वारा आपने संस्कृत भाषा के गौरव को बढाया है । प्रस्तुत 'वैभवम्' में आपश्री का भारतराष्ट्र के प्रति अपूर्व अनुराग की झलक देखने को मिलेगी । विविध ताल युत पदों में सरस रचना के स्वर यदि प्रारम्भ से ही भारतीय बालकों को शालाओं के माध्यम से कण्ठ में उतर जावे तो निःसन्देह राष्ट्रप्रेम का प्रभाव बालकों पर पड़ेगा और देश प्रेम का महत्व वे समझेंगे । मध्यम एवं स्नातक स्तर के सभी छात्रों को इसके सार अंश देश प्रेम की ललक बढाने में समर्थ होंगे ।

इतने महान् आचार्य द्वारा देश प्रेम के लिये किया गया कार्य सिद्ध करता है कि प्रथम अपने देश की वन्दना है और राष्ट्र की एकता मूल मन्त्र है । व्याख्या सहित यह 'वैभव' सर्व साधारण को भी बोध योग्य हो गया है । मैं ऐसी कृति के रचयिता महाराजश्री के चरणों में प्रणाम अर्पित करता हूँ और देश के नायकों का ध्यान आकृष्ट करना उपयुक्त समझता हूँ कि वे इसके प्रचार-प्रसार से हमारी एकता को दृढ करें । नमन सहित-

डा० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी एम. ए. सप्ताचार्य, पी-एच्. डी. डी. लिट्
सदस्य-जिला कानूनी सहायता परामर्श समिति मथुरा, तथा पू. सदस्य का. का. उत्तरप्रदेश
संस्कृत अकादमी, सम्पादक संस्कृत-**व्रजगन्धा पत्रिका**, मथुरा (उत्तरप्रदेश)

* नवीन व्युत्पादक ग्रन्थ *

"भारत-भारती-वैभवम्" अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज की मौलिक रचना है । इसमें संस्कृत की सरल व मनोवैज्ञानिक शिक्षा पद्धति को ध्यान में रखते हुए चारुतम पदों में प्रचलित प्रसिद्ध हृदयग्राही संगीत व अन्य प्रकार के छात्रोपयोगी सरल गीतों के साथ-साथ संस्कृत के विविध छन्दों में चित्ताकर्षक पदों का निर्माण किया गया है ।

प्रारम्भ में देशभक्ति के गीत भारत राष्ट्र के प्रति आत्मीयता एकता व बन्धुता को उत्पन्न करते हैं । तदनन्तर देवभाषा संस्कृत की महत्ता के बोधक अभिनव गीत हैं जो बालकों को संस्कृत के अध्ययन की ओर प्रेरित करते हैं । शेष भाग में 'जनान् प्रत्युद्बोधनम्' शीर्षक से ऐसे समाज व राष्ट्र के उपयोगी हितकर उपदेशों का संकलन किया गया है, जिनके अध्ययन से राष्ट्रीयता, नैतिकता, स्वतन्त्रता की सुरक्षा, सदाचार, शुद्धता, सत्यता आदि सद्भावों का उदय होता है तथा भ्रष्टाचार, मिलावट, अनुशासनहीनता, मादकता आदि दुर्गुणों का समूल उन्मूलन करने की प्रवृत्ति जागृत होती है। माता-पिता व गुरु की सेवा, राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठा, अनुशासन व नम्रता पर विशेष बल दिया गया है ।

शब्द योजना संस्कृत भाषा की दृष्टि से नवीन व व्युत्पादक है । साधारण बोलचाल के लिए उपयोगी सरल वाक्यों का सन्निवेश भी किया गया है । इसके अध्ययन से बालकों का संस्कृत में प्रवेश व रुचि होना स्वाभाविक है । संस्कृत को सरल व हृदयग्राही बनाने का यह सफल प्रयास है ।

संस्कृत की उपाध्याय व शास्त्री एवं सामान्य शिक्षा की उच्चतर माध्यमिक व महाविद्यालय कक्षाओं के पाठ्यक्रम के लिए यह अत्यन्त उपयोगी एवं स्तर के अनुकूल ग्रन्थ है । इसके अध्ययन व अध्यापन से संस्कृत जगत् के छात्रों का अवश्य हि हित होगा, ऐसी मेरी धारणा है । पूज्यपाद आचार्यश्री के प्रसाद के रूप में प्राप्त इस ग्रन्थरत्न के प्रचार-प्रसार की मैं हृदय से कामना करता हूँ ।

--रामनारायण चतुर्वेदी

निदेशक : संस्कृत शिक्षा राजस्थान, जयपुर

दि० २३/५/८५

अभ्यर्थना

प्रशिक्षण के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तानुसार पद्य पाठ का बड़ा महत्व है। गद्य की पुस्तकों में भी यत्र-तत्र पद्यों का प्रयोग अवश्य किया जाता है क्योंकि यह सस्वर पाठ (गान) का विषय होने से मनोरञ्जक व बुद्धि में ताजगी लाने वाली पद्धति हैं । लघु कक्षाओं में तो भाषा का शिक्षण गेय रूप में ही कराया जाता है ।

सरलता से गा-गा कर संस्कृत वाक्यावली को कण्ठस्थ रखने व उसके अनुसार अनुवाद में यत्र-तत्र क्रियाओं व शब्दों का प्रयोग करने से व्युत्पत्ति बढती है । श्रीविष्णु शर्मा ने काक, कूर्म, मृग व आखु की कथाओं के माध्यम से राजकुमारों को ६ मास में ही नीति शास्त्र का विद्वान् बना दिया-इसका मूल गद्य भाग के साथ-साथ अनेक रोचक व शिक्षाप्रद पद्यों का सन्निवेश ही है । पञ्जरस्थ शुक के द्वारा प्रयुक्त 'स्तनयुगमश्रुस्नातम्०' इत्यादि एक ही आर्या गीति 'कादम्बरी' जैसे विशाल उपन्यास का चमकृत मूल है ।

इन्हीं सब तथ्यों को ध्यान में रखकर पूज्यपाद अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने "भारत-भारती-वैभवम्" नामक पद्य व गेय ग्रन्थ का प्रणयन किया है । यह वरेण्य, सुखावह व गुण बोधक है । इसकी रचना सर्वहिताय हुई है । स्वयं श्रद्धेय श्रीआचार्यचरण ने ग्रन्थ में इसका निर्देश किया है--

आचार्यवर्य्यान् प्रणिपत्य चित्ते विरच्यते सर्वहिताय गेयम् ।
सुखावहं "भारत-भारती-वैभवं" वरेण्यं गुणबोधकारम् ॥

गीतों में 'वन्दे मातरम्' के समान 'वन्दे नितरां भारत वसुधाम् । दिव्य हिमालय गङ्गा-यमुना-सरयू-कृष्णा शोभित सरसाम्' आदि देश भक्ति तथा "अमरभारतीमभिवन्देऽहम्" "संस्कृत सरणिः समुपादेया" इत्यादि देव भारती संस्कृत के महत्व-बोधक छात्रोपयोगी गीतों की सरस रचना अनुपम है । 'सर्वेश्वर !

सुखधाम ! नाथ ! में संस्कृतरुचिरस्ति०' इत्यादि पदों की आकर्षक रचना से इस ग्रन्थ की उपयोगिता और भी अधिक बढ गई है ।

प्राप्त स्वतन्त्रता की सुरक्षा के लिए मानव समाज के नैतिक धरातल को समुन्नत बनाये रखना आवश्यक है । यहाँ का प्रत्येक प्राणी अनुशासित हो । चोरी, डकैती, मिलावट, कपट आदि समाज के घातक दुर्गुणों से दूर रहे । मद्य-मांस-सेवन, द्यूत व रिश्वतखोरी समाप्त हो । एकता व बन्धुता की भावना सुदृढ हो । राग, द्वेष, उच्छृङ्खलता एवं आपसी फूट व विवाद आदि का उन्मूलन हो । परोपकार की भावना जागृत हो--आदि सदुपदेशों का ग्रन्थन इसी ग्रन्थ के चतुर्थ भाग 'जनान् प्रत्युद्बोधनम्' में किया गया है ।

इसके अध्ययन व मनन से पाठकों की भावना शुद्ध होगी । संस्कृत में व्युत्पत्ति होगी । राष्ट्र में एकता व भाईचारे की प्रतिष्ठा होगी । अतः ऐसे ग्रन्थों का संस्कृत के पाठ्यक्रम में अवश्य निर्धारण होना चाहिये । पूज्यपाद आचार्यश्री के इस कृपा प्रसाद के रसास्वादन का सौभाग्य सभी को प्राप्त हो--ऐसी श्रीसर्वेश्वर प्रभु के श्रीचरणों में मेरी अभ्यर्थना है ॥

विनीत--

रामगोपाल शास्त्री
भूतपूर्व-उपनिरीक्षक
संस्कृत निदेशालय राजस्थान
जयपुर (राज०)

ज्येष्ठ शुक्ला ४ शुक्रवार
सम्वत् २०४२ वि०
२४ मई १९८५ ई०

राष्ट्र–भक्ति का महनीय ग्रन्थ

"भारत-भारती-वैभवम्"

निकुञ्ज-भावपरक-नितान्त-ऐकान्तिक-परमगुह्य-निम्बार्कीय रसोपासना के मूर्द्धन्य मर्मज्ञ, रससिद्धाचार्य, रसिक शिरोमणि-अनन्त श्रीविभूषित श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री "श्रीजी" महाराज द्वारा विरचित "भारत-भारती-वैभवम्" ग्रन्थ का अवलोकन करते ही मेरे मन में कृतिकार के अभीष्ट के प्रति एक सहज औत्सुक जागृत हुआ कि अहर्निश-सर्वेश्वर-उपासना-रत हृदय में देशनुराग जनित भारत भारती का यह मोह "सुमरणी-सुमेरू" की स्थिति में पहुँचकर क्योंकर मूर्तित हुआ ? सुमधुर-भावपरक अनेक रससिद्ध-ग्रन्थों के प्रणयनान्तर भी धर्माचार्य-धर्म-परायण, परमवीतरागी विरक्त हृदय में निर्झरित 'भारत-भारती' के प्रति विशिष्ट समर्पित एवं रागात्मक भावोद्रेक की अन्तः सलिला का यह प्रबलतम उद्वेग निश्चित ही उनके सुहृदय में विद्यमान 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'--भावना की अभीष्ट अभिव्यक्ति ही है:-

भारतवर्षं मनसा ध्येयम् ।
सततं सर्वै राष्ट्रसुभक्तैः साधुकदम्बैश्चानुष्ठेयम् ।।
धर्माचार्यै र्धर्मसुनिष्ठै र्नितरां धीरैः परिसन्धेयम् ।
राधासर्वेश्वरशरणेन प्रचुरं हृद्यं हृद्यवधेयम् ।।५।।

आचार्यश्री की यह अभीष्ट रचना युग समीचीन है युगदृष्टा कवि-हृदय युगबोध एवं युगचिन्तन से सर्वथा तटस्थ नहीं रह सकता । युग का चिन्तन, शतशतजनों में व्याप्त घनीभूत पीड़ा तथा समष्टि के कल्याण से प्रेरित रागात्मकता ही उसकी साकार संवेदना बन जाती है । "भारत-भारती-वैभवम्" के युगदृष्टा कृतिकार आचार्यश्री का नवनीत-सुकोमल मानस एवं सर्वजनहिताय नित्य चिन्तित साधु-हृदय वर्तमान युग की इस विडम्बना से अनभिज्ञ नहीं कि स्नातकोत्तर चतुर्थ-दशक में प्रविष्ट होकर भी हमारे आचरण में आज सर्वोपरि-भारतीय-भावना एवं राष्ट्र के प्रति-सर्व-समर्पित सर्वोच्चता की मान्यता यथेष्ट रूपेण विकसित नहीं हो पायी है । आज भी हम अपने आपको प्रथमतः हिन्दू-मुस्लिम-सिख-

बंगाली-बिहारी-पंजाबी, हिन्दी-अहिन्दी आदि मानते हैं न कि भारतीय ! विशिष्ट-व्यक्तित्व की यह सर्वोपरि मान्यता विरूपित होकर संकीर्ण व्यक्तित्व की परि-चायिका बन जाती है । विभिन्न मतवाद-भाषादि के समक्ष राष्ट्र की यह न्यूनतर-भावना प्रबलरूप में विभेदात्मक-अनेकत्व को प्रोत्साहित करती है तथा इसी का उग्ररूप अन्ततः राष्ट्रीय एकता को विखंडित करता है ।

भारत के प्राकृतिक-सांस्कृतिक परिवेश में नाना मत भाषादि की विभन्नताएँ एवं स्वाभाविक होने से अनेकत्व में एकत्व की भावना का निरन्तर पोषण ही यहाँ की भारतीयता एवं राष्ट्रीयता की प्राण संजीवनी है । यद्यपि हमारे राष्ट्रनायकों ने आर्थिक-सामाजिक समस्याओं को दूर करने तथा समग्र राष्ट्र में पारस्परिक सद्भाव, एकता और समरसता लाने के लिए अनेक शासकीय प्रयत्न किये हैं तथापि गत वर्षों में हमारे राष्ट्र में अलगाववादी मनोवृत्ति उभर कर सामने आई है । अनेकानेक राष्ट्रव्यापी अन्तर्द्वन्दों से प्रकट है कि राष्ट्रीय एकता का विषय अद्यावधि चिन्तनीय है । ऐसा प्रतीत होता है कि मानों भौतिकवादी पाश्चात्य प्रभावों से प्रताड़ित हमारा जीवन देश के प्रति सर्वथा नीरस और भावशून्य हो गया है । ऐसी स्थिति में पुनः राष्ट्रीय एकता एवं भावात्मक समरसता उत्पन्न करने हेतु हमें 'भारत-भारती' के प्रति सहज अनुराग से ओत-प्रोत साहित्य की अपरिहार्य अपेक्षा है । वर्तमान युग की इन परिस्थितियों में राष्ट्र की इस अपरिहार्य अपेक्षा की पूर्ति हेतु स्वधर्मचर्या एवं साधना में संलग्न श्रीनिम्बार्काचार्य जी द्वारा "सर्वजन हितार्थ" "भारत-भारती-वैभवम्" का प्रणयन अत्यन्त स्तुत्य है क्योंकि आपश्री ने युग चेतना के अग्रणी साहित्यकार के रूप में प्रकट 'भारत-भारतीयता' के प्रति प्रगाढ प्रेम के प्रचार-प्रसार हेतु इतर धर्माचार्य को भी इस ओर प्रेरित किया है । मंगलाचरण में अभिलषित आचार्यश्री का यह पावन संकल्प समग्र साधु समाज के लिए अनुकरणीय है--

प्रभु सर्वेश्वरं वन्दे श्रीराधामाधवं हरिम् ।
श्रीमद्धंसकुमारांश्च नारदं निम्बभास्करम् ॥१॥
आचार्यवर्यान्प्रणिपत्य चित्ते विरच्यते सर्वहिताय गेयम्।
सुखावहं भारत भारती वै-भवं वरेण्यं गुणबोधकारकम्॥

आचार्यश्री द्वारा विरचित-'भारत-भारती-वैभवम्" का विषय विवेचन भी विचक्षण है । ग्रन्थित विषय-वस्तु 'भारत वैभवम्' तथा 'देव भारती वैभवम्'

नामांकित द्वय शीर्षकों में वर्णित है । प्रथम भाग में भारत भूमि के पर्वत, नदी-नद, समुद्र, तीर्थ, सागर, वृक्ष, पशु-पक्षी, जनधनादि से संयुक्त प्राकृतिक परिवेश के प्रति प्रगाढ रागात्मकता अभिव्यक्त हुई है । भारत राष्ट्र के इस साकार स्वरूप के प्रति अद्‌भुत आकर्षण-विमोहन से उत्पन्न अनन्यभावपूरित उत्कट प्रेम का उद्‌घाटन ही इस काव्य का मर्म है । भारत के उत्तर दिशा में स्थित हिमाच्छादित श्वेत हेम-वर्णा गिरिश्रृङ्गों से युक्त विशाल पर्वतराज हिमालय, दुग्ध-धवल-जल-पूरित कलकलनिनादिनी गंगा-यमुना-सरयू-गोदावरी प्रभृति नदियों शस्य-श्यामल-हरित भूमि, नित्य तरंगित रत्नगर्भा दाक्षिणात्य सागर, जम्बू-कदली-कदम्ब-आम्रवृक्षावलि आदि 'भारत भारती वैभवम्' को यहाँ दिव्य वंदनीय आचरणीय माना है । मधुर-राग-रंजित और लयात्मक कोमलकान्त-संस्कृत पदावली में वर्णित भारत-माता का यह वर्णन अनुपम है--

(१) जयति मदीया भारतमाता ।
निर्मलसुभगा मणिमयरूपा, रम्या विविधगुणैरवदाता ॥
सस्यश्यामला परमविशाला, हिमगिरिधवला परिसंजाता ॥
राधासर्वेश्वरशरणस्य, चकास्ति चेतसि भारतमाता ॥८॥

(२) गंगा-कलिन्दतनया-सरयू-त्रिवेणी-
गोदावरीप्रभृतिदिव्यतरंगिणीभिः ।
नानागिरीन्द्रहिमशैलवरैः सुरम्यं-
वन्दे सदा रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥१०॥

(३) अत्यद्भुतानि विपिनानि मनोहराणि
जम्बू-कदम्ब-कदलीतरुशोभितानि ।
आम्रावलीविविधवृक्षयुतानि यत्र
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥१२॥

"भारत-भारती-वैभवम्"-मातृभूमि वन्दना का महा गीतिकाव्य है जिसके प्रत्येक पद में भूमि-वैशिष्ट्य का भावात्मक स्तवन और नमन हुआ है । इसका प्रथम वन्दना पद ही अत्यन्त कलात्मक, सर्वांग सुन्दर और मधुरतम है । भारत-वसुधा की ऐसी सुमधुर, महनीय, ज्ञानगर्भित, सरस और मार्मिक वन्दना अन्यत्र दुर्लभ है । इस पद में वर्णित भारतीयता की रागात्मक उपासना अभीष्ट भारती-भाव का बीजमन्त्र है । भारत-वसुधा के वैभव का ऐसा पण्डित्यपूर्ण

महनीय वर्णन कवि व्यक्तित्व की गहनतम ज्ञान गरिमा और राष्ट्रभक्ति की सर्वोच्चता का परिचायक है । इस पद में सन्निहित भारतीय संस्कृति और संस्कृत का अद्‌भुत सामञ्जस्य, ज्ञान और भक्ति की पराकाष्ठा तथा राष्ट्र के प्रति सर्व-समर्पित-रागात्मकता, संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित, परम ज्ञानी, रससिद्धाचार्य कृतिकार श्रीनिम्बार्काचार्य के महान् व्यक्तित्व से ही सम्भावित है । ऐसी सुमधुर देश वन्दना के राष्ट्रीय-स्तर पर नित्य गायन से पाषाण हृदय में भी देशानुराग का प्रबलतम सहज उद्रेक नितान्त सम्भव है । अस्तु, यहाँ कृतिकार आचार्यश्री भारतीय वसुधा के नित्य नमन की उत्कट अभिलाषा व्यक्त करते हुए भाव विभोरात्मक शब्दों में मातृभूमि का दिव्य वर्णन करते हैं--

''यह वसुधा परम सुन्दर अति विशाल हिमालय और गंगा-यमुना-सरयू-कृष्णादि नदियों द्वारा सुशोभित और सरस है । मुनिजन तथा सुरवृन्द द्वारा पूजित, समुद्र तरंगों से परिसेवित, भगवल्लीला स्वरूप धाममयी, विविध तीर्थों द्वारा सुरमणीय, अध्यात्म विद्या संयुक्त, महत्वपूर्ण, शान्तिदायक, लक्ष्मीप्रद, सुखद, धनधान्य से परिपूर्ण, ललित और निर्मल, कोटि-कोटि जनसमुदाय द्वारा परिसेवित होने से सुप्रसन्न, वीर पुरुषों द्वारा अति सम्मानित, विद्वद्‌वृन्द द्वारा परमोपास्य, वेदपुराणादि शास्त्रों द्वारा गेय, देशभक्तों द्वारा संस्तुत्य, अति विशाल, नानाविध मणिरत्नों से सुसम्पन्न, स्वर्णस्वरूपा, हरि पद-चरणारविन्दों से अति अलंकृत, परम रमणीय है । ऐसी भारत वसुधा की आचार्यचरण बारम्बार वन्दना करते हैं ।''

'भारत भारती वैभवम्'-के ऐसे अनूठे-अलौकिक, दिव्यातिदिव्य वैशिष्ट्य वर्णन से परिपूर्ण यह एक गीतिपद नहीं प्रत्युत राष्ट्रभक्ति का वेदवाक्य है, प्रस्तुत पद 'भारत भारती वैभवम्'-का परम वैभव है । गीतिकार ने यहाँ कलात्मक गागर में भावों का विशाल सागर भर दिया है जिसमें ज्ञान-भक्ति, संगीत, काव्यकला, गीति-लालित्य तथा संस्कृत-संस्कृति का अद्‌भुत समन्वय हुआ है । अस्तु ''भारत-भारती-वैभवम्'' की इस गीति मणिमाल का यह सुमेरु है । यह राष्ट्रगीति पद राष्ट्रकवि श्रीवंकिम चटर्जी द्वारा प्रणीत 'वन्देमातरम्' की भाँति परम गेय है--

वन्दे नितरां भारतवसुधाम् ।
दिव्यहिमालय-गङ्गा-यमुना,-सरयू-कृष्णाशोभितसरसाम् ॥

मुनिजनदेवैरनिशं पूज्यां, जलधितरंगैरंचितसीमाम् ।
भगवल्लीलाधाममयीं तां, नानातीर्थैरभिरमणीयाम् ॥
अध्यात्मधरित्रीं गौरवपूर्णां, शान्तिवहां श्रीवरदां सुखदाम् ।
सस्यश्यामलां कलितामलां, कोटि-कोटिजनसेवितमुदिताम् ॥
वीरकदम्बैरतिकमनीयां, सुधीजनैश्च परमोपास्याम् ।
वेदपुराणै र्नित्यसुगीतां, राष्ट्रसुभक्तैरीड्यां भव्याम् ॥
नानारत्नैर्मणिभिर्युक्तां, हिरण्यरूपां हरिपदपुण्याम् ।
राधासर्वेश्वरशरणोऽहं, वारं वारं वन्दे रम्याम् ॥१॥

भारतवर्ष की दिव्यधराधाम पर भगवान् ने कई बार अवतार लिये हैं, मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम ने मनुज रूप से अवतरित होकर यहाँ वेदादिशास्त्र विहित लोकधर्म की स्थापना की तथा सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने यहाँ महाभारत में अर्जुन को परमदिव्य गीता का उपदेश दिया । इसी हेतु यह दिव्य-भगवद्धाम देवताओं द्वारा उपासनीय, ऋषि-मुनियों द्वारा परिसेव्य, धीरपुरुषों द्वारा स्तुति करने योग्य, कवियों द्वारा गीयमान तथा वीरों द्वारा वरेण्य है--

श्रीरामचन्द्रप्रभुराविरासीन्नयेन यत्रोत्तमदिव्यभूमौ ।
संस्थापितो येन हि लोकधर्मस्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥
गीतोपदिष्टा हरिणा च यत्र कृष्णेन पूर्वं सदनुग्रहेण ।
धनंजयार्थं-भुवने जनार्थं तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥३२॥
देवैरुपास्यं मुनिभिश्च सेव्यं धीरैः समीड्यं कविभिः सुगीतम् ।
वीरै र्वरेण्यं भुवने सुरम्यं श्रीभारतं नौमि मुकुन्दधाम ॥३०॥

गङ्गा-गो-गीतादि वैशिष्ट्य-संयुक्त 'भारत-भारती' की वसुधा भगवान् की लीलास्थली होने से इसका स्वरूप स्वर्गादपि सुन्दर और महान् है । अध्यात्म संयुक्त धर्मप्राण भारतभूमि के विशाल देवालय, पौराणिक चारों धाम बद्रीविशाल, जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम्, द्वारिका तथा अयोध्या, काशी, कांचीवरम्, मथुरा-वृन्दावन,प्रयाग-चित्रकूट-पुष्करादि पुण्यतीर्थ स्थल अद्यावधि ज्ञान-भक्ति, कला के केन्द्र होने से दर्शनीय और वन्दनीय हैं । भारत का यह अतीत आज भी विश्ववंद्य है । 'भारत-भारती-वैभवम्' के कृतिकार ने भारतभूमि के इसी वैशिष्ट्य का सुन्दर व रागात्मक शैली में चित्रण किया है--

देवालया अपि सुभव्यतमा मनोज्ञाः श्रेष्ठाः पुरातनतमाः शुभदर्शनीयाः ।
सन्ति प्रिया हरिकथारसदाश्च यत्र वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥२३॥
तीर्थानि दिव्यविविधानि सुमंजुलानि धामानि सुन्दरतमानि च सन्ति यत्र।
पापप्रणाशनपराण्यतिपावनानि वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥२४।
प्राच्यं जगन्नाथपुरी ह्यवाच्यां रामेश्वरो द्वारवती प्रतीच्याम् ।
यत्रोत्तरे श्रीबदरीविशालस्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२५॥
हरेरयोध्या मथुरा च माया काशी च कांची फलदा ह्यवन्ती ।
द्वारावती यत्र लसन्ति पुर्यस्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२६॥
वृन्दावनं दिव्यवनं हरेश्च लीलाविहारस्थलमस्ति यत्र ।
गोवर्द्धनो गोधनमंजुधाम तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२८॥
श्रीपुष्करं कोटिसुतीर्थतीर्थं प्रयागराजोऽद्भुतचित्रकूटः ।
साक्षादयोध्या प्रभुधाम यत्र तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२९॥

देव-देवालयों-तीर्थों की इस पावन भारतभूमि का सर्वाधिक वैशिष्ट्य वैदिक संस्कृति से है । विश्ववंद्य वैदिक संस्कृति की केन्द्रस्वरूपा भारत वसुधा को मंगलविधायिनी धरणी माना गया है क्योंकि इसी के क्रोड में पल्लवित वैदिक संस्कृति ने समस्त संसार को सर्वप्रथम ज्ञान-विज्ञान, धर्म और दर्शन का दान दिया था । यही संस्कृति मानव सभ्यता की जननी है । यही संस्कृति शाश्वत और सनातन है । वसुधैवकुटुम्बकम् भाव का विश्वबन्धुत्व, प्राणीमात्र में एकात्मक दर्शन, शान्ति-सद्भाव, अहिंसा, करुणा, शरणागतवत्सलता, समन्वयादि मानवता के महनीय जीवन तत्त्व इसी संस्कृति की देन है । अस्तु भारतीय संस्कृति को अद्यावधि सर्वोच्च और महान् मानने वाले तथा उसके संरक्षक-प्रेरक-कृतिकार आचार्यश्री के लिए वैदिक संस्कृति की जननी भारत-वसुन्धरा परमोपासनीय है--

भारतधरणी परमोपास्या ।
वैदिकसंस्कृतिकेन्द्रस्वरूपा, नित्यं विबुधजनैरभिलाष्या ॥
इह खलु मुनयः सुधियः सन्तो, वसन्ति सततं तैरभिभाष्या ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणो वदति मुदेति मनोहरहास्या ॥२॥

भारतदेश को वेद पुराण, नीतिचरित्र, न्याय-योग, ब्रह्मसूत्र गीतादि वाङ्मय इसी परम्परागत संस्कृति की धरोहर के रूप में प्राप्त होने से अद्यावधि

वह विश्व का धर्मगुरु है । समग्र देश आज भी यहाँ शास्त्र-सम्मत आध्यात्मिक धर्म शिक्षा एवं सत्प्रेरणायें प्राप्त करने आते हैं--

देशाः समग्राः श्रुतिधर्मशिक्षां सम्प्राप्नुवन्तीति महामहत्त्वम् ।
सत्प्रेरणां शास्त्रयुतां च यस्मात् तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ।।३।।

शरणागत-वत्सला भारतभूमि हिंसा विमुक्त जनों का सदाश्रय है । यही विश्वनीड़ है, यही मातृभूमि प्राणीमात्र की दिव्यमातृकुक्षी है जिसकी क्रोड में सभी को अन्न-जल त्राणादि का आतिथ्य सुलभ है । "अरुणा मधुमय देश हमारा । जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक किनारा ।" महाकवि जयशंकरप्रसाद का यही पूज्य भाव "भारत-भारती-वैभवम्" के निम्नोक्त पद में स्वाभाविक रूप से ग्रन्थित हुआ है--

सदाऽऽश्रयो वै शरणागतानां हिंसारतानां नहि यत्र पूजा ।
विमुक्तहिंसो लभते प्रतिष्ठा तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ।।३४।।

अध्यात्मप्राण भारतभूमि ऋषि-मुनियों की महान् तपःस्थली रही है, यह विरक्त-संतवीतरागियों की भूमि है । अद्यावधि इसका यही वैशिष्ट्य इसकी सुभव्यता है--

सन्तो गृहस्था वटवश्च छात्राः सन्यासिनो वैष्णवसत्तमा वै ।
शुद्धा विरक्ता विचरन्ति यत्र तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ।।३५।।

सन्त-महात्माओं-विरक्तों की पावन तपोभूमि भारत की यह वीर वसुन्धरा है । इसे वीर प्रसवनी सिंहजननी आदि विशेषणों से अभिहित करना इतिहास सम्मत है । हमारी सेनाओं ने गत दो विश्व युद्धों में अद्वितीय कीर्तिमान् कार्य अर्जित किये हैं, स्वातंत्र्योत्तर उभय युद्धों की सफलताएँ भी इसी चरित्र को प्रतिपादित करती हैं । अद्यावधि हमारी सेनायें अपने देशप्रेम, कर्तव्यनिष्ठा एवं अनुपम युद्ध कौशल के कारण जगद्विख्यात है । विश्वशान्ति, निश्शस्त्रीकरण एवं गुटनिरपेक्षता भारत की अन्तर्राष्ट्रीय नीति होने पर भी वह अजातशत्रु नहीं । भारत की प्रगति के बाधक बाह्यशत्रुओं से आज हम संत्रस्त हैं, विश्व की महान् शक्तियों ने आज हमारे सीमा-सुरक्षा-दायित्वों को अत्यन्त विस्तृत कर दिया, पर चतुर्दिक् सीमा-चौकसी में सन्नद्ध हमारी सेनाओं का आचरण एवं मनोबल अत्यन्त सराहनीय है । आणविक आयुधों, युद्धाभ्यासों से सुसज्जित आज हमारी जल-थल-नभ सेनायें देश रक्षा के अनुकूल सक्षम है । अस्तु हमारे

कुशल, निष्ठावान् वीरवर सैनिक भी आज "भारत-भारती-वैभवम्" के रूप में विशेषतया उल्लिखित हुये हैं--

वीरधरायां वसन्ति वीराः ।
भारतरक्षणहेतोः सततं, निबद्धकक्षा बलिष्ठधीराः ।।
व्रजन्ति परितः शस्त्रपाणयो, देशसुनिष्ठा धृतनवचीरा ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणो, निगदति नहि ते भवन्त्यधीराः ।।७।।

भारतवर्ष का जनजीवन, उसके क्रियाकलाप, आचार-विचार एवं चरित्र ही उसके सांस्कृतिक वैशिष्ट्य के दर्पण हैं । 'भारत-भारती-वैभवम्' में वर्णित नारीजीवन पुरातन आदर्शों से परिपूर्ण है, कृतिकार के अनुसार यहाँ धर्मपरायण, भक्तिमति, पतिव्रता वीरांगना तथा मंगल स्वरूपा नारियाँ निवास करती हैं--

नार्यस्तु धर्मपरिपालनदत्तचित्ता गोविन्दभक्तिनिरताश्च पतिव्रतास्ताः ।
वीरांगना अतिशुभा निवसन्ति यत्र वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ।।

"भारत-भारती" ग्रन्थ के द्वितीय शीर्षक 'देवभारती' वैभववर्णनम्' में देववाणी संस्कृत का वैशिष्ट्य चित्रित किया गया है । वस्तुतः देववाणी संस्कृत ही हमारी संस्कृति का पर्याय है । वेद-श्रुति-स्मृति, महाभारत-गीता, पुराणादि ग्रन्थों में संचित विशाल ज्ञानकोष का नाम भारतीय संस्कृति है और इन दिव्य ग्रन्थों की भाषा देववाणी संस्कृत है । अतः भारतीय संस्कृति का ज्ञान संस्कृत बिना दुर्लभ है । कृतिकार आचार्यश्री ने यहाँ संस्कृति प्रदायिनी संस्कृत का भावातिरेक से स्तवन एवं वन्दन किया है । उनके अनुसार संस्कृत ही परम्परागत संस्कृति का ज्ञान कराने वाली, अनन्त-ज्ञान-विज्ञान-रस-प्रदायिनी है । इसी देववाणी में श्रुति-स्मृतियों का अनन्त ज्ञान सन्निहित है, संस्कृत ही विश्व में सुख-शान्तिदायिका, पापहारिणी अमृतवाणी है--

परम्परा-संस्कृतिबोधकारिणीमनन्तविज्ञानविवेकदायिनीम् ।
रसावहां गौरववृद्धिशालिनीं भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ।।४९।।
श्रुति-स्मृतिज्ञानविधानधारिणीं समग्रभूमौ सुखशान्तिवाहिनीम् ।
सुधामयीं तां मनुजाऽघहारिणीं भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ।।५०।।

संस्कृत अनेक भाषाओं की जननी है, भारतवर्ष की सभी भाषाएँ मूलतः इसी से विकसित हुई हैं । भावात्मक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता की दृष्टि

से इसका अध्ययन परमावश्यक है । 'समग्रभाषाजननीमधीश्वरी' विशेषण से संस्कृत की इसी उपादेयता का प्रतिपादन करते हुए आचार्यश्री ने इसे सर्वाधिष्ठात्री, परमेश्वरी, ज्ञान-भुक्ति-मुक्तिप्रदायिनी, महेश्वरी, मधुररूपा, नवनवरसविधायिनी आदि विशेषणों से विभूषित किया है--

समग्रभाषाजननीमधीश्वरीं प्रजाकरीं मुक्तिकरीं महेश्वरीम् ।
रसालरूपां रसदानतत्परां भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ।।५१।।

संस्कृत की उपादेयता का ज्ञान यथार्थतः संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित आचार्यश्री को ही है । इसीलिए वे अपने परमाराध्य भगवान् श्रीसर्वेश्वर से संस्कृत के भाषण-प्रवचन, मनन-लेखन, वरणादि की पटुता का वरदान मांगते हैं । 'देवभारती' के निम्नोक्त पद में संस्कृत की अत्यन्त भावपरक-महिमा-मण्डित हुई है । संस्कृत में संस्कृत के प्रति रागात्मक-कलात्मक-भक्तिपरक, पद लालित्यपूर्ण यह दैन्य-निवेदन द्रष्टव्य है--

सर्वेश्वर ! सुखधाम ! नाथ ! में संस्कृत रुचिरस्ति ।
संस्कृतमनने संस्कृतवदने संस्कृतवरणे संस्कृतशरणे ।
चेतो नितरां भवतात्कृपया ममाऽभिलाषोऽस्ति ।।
श्रुतिशास्त्रेषु मनुशास्त्रेषु नयशास्त्रेषु रसशास्त्रेषु,
प्रगतिस्तीव्रा भवतादिति मे भावनाऽस्ति ।।
लेखन पटुता प्रवचनपटुता कर्मणिपटुता सेवापटुता,
सततं माधव ! भवतादिह मे याचनाऽस्ति ।।
वचने सृदुता चेतसि रसता स्वात्मनि वरता दृष्टौ समता,
राधासर्वेश्वरशरणस्य प्रबला कामनाऽस्ति ।।३६।।

'देव भारती वैभव वर्णनम्' शीर्षकांतर्गत कृतिकार ने अपने उद्‌बोधन में युग-समीचीन क्रांतिकारी सार्थक उपदेश निर्देशित किये हैं । आचार्यश्री के इन युगसम्मत, युक्तियुक्त, सार्थक निर्देशों-आदेशों में लोक-कल्याणकारी सुख की कामना, स्वराष्ट्रचिन्तना, रीति कीर्ति एवं गहन-युगचेतना सन्निहित है । सर्वथा निरपेक्ष भाव से अभिलषित इन उपदेशों में भारतीय-संस्कृति-सम्मत समभाव के प्रति उत्कंठा परिलक्षित हुई है । आचार्यश्री के अनुसार व्याप्त भ्रष्टाचार के उन्मूलनार्थ कठोर दण्डविधान अपेक्षित है, भ्रष्टाचारी जनसाधारण, विशिष्ट जन तथा प्रशासक सभी दण्डनीय है--

भ्रष्टाचाररता ये तु दण्डनीयाश्च भारते ।
सन्तु ते जनसामान्या विशिष्टा वा प्रशासकाः ।

आज हमारा राष्ट्र ऐसी अनेक सामाजिक-पारिवारिक-समस्याओं-अव्यवस्थाओं से संत्रस्त है जिनका जन्म हमारी अकर्मण्यता तथा दायित्वहीन-उपेक्षाओं के कारण हुआ है । आज हम कर्तव्यबोध से उदासीन होकर निरर्थक आलोचनायें करते हैं, समाधान के प्रति सच्ची निष्ठा एवं कर्तव्यपालना से हम बचना चाहते हैं । आज युवापीढी दिशाहीन है, जनता दिग्भ्रान्त है क्योंकि हमारे गणमान्य विचारक एवं धर्माचार्य नेतृत्व-निर्देशन के प्रति सजग और सचेष्ट नहीं है । माता-पिता पारिवारिक अनुशासन के प्रति नितान्त उदासीन हैं, शिक्षकों का व्यक्तित्व प्रभावहीन है, ऐसी स्थिति में आचार्यप्रवर इन सभी में कर्तव्यबोध की नई चेतना का आह्वान करते हुए कहते हैं--

धर्माचार्यैः प्रबोद्धव्या जनता या कुमार्गगा ॥
तथैव साधुभि र्नित्यं प्रेरणीया सदैव सा ॥५८॥
मातृवर्गैः स्वदेशेऽस्मिन् शिक्षणीयाश्च सर्वदा ॥
वयस्का बालका नार्यः सदाचारपुरस्सरम् ॥५९॥
तथाहि पितृवर्गैश्च योजनीयाः स्वकर्मणि ॥
बालका युवका वृद्धा नार्यश्च बालिकाः सदा ॥६०॥
शिक्षकैः कविभि र्नित्यं शिक्षिणीया जना ध्रुवम् ॥
सेवापरायणैरेभिः प्रशासक - चिकित्सकैः ॥६१॥

भौतिकवादी जीवन दर्शन ने आज हमें नितान्त नीरस और भावशून्य बना दिया है । भौतिकवादी आर्थिक विषमताओं, प्रतिद्वन्द्वों से उत्पन्न वर्ग-संघर्ष ने आज हमारे समाज में स्वार्थ, घृणा, ईर्ष्या, आक्रोश और तनावों को जन्म दिया है । इसीलिये आचार्यश्री वैदिक संस्कृति सम्मत अध्यात्मवादी जीवन की पुनर्स्थापना करना चाहते हैं ।

वैदिक संस्कृति र्ज्ञेया भारतीयै र्जनैः सदा ।
एवमध्यात्मबोधश्च धारणीयः स्वमानसे ॥६२॥

आचार्यश्री के अनुसार विश्व शान्ति के लिए आज अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव-सहयोग, सह-अस्तित्व, गुटनिरपेक्षता एवं अहिंसात्मक दृष्टिकोण परमावश्यक है--

राष्ट्रैराचरणीयश्च मिथः सोहार्दमुत्तमम् ।
कदापि विग्रहो नैव कार्यो विवेकनिर्भरैः ॥६८॥

आज हमारा राष्ट्र प्राकृतिक-पर्यावरण के प्रदूषण से अत्यन्त संत्रस्त है । औद्योगिक महानगरों ने हमारी गङ्गा-यमुनादि पावन सरिताओं को भी प्रदूषित कर दिया है, अस्तु इनका शुद्धिकरण प्रशासकों का सर्वोच्च प्राथमिक कर्तव्य है--

जान्हवी-यमुना-रेवा-क्षिप्रादीनां पवित्रता ।
सरितां सरसाञ्चेह रक्षणीया प्रशासकैः ॥६६॥

'भारत-भारती' के वर्ण्य-विषयान्तर्गत कपोलकल्पित आदर्शवाद नहीं है, यत्किंचित् अतिरंजनाएँ उद्‌बोधनार्थ एवं साभिप्राय अभिव्यक्त की गई हैं । ग्रन्थ में वर्णित भारत का विविधरूपात्मक भौगोलिक परिवेश, विपुल-प्राकृतिक सम्प्रदाओं एवं ऊर्जा-संसाधनों का प्राचुर्य, वैदिक संस्कृति में निहित ज्ञान-विज्ञान का अक्षय-कोष, अध्यात्म चिन्तन और दर्शन यथार्थ और वास्तविक ही है । भारत का अतीत ही नहीं प्रत्युत सद्य-वर्तमान भी समुज्ज्वल और समुन्नत है, आज हम विश्व की तृतीय महाशक्ति के रूप में उजागर हो रहे हैं तथापि हमारे जीवन में राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं गौरव का ह्रास नितान्त चिन्तनीय है । भारतीयता से विभूषित व्यक्तित्व हमें आज हीन एवं लज्जाजनक प्रतीत होता है । आज हमारा खान-पान, रहन-सहन, पहनावा ही आयातित नहीं वरन् हमारा आचार-विचार , ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-नृत्य-संगीत-कलादि सभी कुछ आयातित प्रतीत हो रहे हैं । पाश्चात्य प्रभाव से विकसित हमारा यह मूलविहीन असांस्कृतिक जीवन वास्तविकता से परे बहुरूपियापन ही है । स्वदेशीय स्वाभिमान का यह ह्रास प्राणघाती दासता के रूप में पुनः पनप रहा है । ऐसी स्थिति में आदर्शवादी चित्रण सर्वथा अपेक्षित और युग समीचीन है ।

राष्ट्रीय चरित्र में स्वाभिमान और गौरव की भावना ही स्वतन्त्रता की जननी है, इसीलिए स्वामी विवेकानन्द ने 'यद्यपि भारत आरत है फिर भी भारत भारत है' की प्रबल भावना जागृत करने हेतु ही था कि "उच्च स्वर में कहो कि मैं भारतीय हूँ और भारत मेरा देश है ।" दीन-हीन मरणासन्न राष्ट्र में प्राण-प्रतिष्ठापनार्थ ही महात्मा गांधी ने भी स्वतन्त्रता संग्राम में 'स्वदेशी आन्दोलन' का प्रवर्तन किया था । राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' में भी

स्वराष्ट्र-स्वाभिमान के जागरण के प्रमुख स्वर आदर्शवादी भाव-भाषा में ही मुखरित हुआ था । अस्तु ''भारत भारती वैभवम्''--में वर्णित भारतवर्ष के स्वरूप का वर्णन, उसके समुन्नत अतीत आदर्शवादी चित्रण कृति एवं कृतिकार के व्यक्तित्व को अधिकाधिक कीर्तित करने वाला ही है । राष्ट्रीय भावना को जागृत एवं उत्प्रेरित करने वाली निम्नोक्त शास्त्र सम्मत सूक्तियां सार्थक होने से अत्यन्त स्तुत्य है--

स्वर्गसम्पदा विमुच्य विवुधा यन्ति भारतं वैभवप्रबलम् ।
इतरे देशा विलोक्य भारतं मूका भवन्ति गौरवबहुलम् ।।

अस्तु सभी दृष्टियों से ''भारत-भारती-वैभवम्'' राष्ट्रभक्ति गीति साहित्य की अमरकृति है जिसके कलात्मक-कमनीय कलेवर में वर्णित विषय वस्तु, भावपरक सुमधुर राष्ट्रीय वन्दना, संस्कृत संस्कृति सौष्ठव अनूठे और अद्वितीय हैं । वस्तुतः यह युगान्तरकारी विश्व भारती है जो निश्चय ही राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत वाङ्मय मंच पर जागृत होगी ।

--डॉ० रामप्रसाद शर्मा
एम. ए. पी. एच. डी.
किशनगढ
अजमेर (राजस्थान)

भारत-भारती-वैभव वैशिष्ट्यम्

अस्माकं भारतीयानां दशा शोच्याऽभवत् यदा ।
संस्कृतां संस्कृतिं त्यक्त्वा जाता वैदेशिका यथा ॥१॥
आचार्यवर्यपादानां (श्रीजीनां) कृपया लभ्यतेऽञ्जसा ।
भारतभारत्योश्च वै वैभवं यत्प्रवर्तितम् ॥२॥
साहित्यं विपुलं लोके संस्कृतस्यापि भारते ।
भाषाभावार्थगाम्भीर्यैरेतदेव हितावहम् ॥३॥
कां दिशीकां गताश्छात्राः आहिण्डन्तेऽत्र भारते ।
हितं तथ्यं वचः श्रोतुं परं वक्ता न लक्ष्यते ॥४॥
श्रीश्रीजीभि र्विना कोऽत्र त्राता भविमतुर्हति ।
एतत्तैश्च विचार्यैव ग्रथितं लघुशास्त्रकम् ॥५॥
सर्वेषामेव लोकानां हितं तथ्यं सुखप्रदम् ।
विशेषतस्तु छात्राणां परमोपकृतिप्रदम् ॥६॥
अनुशासनहीना ये छात्राः कर्मपथच्युताः ।
सुरद्रुश्चैव तेषां तु गृहस्थानाञ्च कामगौः ॥७॥
हिमालयादिनागानां गणना चापि सत्कृता ।
सप्तपुर्यश्चतुर्धाम, गङ्गाद्याः सरितस्तथा ॥८॥
दिवाकरनिभप्रख्याः ज्योतिर्लिङ्गाः स्सृता मुदा ।
करामलकतत्तीर्थ - यात्राफलप्रदायकम् ॥९॥
धर्मयुक्तो राष्ट्रवादः कर्मवादश्च नैतिकः ।
राष्ट्रभक्ति र्हरे र्भक्तिः र्मणिकाञ्चनयोगवत् ॥१०॥
उपदेशवचोऽमूल्यं शिवं सत्यं मनोहरम् ।
सम्मतं वेदशास्त्राणां लोके चाऽभ्युदयङ्करम् ॥११॥
प्रायः पदावली कान्ता कोमल गीतिका परा ।
ईदृग्विधान कुत्रापि दृश्यतेऽञ्जसा भृशम् ॥१२॥
लघुरूपमिदं शास्त्रं गागरे सागरो यथा ।
किंस्वित् त्रिवेणिरूपेण सर्वपापप्रणाशकम् ॥१३॥

व्याकरण-वेदाध्यापकः पं. परशुरामशरण भारद्वाजः-श्रीनिम्बार्काचार्यपीठम्

समादरणीय प्रेरक ग्रन्थ

"भारत भारती वैभवम्" को आद्योपान्त ध्यान से पढा । इसका वर्णित विषय गौरवपूर्ण, सर्वथा श्लाघनीय देशकाल के अनुरूप है । यह मातृभूमि के प्रति समर्पण भाव, राष्ट्रीय उत्थान, उसके लिए उत्सर्ग एवं प्रेरणा का महनीय गीति-काव्य है जिसकी अनेक विशेषताएँ हैं--सबसे प्रथम तो उसकी संस्कृत भाषा सरल, सुबोध, प्रसादगुणमयी है जो थोड़े से प्रयास से श्लोकों को कण्ठाग्र करने के अनुरूप है और सभी श्रेणियों के छात्रों को एक वरदान है । संस्कृत हमारे देश की आत्मा है । देश के हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, मराठी, बंगला भाषी क्षेत्रों में भी वह सहज साध्य है ।

गन्थ के अनेक छन्दों में भाषा और भाव का ऐसा स्पन्दन है कि पाठक भावविभोर होकर अपने को भूल जाता है और राष्ट्र प्रेमानन्द के अनन्तलोक में विचरने लगता है ।

(भा० भा० वै० अध्याय १ छन्द २/५/७/८/१०/१२)

राष्ट्र प्रेम के आगार मातृभूमि की पर्वत मालाएँ, कल्लोलिनी सरिताएँ, वन सम्पदा, खनिज, आकार की विशालता, यहाँ के अध्यात्म और संस्कृति, शौर्य और संस्कार, सप्तपुरियां, देवोपम निवास सभी उपादानों पर ग्रन्थाकार की दृष्टि गई है और उनका महनीय प्रतिपादन कर उन्होंने इस कोटि के ग्रन्थों में अपनी एक नई स्थापना की है । राष्ट्र प्रेम प्रेरक रचनाओं के माधुर्य और रस पेशलता की दृष्टि ये यह ग्रन्थ उसी कोटि में विशेष समादरणीय है । शैली की स्वाभाविकता अनूठी है ।

(भा० भा० वै० छन्द २३/३० अ० १)

संसार के वीर राष्ट्रों में भारत के महत्वपूर्ण स्थान का आधार हमारी वीर प्रसविनी मातृभूमि है जो प्रत्येक काल में वीर पुरुषों की भोम्यता का हेतु है । यहाँ वीर पुरुषों का सतत निवास है ।

(भा० भा० वै० अ० १ छन्द ७)

धर्मपरायण पुरुष एवं सुसंस्कार वेष्टित पतिव्रता नारियाँ भारत की एक अपनी ही विशेषता है । विश्व में ऐसा आदर्श कहीं नहीं है । इस ग्रन्थ में यह भाव बड़ी उत्कृष्टता से ग्रहीत हुआ है । (अ० १ छन्द ७/२१)

भारत के गौरव के मूल कारण यहाँ की धर्म साक्षेप संस्कृति, समृद्ध साहित्य, सन्त जीवन के उच्च आदर्श और ''वसुधैवकुटुम्बकम्'' की भावना है जिसकी रचना देववाणी संस्कृत में हुई है । इस भाषा के मिठास, उसकी लोच, अर्थ प्रवाह, अनुप्रास सभी भावों के प्रकाशन की क्षमता के कारण ही संसार की भाषाओं में उसका प्रथम स्थान है । वह असंख्य भाषाओं की आदि जननी है । आचार्यचरण का संस्कृत का महत्व प्रतिपादित करते हुए इस ग्रन्थ का यह दूसरा अध्याय सर्वप्रकारेण अत्यन्त मननीय और समादरणीय है ।

(अ०२ छन्द ४१/४५/४६/५५)

हमारे देश में धर्म चिन्तन, वैचारिक पावनता, समूची मानवता के प्रति स्नेह और उदाराशयता को उद्‌बुद्ध करने का जो महनीय प्रयास देववाणी में रचितं साहित्य के द्वारा हुआ है उसका रागात्मक आधार यहाँ की गकारत्रयी गंगा-गीता और गाय में निहित है । वे यहाँ के ऋषि, मनीषी, साहित्यकार, त्यागी, बलिदानी वीर महापुरुषों-सबके कार्यकलापों की नियामिका-प्रेरणादात्री रही हैं । भारत वैभवम् का प्रकाश मूल में राष्ट्र की प्राण भूता गकारत्रयी की अनवरत पयस्विनीधारा मानव कल्याण के ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'' के कलकल निनादमय उद्‌घोष में निहित है जिसे भारतीय जन-जीवन ने अपने अस्तित्व के प्रारम्भिक दिनों में सह अस्तित्व का आधार बनाया था । वस्तुतः यह अध्याय महान् उत्कर्ष पूर्ण है ।

निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी महाराज का व्यक्तित्व और कृतित्व अब उस उच्चता तक पहुँच गया है जहाँ अपने लिए कुछ नहीं राष्ट्र, समाज और मानव जाति के लिए ही कुछ करना अभीष्ट होता है । ऐसी स्थिति में उन मनीषी का व्यक्तित्व 'सर्वभूतहितेरताः' हो जाता है और उसमें बाधक क्लेश, मल्मष, आन्दोलन, सामाजिक विकृतियाँ, आचरणहीनता, कर्तव्यकुण्ठा, स्वार्थपरता आदि उनके मन को अहर्निश संतप्त करते रहते हैं । ऐसे मनीषी जब लोक-कल्याण हेतु लोक मंच से उद्‌बोधन करते हैं तो नैसर्गिक रूप से इन सभी विषमताओं को समाज से हटाने का उनका यह प्रयास होता है । महर्षि व्यास और महात्मा तुलसीदासजी के मन में भी यही पीड़ा थी जिसकी अभिव्यक्ति उनके ग्रन्थों में बड़े प्रभावी ढंग से हुई है । आचार्य-चरण के इस ग्रन्थ का ''जनान्प्रत्युद्‌बोधनम्'' प्रकरण उन मनीषियों द्वारा विरचित

ग्रन्थ शृंखला में एक महत्वपूर्ण, देशकाल पात्र सम्मत, समावेश माना जाना चाहिये । इस उद्‌बोधन की विशेषता उसकी सर्वाङ्गीणता है । समाज के सभी छोटे-बड़े वर्ग राजकर्मचारी, उपदेष्टा, राजपुरुष, सेवक-स्वामी, आश्रित-निराश्रित सभी के कर्तव्य कर्मों को निर्दिष्ट कर उन्होंने निश्चय ही समाज सेवा में एक महनीय योगदान किया है ।

इस ग्रन्थ के अन्तिम प्रकरण ''भारत राष्ट्रगुणाष्टकम्'' ग्रन्थ का संक्षिप्त उपसंहार है जिसमें सबके कल्याण की कामना निहित है । अपनी इन विशिष्ट उपलब्धियों से पूरित यह ग्रन्थ भारत राष्ट्र की एक महनीय निधि है जिसका पठन-पाठन और उसमें उपदिष्ट संकेतों का चिन्तन राष्ट्र के भावी नागरिकों के जीवन निर्माण की दिशा में नितान्त उपयोगी और अनिवार्य रूप से ग्राह्य है ।

''भारत-भारती-वैभवम्'' के सम्बन्ध में अपने विचार प्रेषित करते हुए मेरा सहज विश्वास है कि श्रीचरणों के द्वारा यह एक महान् राष्ट्र सेवा हुई है जो सतत और सहज प्रभावी है । सर्वेश्वर प्रभु आपसे ऐसी अन्य अनेक सेवाएँ कराने का वरदान दें ।

डॉ० नारायणदत्त शर्मा
एम. ए. - पी. एच. डी.
भूतपूर्व प्रिंसिपल जवाहरइन्टर कालेज
मथुरा (उ० प्र०)

वैभवानुभवाऽऽवेदनम्

भरतानां भरतवंश्यानामियं तस्येदमिति सामान्यविवक्षायां शैषिके वाऽणि स्त्रीत्वे भूमि-संस्कृति-भाषार्थकोऽयं व्युत्पद्यते "भारती" शब्दः ।

तथा च भारती च भारती च भारती च =भारत्यः, भारताश्च ता भरत्यश्चेति भारत-भारत्यस्तासां वैभवं "भारत-भारती-वैभवम्" । अथवा भारतं नाम राष्ट्रं तस्येमे पूर्वोक्तरीत्यैकशेषकरणाद् भारत्यौ=सुरभाषा भारत-भुवौ, भारतस्य भारत्यौ=भारत भारत्यौ तयो र्वैभवम् "भारत-भारती-वैभवम्" ।

यद्वा भारतं नाम राष्ट्रं, भगवद्वेदव्याख्यानभूतं भारतं नाम महाकाव्यश्चेति भारते तयोः क्रमशो भारती=भारतभूमि=आन्वीक्षिकी त्रयीवार्ता दण्डनीति समवेतापवर्ग व्युत्पत्याधायिका संस्कृत सरस्वती भारती चेति भारत्याविति द्वन्द्व द्वयस्य तत्पुरुषे भरतयो र्भारत्यौ=भारत भारत्यौ तयो र्वैभवम् "भारत-भारती-वैभवम्" ।

उत वा भारतस्य स्वयमेव भूमित्वाद् भारतस्य भारत्यौ=भाषा संस्कृतिः, भारत भारत्यौ तयो र्वैभवं विलक्षणमैश्वर्यं महत्त्वं =भारत भारती वैभवम्" तदस्त्यस्मिन्निति मत्त्वर्थीयेऽचि "भारत भारती वैभवम्" भारतीयभाषासंस्कृत्या-दिविषयवैशिष्ट्य-प्रतिपादनपरं काव्यलक्षणोचितं ध्वन्यात्मकं भारतभूमिस्तुति-मौक्तिकमण्डितं "महामुक्तकम्" ।

यद्वाऽस्तु तिसृणामपि भारतीनां पूर्वोक्तार्थ त्रय वाचिकानाँ शक्ति लक्षणा व्यञ्जनात्मिकानां तादात्म्यादेकत्वव्यवहारः, एवं भारतं च भारती च भारत भारत्यौ तयो र्वैभवम् । अपि वा भारतस्य भारती भारतदेशसम्बन्धविशिष्टा भारती तद् वैभवम्, एवमपि पूर्वोक्तार्थः प्रतीयते ।

काव्यस्यास्यावलोकनेन प्रत्येकं पदमुक्ताखिलनाम निर्वचन निर्गलि-तार्थाः=सुतरामनुभूयन्त इतिनाविदितं वेदितवेदितव्यानाम् शताधिके पद्यात्मके

प्रबन्धेऽस्मिन् प्रतिपदं राष्ट्रियं प्रेम संस्कृत-संस्कृति सेवा नैतिकोत्थानं सच्चारित्र्यं भगवद्-भजनं परोपकारः शिक्षाः सुधारः, विचार सहिष्णुता प्रभृतयः सर्वेऽपि राष्ट्रोन्नयनोपयोगिनो विषयाः सरससरलशब्दविन्यासवैचित्र्यभङ्गिमभूषिता सकौशलं सन्निवेशिता इत्यवलोक्य कविनिष्ठकोमलकाव्यकौशलकलाजन्येनालौकिककौतुकेन कस्य मनस्विनो मनोनाऽऽकृष्टं स्यात् ।

परोपकारपरायणैः प्रातःस्मरणीयैः परमपूज्यैः काव्यलेखकैरनन्त श्रीसमलङ्कृतैराचार्यचरणैः सर्वतन्त्रस्वतन्त्रैर्जगद्गुरुवरैर्ग्रन्थस्यास्य निर्मित्या स्वनिष्ठ सर्वतन्त्र स्वतन्त्रत्व जगद्गुरुत्वादीनि स्वविशेषणानि सत्यापितानि ।

यतो हि राष्ट्रहिताय अग्निमीले, पञ्चनद्यः, इत्याद्याः श्रुतीः सरित्समुद्राञ्श्च हरेः शरीरमित्यादिकाः स्मृतीश्चानुरुध्यार्त्विजीनाध्वनीनानामपि प्राचीनः प्रतिचीनश्च यथामुखीनः सध्रिचीन इह श्रेयसां प्रेयसां च राजमार्गः प्रत्यक्षतां प्रापितः ।

अत आबाल-विद्वद्वर्गोपादेयं कमनीयं काव्यमिदं "शक्तिंभजन्ति सरला लक्षणां चतुरा नराः । व्यञ्जनां नर्म मर्मज्ञाः कवयः कवना जना इत्यभियुक्तोक्त्यनुसारं सर्वैर्यथाधिकार मनुशीलन-योग्यमिति चास्य महत्त्व-वैशिष्ट्यम् ।

नैष्ठिक वर्णिवरेण्या अनाहितगार्हस्थ्यावस्थ्याग्नयोऽत एवाकृतराष्ट्रभृद्धोमा आचार्यचरणाः सम्पादित भक्तिज्ञानविराग त्रेताग्नयोपि 'भारत भारती वैभवं' विरच्य स्वयं राष्ट्रभृतो भूत्वाऽऽचार्यचर्याचातुरीं निदर्शयन्तो जगद्गुरुत्वं चरितार्थयन्तः सर्वैर्भारतीयै र्नतमस्तकैः स्तोतव्या इत्यनुभवति ।

श्रीमदाचार्यचरणोपासको-

बद्रिप्रसाद शास्त्री

प्रपूर्णा वास्तव्यः

पिलानी से प्रकाशित ''मरु-भारती'' (सम्पादक डॉ० बसन्तलाल शर्मा, सह-सम्पादक मदनलाल शर्मा, संस्थापक डॉ० कन्हैयालाल सहल) अंक अक्टूबर १९८७ में डॉ० गुरुदेव त्रिपाठी द्वारा प्रकाशित समीक्षा--

रसभक्ति के आचार्य श्रीनिम्बार्कपीठाधिपति जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज की संस्कृत काव्य-रचना ''भारत-भारती-वैभवम्'' रसपूर्ण काव्य कृति है ।

भक्ति मूलतत्त्व है, उसका प्रसार इष्ट से लेकर राष्ट्र तक चलता है । राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत श्री ''श्रीजी'' की रचनाएँ, राष्ट्र प्रेम के अनेक छोरों का स्पर्श करती हैं । सम्प्रति संग्रह राष्ट्र प्रेम से सम्बद्ध संस्कृत पदों का संग्रह है लेकिन संस्कृत में होने के बावजूद भी भाषा सरल है, अर्थात् संस्कृत के अल्पज्ञान रखने वाले के लिए भी, कविता अबूझ नहीं हैं । भाषा की ऐसी प्रांजलीता कम ग्रन्थों में दीखती है ।

पूरी रचना, पांच विभागों में है--भारत वैभव वर्णन कवि का मुख्य प्रयोजन है और पुस्तक का प्रारम्भ इन्हीं भावों से है । भारत और देवभाषा का अन्योन्याश्रय है । भारत की गूढ सारस्वतसम्पदा देवभाषा में निहित है, देवभाषा का महत्व भी अपार है--इस विचार को कवि ने बहुविध स्थापित किया है । गो, गंगा, गायत्री का सम्बन्ध तीसरे अध्याय से है । गो स्थूल है, गंगा तरल है और गायत्री सूक्ष्म । उपासना के यही तीन सोपान हैं, साधक स्थूलोपासना से भावोपासना की ओर जाकर अन्त में सूक्ष्म अध्यात्म सिद्धि अर्थात् भगवद् प्राप्ति करता है । गो-गंगा-गायत्री इन्हीं तीन सोपानों की प्रतीक हैं, जिनकी महिमा को कवि ने वाणी दी है । इन प्रमुख तीन बिन्दुओं के पश्चात् कवि का ओजपूर्ण उद्बोधन है, जो बोध की अनेक दिशाएँ खोलता है । एक अष्टक के द्वारा कवि ने सबका एकत्र समाहार कर दिया है--यह अष्टक एक प्रकार से उपसंहार है ।

रससिद्ध आचार्य की लेखनी से प्रसूत होने के कारण इन पदों की काव्य माधुरी बढ गयी है । संस्कृत साहित्य में इस पुस्तक का वही स्थान है जो हिन्दी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त की भारतभारती का, और संयोग यह है कि 'भारत भारती' के रचयिता रामभक्त हैं तो 'भारत-भारती-वैभवम्' के रचयिता कृष्णभक्त हैं--भक्त दोनों हैं । **--डा० गुरुदेव त्रिपाठी**

कतिपय विशिष्ट महानुभावों की प्रस्तुत पुस्तक पर-

अभिव्यक्ति

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज प्रणीत 'भारत-भारती-वैभवम्' जहाँ मानवमात्र के लिए अत्यन्त उपयोगी उत्कृष्ट ग्रन्थ है वहीं राष्ट्र-प्रेम का भी यह साकार स्वरूप है । 'भारत वैभवम्' द्वारा भारतदेश की महिमा का जो महनीय वर्णन इस ग्रन्थ में हुआ उसकी सर्वत्र प्रशंसा हुई हैं अनेक प्रशंसात्मक पत्र इस सन्दर्भ में प्राप्त हुए उनमें अवलोकनीय दो पत्र--

नई दिल्ली से सम्पत तोषनीवाल लिखते हैं--

परम पूज्य श्रीजी महाराज,

कुछ दिनों पूर्व आपकी कृति 'भारत-भारती-वैभवम्' पढने का सुअवसर प्राप्त हुआ । यह कृति सुप्रसिद्ध बंगला कवि बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा रचित हमारे राष्ट्र गान 'वन्दे मातरम्' से महनीय है । व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं एवं सम्मान-लिप्सा के इस युग में आपने मातृभूमि का ऐसा सुन्दर गुणगान करने की ओर ध्यान दिया जो आपकी महानता का परिचायक है । ऐसी अनुपम कृति की रचना के लिए मैं आपको बधाई देता हूँ ।

इस पुस्तक को पढने से मैंने आपके एक नवीन स्वरूप के दर्शन किये, यह स्वरूप है आपकी अनुपम काव्य प्रतिभा का एवं विद्वत्ता का । पुस्तक की सरल सुबोध शैली के कारण इसे समझने में तनिक भी कठिनाई नहीं हुई । पुस्तक की प्रतियाँ उपलब्ध हो तो अपने इष्ट मित्रों को देने के लिए बीस प्रतियां भिजवायें ।

श्रद्धावनत-

सम्पत तोषनीवाल

'राधामाधव' सी. १२ शारदापुरी

रिंग रोड़, नई दिल्ली-१५

स्वतन्त्रता सेनानी मन्मथकुमार मिश्र सीकर से लिखते हैं--

परम पूज्यचरण ''श्रीजी'' महाराज

''भारत--भारती--वैभवम्'' ग्रन्थ यहाँ ''गीता स्वाध्याय मण्डल'' के लिए अपेक्षित है । उक्त मण्डल के सदस्यों एवं छात्र--छात्राओं को उक्त रचना के कुछ विशिष्ट अंगों, पदों एवं गीतों को सामूहिक वृन्द-गान के रूप में तैयार करना है । अभी तक किसी का इस विचार--बिन्दु पर ध्यान ही नहीं गया है । आपकी इस रचना को यदि वृन्दगान का रूप दिया जाये तो ''वन्देमातरम्'' राष्ट्रगीत के अनेक विकल्प सामने आ सकते हैं । प्रतियां प्राप्य हो तो वी. पी. द्वारा भिजवाने का आदेश करें ।

सविनय--
मन्मथकुमार मिश्र
स्वतन्त्रता सेनानी
वरिष्ठ विधि विशेषज्ञ
मिश्र भवन, दाधीच नगर
सीकर (राजस्थान)

॥ वैभव -- वैभवम् ॥

मनोहरं ''भारत-भारती-वैभवं'' भवाब्धौ दृढमस्तिपोतम् ।।
यदाश्रयेणाशु जना अभीष्टं सम्प्राप्नुवन्तीति महन्महत्वम् ।।१।।
ज्ञात्वाजनानामधुनाऽऽगतानां संगीतशास्त्रेऽभिरुचिं प्रशस्ताम् ।।
गेयानि पद्यानि सुसङ्गतानि निर्माय तेषां हृदयान्यभान्त्सीत् ।।२।।
यस्माल्लभन्ते सुधियः सुधीत्वं भक्ता हरे र्भक्तिरसं मनोज्ञम् ।।
शिक्षाविदः शिक्षणपद्धतिं तु भ्रष्टाः सुमार्गं बटवः पटुत्वम् ।।३।।
खण्डत्रयं द्योतयते त्रितत्त्वं यच्चेतनाचेतननेतृरूपम् ।।
तथा त्रिलोकीत्वमपीश्वराणां त्रयीमयं कालगुणात्मकत्वम् ।।४।।
खण्डोऽप्यखण्डः सुगमोऽप्यगम्यः पवर्गपूर्णोऽप्यपवर्गहेतुः ।।
ग्रन्थो लघीयानलघुप्रभावः प्रकाशते निम्बदिवाकराभः ।।५।।
स्वसभ्यतासंस्कृतिवेषभाषाहीनान् विलोक्याद्यतनान् स्वकीयान् ।।
आचार्यपादाः करुणावशेन सर्वान् जनान् बोधयितुं प्रवृत्ताः ।।६।।
क्वचित्सदाचारनिदर्शनेन क्वचिच्छुभाशीर्वचनैः प्रबोध्य ।।
प्रायोऽधुना काव्यसुधारसेन ह्याप्लावयन्तीति कियान् प्रमोदः ।।७।।
देशानुरागः, सुरभारतीं प्रति त्यागः सुसङ्गीतविधौ प्रतीतिः ।।
भूतानुकम्पा निजधर्मरक्षेत्येतान् व्यनक्त्यस्यगुणान्हि काव्यम्।।८
सगुण सरसा व्यवस्थिता सदलङ्कारविभूषिता कवेः ।।
कविता हरते विलासिनी हृदयं लौकिकमेव सा यथा ।।९।।
परमार्थपरम्परागतं हरिलीलाऽमृतवैभवं वचः ।।
श्रुतिवत्स्वत एव निस्सृतं सकलं मोदयते जगद्गुरोः ।।१०।।
भारते भारती भाति भारत्यामपि भारतम् ।।
एवमन्योन्यसंयोगाज्जातं वैभवमुत्तमम् ।।११।।

वासुदेवशरण उपाध्यायः
प्राचार्यः- श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालयः
निम्बार्कतीर्थ, सलेमाबादः

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

ग्रन्थ प्रणेता-

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधिपति

श्री "श्रीजी"

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

आपका आविर्भाव (जन्म) विक्रम सम्वत् १९८६ वैशाख शुक्ला प्रतिपदा दि० १० मई सन् १९२९ में निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में ही हुआ था। भादद्वाज गोत्रीय पिताश्री का नाम पं० श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया और माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) था । आप जन्म से ही बड़े प्रतिभा सम्पन्न थे । आपश्री का बाल्यकालीन नाम रतनलाल था । विक्रम सम्वत् १९९७ की आषाढ शु० द्वितीया (रथयात्रा) दिनांक ७ जुलाई सन् १९४० में आपने अपने श्रीगुरुदेव अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज से ११ वर्ष की अवस्था में ही वैष्णवी-विरक्त दीक्षा ग्रहण कर युवराज पद प्राप्त कर लिया था । आपश्री की श्रीगुरुप्रदत्तनाम श्रीराधासर्वेश्वरशरण प्रसिद्ध हुआ । परमाराध्य आपश्री के गुरुदेव आचार्यश्री के गोलोक गमनानन्तर विक्रम सम्वत् २००० के ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया दिनांक ५ जून सन् १९४३ में १४ वर्ष की आयु में ही आप जगद्गुरु श्रीनिम्बार्का-चार्य पीठासीन हो गये थे ।

आपका अध्ययन श्रीवृन्दावनस्थ व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्रीधनञ्जयदासजी महाराज (काठियाबाबा) तर्क-तर्कतीर्थ के निर्देशन में श्रीवृन्दावनधाम स्थित श्रीदावानलविहारीजी का मन्दिर (दावानल कुण्ड) केंवार वन के परम सुरम्य ऐकान्तिक स्थल में हुआ था, श्रीकाठिया बाबा महाराज न्याय-वेदान्त-व्याकरण आदि के प्रकाण्ड विद्वान् थे । जिसके फलस्वरूप आपने विक्रम सं० २००१ के श्रावण मास में कुरुक्षेत्र में होने वाले 'सूर्यसहस्ररश्मि महायाग' के शुभावसर पर आयोजित अखिल भारतीय साधु सम्मेलन में सर्व सम्मति से अध्यक्ष (सभापति) पद को अलंकृत किया था और उसी समय सम्मेलन मे पधारे हुये अनन्त श्रीसमलंकृत जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य स्वामी श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज श्रीगोवर्धनपुरीपीठाधीश्वर ने आपको इस अल्पा-

वस्था में ही सभापति पद पर विराजमान देख कर कहा था कि--आज हमें बड़ा ही गौरव है कि--हम अपने साधु समाज के बीच जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यजी को इस बाल्यकालीन स्वल्पावस्था में ही अध्यक्ष पद पर देख रहे हैं ।

उसी समय से लेकर आज तक कई सम्मेलनों में सभापति पद ग्रहण और धर्म प्रचारार्थ भारत भ्रमण, श्रीनिम्बार्क स्पेशल ट्रेन द्वारा तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा श्रीव्रज चौरासी कोसीय पद यात्रा, प्रत्येक कुम्भों पर श्रीनिम्बार्क-नगर की स्थापना कर एक मास पर्यन्त सत्सङ्ग द्वारा धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में ही वि० सं० २०३१ के चैत्र कृष्ण ३ से ७ तक अर्थात् दि० ३०/३/७५ पर्यन्त पञ्च दिवसीय अखिल भारतीय विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन कर सभी धर्माचार्यों को एक मंच पर आमन्त्रित कर पारस्परिक सहानुभूति पूर्वक सनातन धर्म के विविध विषयों पर जो विचार विनिमय किया वह धार्मिक जगत् के इतिहास में सदा सर्वदा के लिये अमर रहेगा। वास्तव में यह धर्म सम्मेलन "न भूतो न भविष्यति" वाली कहावत को चरितार्थ कर रहा था । उक्त सम्मेलन की प्रकाशित वृहद् स्मारिका द्रष्टव्य है ।

आपश्री के द्वारा प्रत्येक पुरुषोत्तम मास में अनेक वर्षों से बराबर वृहदायोजन हो रहे हैं । जिनमें सप्ताह कथा प्रवचन, विद्वानों द्वारा अष्टोत्तरशत पाठ पारायण तथा श्रीसुदर्शन याग, श्रीमुकुन्दयाग एवं श्रीगोपालयाग आदि यज्ञों के आयोजन हुए हैं । श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ का श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का ऐतिहासिक मेला भी आपके कार्यकाल में नानाविध आयोजनों के साथ प्रतिवर्ष सम्पन्न होता है । इसी प्रकार वर्तमान समय में लाखों की लागत का श्रीनिम्बग्राम-गोवर्धन-व्रजमण्डल में प्राचीनतम श्रीनिम्बार्क तपःस्थली का नव निर्माण भी आपश्री के निर्देशन में महत्वपूर्ण कार्य है । सम्प्रति विविध स्थलों पर विविध रूपात्मक निर्माण कार्य आपके वर्चस्व का द्योतक है ।

पीठ में गो-सेवा, सन्त-सेवा तथा श्रीहरिव्यास औषधालय एवं पुस्तकालय आदि अनेक पारमार्थिक संस्थायें भी चलती हैं ।

इस प्रकार आपके पीठासीन होने के पश्चात् अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठ एवं उससे संलग्न संस्थाओं की सर्वतोमुखी समुन्नति हुई है । इस समय पीठ में तीन विद्यालय चल रहे हैं । १. श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय २. श्रीनिम्बार्क दर्शन विद्यालय और ३. श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय, इन सब में ७५ छात्र अध्ययन

कर रहे हैं । आठ अध्यापक हैं । इन सबके लिये आवास प्रकाश एवं भोजन आदि की व्यवस्था पीठ की ओर से ही है ।

आपके द्वारा लगभग डेढ लाख की लागत राशि से निर्मित ''जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य प्राथमिक विद्यालय'' भवन का निर्माण कराकर राजस्थान सरकार को प्रदान किया गया है ।

धर्म प्रचारार्थ दो पत्र एक मासिक पत्र 'श्रीसर्वेश्वर' जो कि श्रीसर्वेश्वर प्रेस श्रीनिकुञ्ज प्रताप बाजार वृन्दावन से प्रकाशित होता है और दूसरा ''श्रीनिम्बार्क'' पाक्षिक पत्र यह अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) से प्रकाशित होता है ।

आपका स्वास्थ्य उतना अनुकूल न रहते हुये भी प्रतिदिन अपने आह्निक कार्यों से निवृत्त होकर पीठ की व्यवस्था सम्बन्धी दैनिक कार्यों के अतिरिक्त समय मिलने पर एकान्त स्थल में बैठ ग्रन्थ रचना आदि में आपकी साहित्य-साधना विशेष महत्व रखती है । आपश्री द्वारा विरचित निम्नांकित ग्रन्थ परम द्रष्टव्य है ।

श्रीनिम्बार्ककृत-प्रातः स्तवराज स्तोत्र पर-युग्म तत्त्व प्रकाशिका संस्कृत टीका, श्रीयुगलगीतिशतक, उपदेश दर्शन, श्रीराधामाधवशतक, निकुञ्ज सौरभ, स्तवरत्नाञ्जलि, श्रीसर्वेश्वर सुधाबिन्दु, हिन्दु संघटन आदि विविध ग्रन्थों के अतिरिक्त इस 'भारत-भारती-वैभवम्' की रचना की है जिसमें की भारत और भारती (संस्कृत भाषा) की महिमा और सभी के प्रति उद्बोधन कर जो दिग्दर्शन कराया है, वह पढने और मनन करने योग्य है ।

आधुनिक-शिक्षा पद्धति के अनुसार भारत राष्ट्र के नैतिक धरातल को समुन्नत करने के लिये यह नव प्रकाशित ''भारत-भारती-वैभवम्'' ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है । अन्य ग्रन्थों की रचना द्वारा भी पूज्य आचार्यश्री ने साहित्य की जो श्रीवृद्धि की है, वह पाठकों के लिये परम हितप्रद है ।

--निम्बार्कभूषण पं० गोविन्ददास 'सन्त'

धर्मशास्त्री पुराणतीर्थ

द्वैताद्वैतविशारद

उत्तम कार्य की फल प्राप्ति में--

श्रीसर्वेश्वर कृपा ही मूल है

किसी भी उत्तम कार्य के सृजन अथवा उसके सम्पादन में अनन्तकृपा-वारिधि अनुग्रहविग्रहस्वरूप आनन्दरससारसर्वस्व भगवान् सर्वेश्वर श्रीराधामाधव की परमानुकम्पा ही प्रमुख एवं मूल है । ''यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः'' ''लभ्यते तु तत्कृपयैव'' ''मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम्'' ''मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम् । यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्, ''नानुग्रहं तव विना त्वयि भक्तियोगः'' ''एक कृपा करि होय सो होई । साधक सिद्ध रह्यो नहीं कोई'' इत्यादि विविध वचनों से स्पष्ट है कि बिना श्रीहरि कृपा के कुछ भी सम्भाव्य नहीं । मानव अपने बुद्धि-बल पर जो कुछ करने का अहं करता है वह उसकी अज्ञता मात्र ही है । ''भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मामया'' यथार्थ में वे सर्वान्तर्यामी सर्वद्रष्टा सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीसर्वेश्वर ही अपनी अघटनघटना-पटीयसी अनन्ताचिन्त्य विश्वमोहिनी विलक्षण माया से अनन्त-अनन्त प्राणियों को संसृतिचक्र में संचक्रमण कराते हैं । यह अल्पज्ञ क्षुद्रातिक्षुद्र परतन्त्र प्राणी कर ही क्या सकता है, जो भी कुछ होता है उन्हीं सर्वप्रेरक सर्वाधार युगलकिशोर श्रीराधामाधव का अहैतुक कृपाप्रसाद ही सर्वतो मुख्य है । ''भारत भारती वैभवम्'' का प्रणयन भी उन्हीं अकारण करुणावरुणालय श्रीहरि एवं उन्हीं के अभिनववपु अनुग्रहविग्रहरूप श्रीनिम्बार्क भगवान् तथा अस्मद्गुरुचरणारविन्दों की परमानुकम्पारूप प्रसाद का ही यह सत्फल है जो आप महानुभावों के समक्ष यह लघुकलेवरात्मक ग्रन्थ प्रस्तुत है ।

इस ग्रन्थ में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपाजन्य यथामति स्वदेश भारत की गरिमा तथा समग्र भाषाओं की जननी देववाणी संस्कृत भाषा के महत्व का संक्षिप्त निदर्शन कराने की चेष्टा की गई है, गीता, गङ्गा और गोमाता की अनुपम महिमा का परिवर्णन भी अनादि वैदिक सनातन संस्कृति का प्रमुख स्वरूप है, साथ ही देशवासियों के आवश्यक कर्तव्यों के परिपालन हेतु कुछ उद्बोधन स्वरूप वचन भी दिये हैं जिससे शास्त्रविहित समुचित दिशा का यथार्थ अवबोध हो सकें । ग्रन्थ में श्लोकों के अतिरिक्त कुछ ऐसे गेय पद्य भी हैं जिससे संगीत के

माध्यम से सुन्दर लय के साथ वे पद्य सुगमता से गाये जा सकते हैं । ग्रन्थ रचना में सरलता का भी विशेष ध्यान रखा गया है जिससे साधारण संस्कृतज्ञ भी अर्थावबोध कर सकें । स्वदेशनिष्ठ, संस्कृतानुराग, कर्तव्यपरायणता ही इस ग्रन्थ का मूल उद्देश्य है । देश के मर्मज्ञ मनीषी महानुभावों देश भक्तों तथा स्वाध्याय निरत छात्रवृन्दों ने इस ग्रन्थ का यत्किञ्चित् भी अनुशीलन कर यदि कुछ इससे सुन्दर उपलब्धि की तो इस ग्रन्थ की सम्यक् उपादेयता सम्भव होगी।

प्रस्तुत ग्रन्थ को और भी सरल-सुगम बनाने के लिये हमारे ही संकेत पर ज्ञान वयोवृद्ध पण्डित प्रवर निम्बार्कभूषण श्रीगोविन्ददासजी 'सन्त' धर्मशास्त्री पुराणतीर्थ द्वैताद्वैत विशारद प्रचारमन्त्री अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, प्रधान सम्पादक 'श्रीनिम्बार्क' पाक्षिक पत्र ने ''वैभव बोधिनी'' संस्कृत व्याख्या एवं भावार्थ लिखकर इसे और भी विशेष उपयोगी बना दिया है । श्रीसन्तजी का परिश्रम परम स्तुत्य है । श्रीसन्तजी द्वारा विभिन्न ग्रन्थों की सरस रचनायें हुई हैं जो परम अवलोकनीय है ।

मानव जीवन में सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय अतीव आवश्यक है । शास्त्रों के अध्यवसाय के बिना मानवता का सुभग स्वरूप प्रस्फुटित नहीं होता । यदि मानव में मानवता का अभाव है तो उसका जीवन नगण्य है । ''भारतभारती-वैभवम्'' के मनन से अपने कर्तव्यों का आभास परिलक्षित होगा । राष्ट्रभक्ति एवं सुरभारती संस्कृत भाषा के प्रति सहज अनुराग होगा ऐसा हम अनुभव करते हैं । इस प्रस्तुत ग्रन्थ का स्वल्प समय में ही प्रणयन होकर प्रकाशित हो जाना उन्हीं अनन्तकोटिब्रह्माण्डाधिपति, क्षराक्षरातीत, जगज्जन्मादिहेतु, मुक्तोपसृप्य, निरतिशयसौन्दर्य-माधुर्य-कारुण्य-लावण्य-सौकौमार्य-सौगन्ध्य-सौशील्यादि-निखिलकल्याणगुणगणनिलय, कोटिकन्दर्पदर्पदलपटीयान्, अखिलरसामृतसार-सिन्धु स्वरूप, भगवान् श्रीसर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु का ही अनुकम्पा-प्रसाद मात्र है ।

मिति-आषाढ शुक्ल २ गुरुवासरः
विक्रमाब्दाः-२०४२
दिनाङ्काः-२० जून १९८५

श्रीसर्वेश्वर-राधामाधवयुगलपदकंज
मकरन्दकामः
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

रचयिता

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

❋ विषय -- सूची ❋

अकारादिक्रमेण पद्यानुक्रमणिका

*

।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते।।

जयतु भारतम्

जयतु भारती

भारत–भारती–वैभवम्

वन्दे भारतवर्ष सुभगम्

निगमागमनयतन्त्रपुराणैः शास्त्रै र्विविधै र्गीतं ललितम्।।

सुरमुनिवृन्दैश्चर्चितमभितो हिमगिरिशोभितसागरसरसम्।

श्रीराधासर्वेश्वरशरणः सस्यश्यामलं हरिपदलसितम्।।

* श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज-

विरचितम्-

भारत - भारती - वैभवम्

प्रभु सर्वेश्वरं वन्दे श्रीराधामाधवं हरिम् ।
श्रीमद्धंसकुमाराँश्च नारदं निम्बभास्करम् ॥१॥
निवासाचार्यमाचार्यं भाष्यकारं सदा भजे ।
श्रीहरिव्यासदेवञ्च महावाणीरसप्रदम् ॥२॥
श्रीमत्परशुरामञ्च देवाचार्यं नमाम्यहम् ।
श्रीगुरुदेवमाचार्य दिव्यं भव्यं मनोहरम् ॥३॥
आचार्यवर्यान्प्रणिपत्य चित्ते विरच्यते सर्वहिताय गेयम् ।
सुखावहं ''भारत भारती वैभवं'' वरेण्यं गुणबोधकारम् ॥४॥

टीकाकार कृत-- मंगलाचरण

सर्वेश्वरं परं ब्रह्म सेव्यं श्रीसनकादिकैः ।
श्रीराधामाधवं वन्दे रासलीलारसप्रदम् ॥
श्रीबालकृष्णमाचार्यं गुरुवर्यं कृपानिधिम् ।
विलिख्यते मया चेयं व्याख्या **वैभव बोधिनी** ॥

वैभव बोधिनी--प्रभुमिति.....

प्रभुम्--प्रकर्षेण भवतीति प्रभुः तं प्रभुम् । कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं सर्वसमर्थम् । सर्वतन्त्रस्वतन्त्रं वा । सर्वेश्वरम्-सर्वेषां चराचरप्राणिनामीश्वरः सर्वेश्वरः तं सर्वेश्वरमिति । श्रीसनकादि संसेव्यमीश्वरमिति सर्वेश्वरम् । **हरिम्**-हरति पापानिति हरिः तं हरिम् । **श्रीराधामाधवम्**-श्रीवृन्दावनाधीश्वरम् ।

तत्त्वमेकं द्विधा भवेत् । ''तस्माज्ज्योतिरभूदद्वेधाराधामाधव रूपकम्'' इति संमोहन तन्त्रे । **श्रीमद्धंसम्**-श्रीमद्धंसावतारं प्रभुम् । **कुमारान्**-श्रीसनकादि कुमारान् सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमारान् ब्रह्मपुत्रानित्यर्थः । **नारदम्**-नारं ज्ञानं ददातीति नारदः तं नारदम् । अर्थात् श्रीदेवर्षिवर्यम् । **निम्बभास्करम्**-निम्बादित्यं श्रीचक्रसुदर्शनावतारम् वा सर्वानितानहं **वन्दे**--श्रीराधासर्वेशरणोऽहं नमस्करोमि ॥४॥

भावार्थ-सर्वसमर्थ भगवान् श्रीसर्वेश्वर श्रीहरि राधामाधव तथा श्रीहंस भगवान् एवं श्रीसनकादि (सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार) महर्षिवर्य, देवर्षिवर्य श्रीनारद और श्रीनिम्बार्क भगवान् की हम वन्दना करते हैं ॥१॥

वैभव बोधिनी--निवासाचार्यमिति.....

निवासाचार्यम्-श्रीमन्निम्बार्क शिष्यम् । पाञ्चजन्य शंखावतारम् । **आचार्यम्**-देशिकवरम् । **भाष्यकारम्**- 'वेदान्त कौस्तुभ' नामकभाष्यप्रणेतारम् । **च**-पुनः । **महावाणीरसप्रदम्**-महावाणीरसप्रदातारम् । अर्थात् ''महावाणी'' इत्याख्यग्रन्थनिर्मातारम् । **श्रीहरिव्यासदेवम्**-एतन्नामसुप्रसिद्ध-देशिकवरम् । **सदा**-सर्वदा । **भजे**-सेवे ॥२॥

भावार्थ-वेदान्त कौस्तुभ भाष्यकार श्रीपाञ्चजन्य शंखावतार श्रीमन्निवासाचार्य तथा महावाणी रस प्रदाता अर्थात् 'श्रीमहावाणी' नामक श्रीनिकुञ्ज रस परक वृहद् ग्रन्थ के प्रणेता अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज का भजन-सेवन अर्थात् स्मरण करते हैं ॥२॥

वैभव बोधिनी--श्रीमत्परशुरामश्चेति.....

श्रीमत्परशुरामदेवाचार्यम्--एतन्नामाख्यसुप्रसिद्धदेशिकवरम् । अर्थात् श्रीमन्निम्बार्काचार्यपीठसंस्थापकं श्रीआचार्यवर्यञ्च । **च**-पुनः । **दिव्यं**-तेजस्वरूपम् । **भव्यं**-विशालम् । **मनोहरम्**-चित्ताकर्षकम् । **आचार्यं**-देशिकवरम् । **श्रीगुरुदेवम्**-श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यवर्येति नामाख्य-गुरुवर्यम्। **अहम्**-ग्रन्थ प्रणेता । **नमामि**-नमस्करोमि ॥३॥

भावार्थ--श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ संस्थापक अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज तथा परम मनोहर विशाल दिव्य स्वरूप आचार्यचरण श्रीगुरुदेव (अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज) के श्रीचरणों में नमन करते हैं ॥३॥

वैभव बोधिनी--आचार्यवर्यानीति......

आचार्यवर्यान्-देशिकवरान् । अर्थात् श्रीमद्धंसप्रभुं समारभ्यास्मद्-गुरुदेवपर्यन्तान्तान् सर्वानाचार्यचरणान् । **चित्ते**-चेतसि । **प्रणिपत्य**-नमस्कृत्य। **सुखावहम्**-सुखप्रदम् । **वरेण्यम्**-वरणीयम् । **गुणबोधकारम्**-गुणज्ञान-प्रकाशकम् । **भारत भारती वैभवम्**-एतन्नामाख्यग्रन्थविशेषमिदम् । **सर्वहिताय**-सर्वजनमंगलाय । **गेयम्**-गातुं योग्यं गेयमर्थाद्गीतिशास्त्रम्॥४॥

भावार्थ--श्रीहंस भगवान् से लेकर हमारे परम पूज्य श्रीगुरुदेव पर्यन्त समस्त आचार्यचरणों का चित्त में चिन्तन (ध्यान) करके परम सुखकारक तथा गुणज्ञान कराने वाले, वरण करने योग्य सर्वजन हितार्थ ''भारत भारती वैभव'' नामक ग्रन्थ की श्रीमदाचार्यचरण द्वारा रचना की जा रही है ॥४॥

भारत वैभव वर्णनम्

वन्दे नितरां भारतवसुधाम् ।
दिव्यहिमालय-गङ्गा-यमुना,-सरयू-कृष्णाशोभितसरसाम् ॥
मुनिजनदेवैरनिशं पूज्यां, जलधितरङ्गैरञ्चितसीमाम् ।
भगवल्लीलाधाममयीं तां, नानातीर्थैरभिरमणीयाम् ॥
अध्यात्मधरित्रीं गौरवपूर्णां, शान्तिवहां श्रीवरदां सुखदाम् ।
सस्यश्यामलां कलितामलां, कोटि-कोटिजनसेवितमुदिताम्।
वीरकदम्बैरतिकमनीयां, सुधीजनैश्च परमोपास्याम् ।
वेद-पुराणै र्नित्यसुगीतां, राष्ट्रसुभक्तैरीड्यां भव्याम् ॥
नानारत्नै र्मणिभि र्युक्तां, हिरण्यरूपां हरिपदपुण्याम् ।
राधासर्वेश्वरशरणोऽहं, वारं वारं वन्दे रम्याम् ॥१॥

वैभवबोधिनी--वन्दे-इति...

भारत वसुधाम्- भारत भूमिम् । **नितराम्**-सततम् । **वन्दे**-अभिवादये । कीदृशीं भारत वसुधाम्-यत्रदिव्य **हिमालय गंगा-यमुना-सरयू-कृष्णा शोभित सरसाम्**-परमदिव्यो हिमालय नाम नगाधिराजः पुनश्च गङ्गा-भागीरथी यमुना-कालिन्दनन्दिनी । सरयू-वासिष्ठी । कृष्णा-कावेरी प्रभृति नदीभिः पावनतमाम् । **मुनिजनदेवैरनिशम्**-सुरनरमुनिवृन्दैर्नित्यम् । **पूज्याम्**-आराध्याम् । **जलधितरङ्गैः**-समुद्रवीचिभिः । **अञ्चितसीमाम्**-परिशोभित प्रान्तभागाम् । **भगवल्लीलाधाममयीम्**-भगवत्क्रीडास्थलमयीम्। **नानातीर्थैरभिरमणीयाम्**-विविधतीर्थैरतिमनोहराम् । **अध्यात्मधरित्रीम्**-अध्यात्मविद्याधरणीम् । **गौरवपूर्णाम्**-महत्वपूर्णाम् । **शान्तिवहाम्**-शान्तिप्रदाम् । **श्रीवरदाम्**-लक्ष्मीदात्रीम् । **सुखदाम्**-सुखप्रदाम् । **सस्यश्यामलाम्**-धन-धान्यपरिपूर्णाम् । **कलिताम्-ललिताम्**, अर्थात् सुन्दरतमाम् । अमलाम्-निर्मलाम् । **कोटि-कोटिजनसेवितमुदिताम्**-असंख्य-जननिस्सेवनेन सुप्रसन्नाम् । **वीरकदम्बैरतिकमनीयाम्**-वीरपुरुषसमूहैः सुमनोहराम् । **सुधीजनैश्च**-बुधजनैश्च । **परमोपास्याम्**-परिसेव्याम् । **वेदपुराणैर्नित्यसुगीताम्**-निगमागमशास्त्रैरनिशं प्रगीयमानाम् । **राष्ट्रसुभक्तैरीड्याम्**-देशभक्तैः संस्तुताम् । **भव्याम्**-विशालाम् । **नानारत्नैर्मणिभिर्युक्ताम्**-मुक्ता माणिक्य-प्रवालादिविविधरत्नै र्मणिभिश्च भरिताम् । **हिरण्यरूपाम्**-स्वर्णस्वरूपाम् । **हरिपदपुण्याम्**-भगवच्चरणसमलङ्कृताम्, अतएव पुण्याम् । **रम्याम्**-परममनोहराम् । ताम्-भारतवसुधाम् । **अहम्**-ग्रन्थकारः । **वारं वारम्**-मुहुर्मुहुः । **वन्दे**-अभिवादये ॥१॥

भावार्थ--हम भारत वसुधा को निरन्तर नमस्कार करते हैं । यह भारत वसुधा जो कि परम सुन्दर अति विशाल हिमालय और गङ्गा-यमुना-सरयू-कृष्णा आदि परम पवित्र नदियों द्वारा सुशोभित और सरस है । मुनिजन तथा सुरवृन्दों द्वारा पूजित, समुद्र तरङ्गों से परिसेवित, भगवल्लीलास्वरूप धाममयी, विविध तीर्थों द्वारा सुरमणीय, अध्यात्म-विद्या की मूल आधार, महत्वपूर्ण, शान्तिदायक, लक्ष्मीप्रद, सुख देने वाली, धन-धान्य से परिपूर्ण

ललित और निर्मल, करोड़ों-करोड़ों जन-समुदाय द्वारा परिसेवित होने से सुप्रसन्न, वीर-पुरुषों द्वारा अति सम्मानित, विद्वद्-वृन्दों द्वारा परमोपास्य, वेदपुराणादि शास्त्रों द्वारा गान की जाने वाली, देश भक्तों द्वारा संस्तुत्य, अति विशाल, नानाविध मणि-रत्नों से सुसम्पन्न, स्वर्णस्वरूपा, श्रीहरिचरणारविन्दों से अलंकृत, परम रमणीय, ऐसी उस भारत वसुधा को श्रीआचार्यचरण बारम्बार अभिवादन अर्थात् नमन करते हैं ॥१॥

भारतधरणी परमोपास्या ।
वैदिकसंस्कृतिकेन्द्रस्वरूपा, नित्यं विबुधजनैरभिलाष्या ॥
इह खलु मुनयः सुधियः सन्तो, वसन्ति सततं तैरभिभाष्या ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणो, वदति मुदेति मनोहरहास्या ॥२॥

वैभवबोधिनी--भारतधरणीति....

भारतधरणी--भारतवसुधा । **परमोपास्या**-परमोपासनीया, अस्ति। कीदृशी भारतधरणी । **वैदिकसंस्कृतिकेन्द्रस्वरूपा**-वैदिकसंस्कृतिमूलस्वरूपा । **नित्यम्**-सर्वदा । **विवुधजनैरभिलाष्या**-विद्वद्वृन्दैराकांक्ष्या । **इह**-भारतभूमौ । **खलु**-इति निश्चयेन । **मुनयः**-मुनिजनाः । **सुधियः**-विद्वद्वर्याः। **सन्तः**-सज्जनाः पुण्यश्लोकाः साधुपुरुषाः । **सततम्**-निरन्तरम् । **वसन्ति**-निवसन्ति । **तैः**-सुधीमुनिजनैः । अभिभाष्या-वर्णनीया, अर्थात् नानाविधरूपेण परिकीर्तिता । **श्रीराधासर्वेश्वरशरणः**-वर्तमान जगद्गुरु श्री ''श्रीजी'' इतिसुविख्यातः । श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यपादः । **मनोहरहास्या**-चारुप्रफुल्लिता । **इति**-इत्थम् । मुदा-प्रसन्नचित्तेन । **वदति**-भणति कथयतीत्यर्थः ॥२॥

भावार्थ--भारत वसुन्धरा परमोपासनीय है, यह मङ्गलमयी धरणी वैदिक संस्कृति की केन्द्र स्वरूपा है, विद्वानों द्वारा नित्य अभिलषित है। जिस पवित्र भूमि पर मुनिजन, विद्वज्जन और सन्तजन निरन्तर निवास करते हैं, और जिनके द्वारा जिसकी विविध रूप से महिमा परिवर्णित है, और आचार्य-श्रीचरण जिसकी महिमा का सुन्दर गान प्रसन्नचित्त से कर रहे हैं ॥२॥

भारतवर्षं नमामि रुचिरम् ।
गो-भूदेवै राष्ट्रसुनिष्ठैः, सेव्यं भव्यं भास्कररूपम् ।।
अतिरमणीयं हरिपदचर्चित,-मागमवर्णितमुत्तमफलदम् ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणो, विविधमनोहरतीर्थमन्दिरम् ।।३ ।।

वैभवबोधिनी--भारतवर्षमिति....

रुचिरम्-सुन्दरम् । **भारतवर्षम्**-एतन्नामकं परमपुण्यमयं स्वदेशम्। **नमामि**-प्रणमामि । कीदृशं भारतवर्षम् । **यत्र-गो-भूदेवैः**-धेनु-विप्रवृन्दैः। **राष्ट्रसुनिष्ठैः**-राष्ट्रभक्तैः । **सेव्यम्**-भजनीयम् । **भव्यम्**-विशालम् । **भास्कर-रूपम्**-तेजस्वरूपिणम् । **अतिरमणीयम्**-परममनोहरम् । **हरिपदचर्चितम्**-श्रीभगवच्चरणकमलाङ्कितम् । **आगमवर्णितम्**-पुराणादिशास्त्रसंकथितम् । **उत्तमफलदम्**-श्रेष्ठफलप्रदम् । **श्रीराधासर्वेश्वरशरणः**-ग्रन्थ प्रणेता कथयति। यत् **विविधमनोहरतीर्थमन्दिरम्**-नानाविधरुचिरपुण्यस्थलगृहम् । ईदृशं चारुतमं भारतवर्षम् । नमामि-नमस्करोमि ॥३॥

भावार्थ--गो-ब्राह्मण-देशभक्तों द्वारा परिसेव्यमान अति विशाल तेजः स्वरूप, परम मनोहर हरिपद-चर्चित तथा पुराणादि शास्त्रों द्वारा वर्णित, उत्तम फलदायक नानाविध परम चित्ताकर्षक तीर्थस्थल और देव-मन्दिरों से युक्त ऐसे परम सुन्दर भारतवर्ष को आचार्यश्री नमन करते हैं ॥३॥

भारतभूमौ सुन्दरवासः ।
कोटि-कोटिजनजय-जयपूर्णो, विविधकलाकृतिरूपाभासः ।।
अतिमञ्जुलचामीकरवर्णो, नित्यवरेण्यो ललितविलासः ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणः, कथयति हृदेति सुभगविकासः ।।४ ।।

वैभवबोधिनी--भारतभूमाविति....

भारतभूमौ--भारतप्रदेशे । **सुन्दरवासः**-मनोहरवासः । **कोटि-कोटिजनजय-जयपूर्णः**-असंख्येयजनैर्जय-जयशब्दपरिपूर्णोऽर्थात् समुच्चरितः । **विविधकलाकृति-रूपाभासः**-नानाविध कलाचमत्कृतिरूप-प्रकाशः । **अतिमञ्जुलचामीकरवर्णः**-अतिमनोहरस्वर्णसमवर्णोऽर्थात्

दिव्यस्वरूपः । **नित्यवरेण्यः**-सर्वदा सेव्यः । **ललितविलासः**-सुन्दरानन्द-परिपूर्णः । ग्रन्थकर्ता **कथयति**-निगदति । **हृदा**-अन्तःकरणेन । **सुभग-विकास**-उत्तमोत्तमैश्वर्य-प्रकाशः । पुनरपि एवंविध **भारतभूमौ**-भारतावनौ । **वासः**-निवासः । अति श्रेष्ठतरोऽस्ति वर्तते-इति ॥४॥

भावार्थ--भारत भूमि पर निवास करना परम श्रेष्ठ है--जो कि कोटि-कोटि जन समुदाय द्वारा उच्चरित जय-जयघोष से परिपूर्ण है, विविध चमत्कार-पूर्ण कलाकृतियों से परम सुशोभित है, अति मनोहर स्वर्णस्वरूपमय अर्थात् दिव्यस्वरूप, नित्य वरण करने योग्य, सुन्दर सुखद वैभवों से परिपूर्ण सब प्रकार के ऐश्वर्यों से विकसित ऐसे भारतवर्ष में निवास करना सुन्दरतम है । यही आचार्यश्री की हार्दिक कामना है ॥४॥

भारतवर्षं मनसा ध्येयम् ।
सततं सर्वै राष्ट्रसुभक्तैः, साधुकदम्बैश्चानुष्ठेयम् ॥
धर्माचार्यैं धर्मसुनिष्ठै,- नितरां धीरैः परिसन्धेयम् ।
राधासर्वेश्वरशरणेन, प्रचुरं हृद्यं हृद्यवधेयम् ॥५॥

वैभवबोधिनी--भारतवर्षमिति.....

भारतवर्षम्-भारतप्रदेशम् । **मनसा**-चेतसा । **ध्येयम्**-स्मरणीयम् । अर्थात् ध्यातुं योग्यं ध्येयमित्यर्थः । **राष्ट्रसुभक्तैः**-देशसेवकैः । **साधुकदम्बैः**-सतां समूहैः । **सर्वैः**-एतैः । **सततम्**-निरन्तरम् । **अनुष्ठेयम्**-आराधनीयम् । **च**-पुनः । **धर्माचार्यैः**-देशिकवर्यैः । **धर्मसुनिष्ठैः**-धर्मपरायणैः । **धीरैः**-धीरपुरुषैः-विद्वद्भिः । **नितराम्**-सततम् । **परिसन्धेयम्**-परिपालनीयम् । **राधासर्वेश्वरशरणेन**-श्रीआचार्यचरणेन । **प्रचुरम्**-विपुलम् । **हृद्यं**-प्रियम् । **हृदि**-अन्तःकरणे । **अवधेयम्**-धारणीयम् ।

भावार्थ--भारतवर्ष मन के द्वारा ध्यान करने योग्य है । देशभक्त और साधु समुदाय द्वारा निरन्तर सेवनीय है । धर्माचार्यों एवं धर्म परायण विद्वज्जनों द्वारा परिसेवनीय है । आचार्यश्री की ऐसी पवित्र अभिलाषा है कि ऐसे पुण्यस्वरूप देश को सर्वदा हृदय में **धारण** करना परम अभीष्ट है ॥५॥

भारतवसुधादर्शनममलम् ।
स्वर्गसम्पदं विमुच्य विबुधा, यन्ति भारतं वैभवप्रबलम् ।।
इतरे देशा विलोक्य भारतं, मूका भवन्ति गौरवबहुलम् ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणः, सम्यक् निगदति भारतमचलम् ।।६।।

वैभवबोधिनी--भारतवसुधेति.....

भारतवसुधादर्शनममलम्-भारतवर्षस्य धरित्र्या दर्शनं चारुतयाऽवलोकनं निर्मलमर्थात् परमदिव्यतममतिपुण्यकरमिति यावत् । **विवुधा**-देवाः । **स्वर्गसम्पदं**-स्वर्गवैभवम् । **विमुच्य**- परित्यज्य । **भारतम्**-भारतवर्षम् । **यन्ति**-व्रजन्ति अर्थात्सोत्साहं सोल्लासश्चाऽऽयान्ति । **इतरे देशाः**-अन्य प्रदेशाः । **वैभवप्रबलम्**-भारतस्य वैभववैशिष्ट्यम् । **विलोक्य**-दृष्ट्वा। **मूकाः**-निःशब्दाः स्तब्धाः । **भवन्ति**-जायन्ते । **गौरवबहुलम्**-इति भारतवर्षस्य गौरवमतीवमहत्वं प्रदर्शितम् । **श्रीराधासर्वेश्वरशरणः**-श्रीमदाचार्यपादः । **सम्यक्**ः-सुष्ठुप्रकारेण । **भारतम्**-भारतदेशम्। **अचलम्**-अखण्डम् । **निगदति**-प्रतिपादयति ।।६।।

भावार्थ--भारत-वसुधा का दर्शन अत्यन्त निर्मल है । देवगण भी भारत के प्रबल वैभव को देखकर स्वर्ग-सम्पदा का परित्याग कर भारत में आते हैं । दूसरे देश भी इस देश के गौरवपूर्ण वैभव को देख अवाक् रह जाते हैं । आचार्यश्रीचरण इस अखण्ड भारत के सम्बन्ध में अपना सुन्दरतम भाव व्यक्त कर रहे हैं ।।६।।

वीरधरायां वसन्ति वीराः ।
भारतरक्षणहेतोः सततं, निबद्धकक्षा बलिष्ठधीराः ।।
व्रजन्ति परितः शस्त्रपाणयो, देशसुनिष्ठा धृतनवचीराः ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणो, निगदति नहि ते भवन्त्यधीराः ।।७।।

वैभवबोधिनी--वीरधरायामिति.....

वीरधरायाम्--वीरवसुन्धरायाम् । **वीराः**-वीरपुरुषाः । **वसन्ति**-निवसन्ति । कीदृशा वीराः, **बलिष्ठधीराः**-बलवन्तो-विचक्षणाः । **देश**-

सुनिष्ठाः-देशभक्तिपरायणाः । **धृतनवचीराः**-धृतनवीनवस्त्राः । **सततम्**-निरन्तरम् । **निवद्धकक्षाः**-कटिबद्धाः । **शस्त्रपाणयः**-शस्त्रधारिणः । **भारतरक्षणहेतोः**-भारतरक्षार्थम् । **परितः**-सर्वतः । **व्रजन्ति**-विचरन्ति । **श्रीराधासर्वेश्वरशरणः**-आचार्यवर्यः । **निगदति**-कथयति । **ते**-वीराः किंचिन्मात्रमपि । **अधीराः**-धैर्यरहिताः । **नहि**-नैव । **भवन्ति**-प्रभवन्ति ॥७॥

भावार्थ--भारत की वीर वसुन्धरा पर वीर पुरुष निवास करते हैं । वे वीर पुरुष बड़े ही बलवान् हैं अपने उत्तम विचारों के साथ, देशभक्ति परायण बन, नूतन वस्त्र (वर्दी) धारण किये हुये तथा हाथ में शस्त्र धारण किये हुए कटिबद्ध होकर देश की सुरक्षा हेतु निरन्तर चारों ओर परिभ्रमण करते हैं । वे वीर किंचिन्मात्र भी अधीर नहीं होते हैं अर्थात् अपने कर्तव्य पथ से जरा भी वे विचलित नहीं होते हैं । इसी भाव को आचार्यश्री व्यक्त कर रहे हैं ॥७॥

जयति मदीया भारतमाता ।
निर्मलसुभगा मणिमयरूपा, रम्या विविधगुणैरवदाता ॥
सस्यश्यामला परमविशाला, हिमगिरिधवला परिसञ्जाता ।
राधासर्वेश्वरशरणस्य, चकास्ति चेतसि भारतमाता ॥८॥

वैभवबोधिनी--जयतीति.....

मदीया--मामकी । **भारतमाता**-भारतजननी । **जयति**-इति-उत्कर्ष-विशेषः । कीदृशी भारतमाता, **निर्मलसुभगा**-दिव्यैश्वर्यशालिनी सुन्दरतमा । **मणिमयरूपा**-प्रवालमुक्तादिनानाविधमणिमयस्वरूपा । **विविधगुणैरवदाता**-नानाविधगुणैर्भरिता-शुभ्रस्वरूपा । **रम्या**-शोभनीया । **सस्यश्यामला**-धन-धान्य-परिपूर्णा । **परमविशाला**-अतिविस्तीर्णा । **हिमगिरिधवला**-हिमालयस्य श्वेतकान्त्या शुभ्रस्वरूपात्मिका । **परि-सञ्जाता**-सर्वतः संभूता । **श्रीराधासर्वेश्वरशरणस्य**-आचार्यश्रीचरणस्य । **चेतसि**-मनसि । **भारतमाता**-भारतजननी । **चकास्ति**-परिशोभते ईदृशी मदीयभारतमाता नितरां जयति ॥८॥

भावार्थ--हमारी भारतमाता की जय हो। भारतमाता निर्मल ऐश्वर्य से युक्त है, मणिमय स्वरूप है विविध गुणों से परिपूर्ण है, परम सुरम्य है, धन-धान्य से परिपूर्ण है और परम विशाल, हिमालय पर्वतराज से धवल वर्ण बनी हुई श्रीआचार्यचरण एवं सभी के हृदय में प्रकाशित होती हुई उस हमारी भारतमाता की सर्वदा जय हो ॥८॥

भारतधरणी कियती मधुरा ।
यत्र रमन्ते विविधसाधव,-श्चरन्ति गावः कियती प्रचुरा ॥
ऋषयो मुनयः पठन्ति वेदान्, हरिदर्शनाय कियत्यातुरा ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणो, ध्रुवमभिवदति च नैव निष्ठुरा ॥९॥

वैभवबोधिनी--भारत धरणीति.....

भारतधरणी--भारतवसुधा । **कियती**-कीदृशी । **मधुरा**-मधुरानन्दयुक्ता ऽस्ति । **यत्र**-भारतवसुधायाम् । **विविधसाधवः**-नानाविध-महात्मानः । **रमन्ते**-परिभ्रमणं कुर्वन्ति । **च**-पुनः । **गावः**-गो-मातरः । **चरन्ति**-विचरन्ति, अथवा तृणं चरन्तीत्यर्थः । **कियती चतुरा**-इयं भारतमाता कियती प्रवीणा ऽस्ति । यत्र **ऋषयः**-ऋतम्भराप्रज्ञाधारिणः । **मुनयः**-मननकर्तारः । **वेदान्**-वेदशास्त्राणि । **पठन्ति**-स्वाध्यायं कुर्वन्ति **हरिदर्शनाय**-भगवद्दर्शनाय । **कियत्यातुरा**-कियत्युत्सुका । **श्रीराधासर्वेश्वरशरणः**-श्री आचार्यप्रवरः । **ध्रुवम्**-निश्चयेन । **अभिवदति**-निगदति यदियं भारतमाता **निष्ठुरा**-कठोरा । **नैव**-न । अपितु मधुरैवास्ति ॥९॥

भावार्थ--यह भारत-वसुधा कितनी मनोहर और विशाल है कि जहाँ पर विविध प्रकार के सन्तजन आनन्द लेते हैं और गायें सुख पूर्वक विचरण करती हैं। जहाँ पर ऋषि-मुनि वेद पढ़ते हैं। श्रीआचार्यप्रवर निश्चय पूर्वक कहते हैं कि यह भारतवसुधा निष्ठुर नहीं है, अपितु परम सरस और मधुर ही है ॥९॥

गङ्गा-कलिन्दतनया-सरयू-शतद्रु-
गोदावरीप्रभृतिमञ्जुसरित्प्रवाहैः ।

नानागिरीन्द्रहिमशैलवरैः सुरम्यं

वन्दे सदा रुचिरभारतवर्षदेशम् ।।१०।।

वैभवबोधिनी--गङ्गेति.....

गङ्गा-कलिन्दतनया-सरयू-शतद्रु-गोदावरी-प्रभृति-मञ्जु-सरित्प्रवाहैः-गङ्गा-यमुना-सरस्वती-सरयू-कृष्णा-कावेरी-गोदावरी-मन्दाकिनी-क्षिप्रा-फल्गु-चन्द्रभागा-गण्डकी-नर्मदा-वेत्रवती-चर्मण्वती-कोषी-ताप्ती-प्रभृति-परमपावन-सुभगनदीजलप्रवाहैः। **नानागिरीन्द्र-हिमशैलवरैः**-विविधैर्नगेन्द्रहिमगिरिश्रेष्ठैः । **सुरम्यम्**-अतिरमणीयम् । रुचिरभारतवर्षदेशम्-सुभगभारतदेशम् । **सदा**-सर्वदा । (अहम्) **वन्दे**-अभिवादये ।।१०।।

भावार्थ--गङ्गा-यमुना-सरयू-त्रिवेणी--(गङ्गा-यमुना-सरस्वती) गोदावरी-कृष्णा-कावेरी-मन्दाकिनी-क्षिप्रा-फल्गु-चन्द्रभागा-गण्डकी-नर्मदा-वेत्रवती-चर्मण्वती आदि दिव्य नदियों से तथा नानाविध पर्वत एवं पर्वतराज श्रेष्ठ हिमालय से युक्त परम सुरम्य सुन्दर भारतवर्ष की हम सदा ही वन्दना करते हैं ।।१०।।

दिव्यं सरित्पतितरङ्गमनोऽभिरामं

शास्त्रैः सदा निगदितं सुरलोकगीतम् ।

गोविप्रसाधुनिवहैरति-शोभमानं

वन्दे सदा रुचिरभारतवर्षदेशम् ।।११।।

वैभवबोधिनी--दिव्यमिति....

सरित्पतितरङ्गमनोऽभिरामम्-सिन्धुतरङ्गैरतिरम्यम् । **शास्त्रैः सदा निगदितम्**-नानाशास्त्रैः सदा प्रतिपादितम् । **सुरलोकगीतम्**-देववृन्दै र्गीतं देववृन्दै र्गीयमानम्-अथवा देवलोक-लोकान्तरैः सर्वदा गीयमानम् । **गो-विप्रसाधु-निवहैः**-गो-ब्राह्मण साधु-समूहैः । **अतिशोभमानम्**-अति-प्रकाशमानम् । **दिव्यम्**-दिव्यस्वरूपम् । **रुचिरभारतवर्षदेशम्**-परममनोहर-भारतदेशम् । **सदा**-सर्वदा । (अहम्) **वन्दे**-अभिवादये ।।११।।

भावार्थ--समुद्र की उत्ताल तरङ्गों से परम मनोहर वेद पुराणादि शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित देवताओं द्वारा प्रशंसित गो-ब्राह्मण साधुजनों से शोभायमान परम दिव्य परम मनोहर भारत देश की हम सदा ही वन्दना करते हैं ॥११॥

अत्यद्भुतानि विपिनानि मनोहराणि
जम्बू-कदम्ब-कदलीतरुशोभितानि ।
आम्रावलीविविधवृक्षयुतानि यत्र
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥१२॥

वैभवबोधिनी--अत्यद्भुतानीति.....

यत्र-यस्मिन् देशे । **आम्रावलीविविधवृक्षयुतानि**-रसालफल-युक्तनानाविधद्रुमसहितानि । तथा **जम्बू-कदम्ब-कदलीतरुशोभितानि**-जम्बू-कदम्ब-कदली-इत्याख्यैः सुप्रसिद्धैः पादपैः परिलसितानि । **मनोहराणि**-चित्ताकर्षकाणि । **अत्यद्भुतानि**-अतिविचित्राणि । **विपिनानि**-वनोपवनानि । **सन्ति तं**-एतादृशं भारतं । **रुचिरभारतवर्षदेशम्**-परममनोरमभारतवर्षराष्ट्रम् । (अहम्) **वन्दे**- नमामि ॥१२॥

भावार्थ--जिस प्रदेश में मधुरातिमधुर सुन्दर फलों से युक्त आम, जामुन, कदम्ब, केला आदि के वृक्षों से शोभायमान परम मनोहर अद्भुत वन-उपवन (जङ्गल-बाग-बगीचे) हैं ऐसे उस सुन्दर भारत प्रदेश की हम वन्दना करते हैं ॥१२॥

नित्यं मृगाः खगगणाः करिणस्तुरङ्गा-
गावः प्रसन्नमनसा विचरन्ति यत्र ।
तं सुन्दरं निखिलराष्ट्रनरेन्द्ररूपं
वन्दे सदा रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥१३॥

वैभवबोधिनी--नित्यमिति.....

मृगाः-मृगयूथपाः । **खगगणाः**-पक्षिसमूहाः । **करिणः**-हस्तिनः ।

तुरङ्गा-अश्वाः । गाव-गोसमूहाः । यत्र-भारते । प्रसन्नमनसा-हर्षितचेतसा। नित्यम्-प्रतिदिनम् । विचरन्ति-परिभ्रमन्ति । निखिलराष्ट्रनरेन्द्ररूपम्-सकलराष्ट्रभूपस्वरूपम् । सुन्दरम्-मनोहरम् । तं रुचिरभारतवर्षदेशम्-तं मञ्जुलभारतराष्ट्रम् । सदा-सर्वदा । वन्दे-नमस्करोमि ॥१३॥

भावार्थ--जहाँ मृग-यूथ पक्षीगण हाथी और घोड़े तथा गायें प्रसन्न मन होकर नित्य विचरण करते हैं, समस्त राष्ट्रों के गुरु स्वरूप उस परम मनोहर सुन्दर भारत राष्ट्र की हम सदा वन्दना करते हैं ॥१२॥

गुञ्जति यत्र निगमागमदिव्यमन्त्रा-
वर्षन्ति मेघनिकराः परितोयथेष्टम् ।
हृष्यन्ति देशकृषकाः कृषिकार्यदक्षा-
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ।।१४।।

वैभवबोधिनी--गुञ्जन्तीति.....

यत्र-यस्मिन् स्थले । **निगमागमदिव्यमन्त्राः**-वेदपुराणादिदिव्य-मन्त्राः । **गुञ्जन्ति**-गुञ्जायमाना भवन्ति । **मेघनिकराः**- वारिदसमूहाः । **परितः**-सर्वतः । **यथेष्टम्**-पर्याप्तम् । **वर्षन्ति**-जलप्रदानं कुर्वन्ति । **कृषिकार्य-दक्षाः**-कृषिकार्यकुशलाः । **देशकृषकाः**-स्वदेशकृषकजनाः । **हृष्यन्ति**-नन्दन्ति, अर्थात् हर्षमनुभवन्ति । **तं**-एतादृशम् । **रुचिरभारतवर्षदेशम्**-परमसुरम्यभारतदेशम् । **सदा**-नित्यम् । **वन्दे**-अभिवादये ॥१४॥

भावार्थ--जिस भारत में विद्वज्जनों द्वारा वेद-पुराणादि के मन्त्र गुञ्जरित होते हैं, मेघ समूह चारों ओर यथेष्ट वर्षा करते हैं और कृषि कुशल देश के किसान हर्षित हो रहे हैं उस अतीव मनोहर भारतवर्ष की हम नित्य वन्दना करते हैं ॥१४॥

स्वाध्यायदत्तहृदयाः सुधियः सुविज्ञाः
शिक्षाप्रदाननिरताः कुशलाः प्रबुद्धाः ।
अध्यापयन्ति वटुकान्बहुलं हि यत्र
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ।।१५।।

वैभवबोधिनी--स्वाध्यायदत्तहृदया इति.....

यत्र--यस्मिन् भारते । **स्वाध्यायदत्तहृदयाः**-वेद-वेदाङ्गशास्त्राध्ययनदत्तचित्ताः । **शिक्षाप्रदानरताः**-विद्याप्रदाननिरताः । **सुविज्ञाः**-विशेषज्ञाः । **सुधियः**-विद्वान्सः । **कुशलाः**-शास्त्रचिन्तनपठनपाठनादि कार्यकुशलाः । **प्रबुद्धाः**-प्रौढ़ाः । **हि**-इति निश्चयेन । **बहुलम्**-विशेषरूपेण। **वटुकान्**-लघु-लघु-बालकान् किंवा विनयशील वयस्कछात्रान् । **अध्यापयन्ति**-शास्त्राध्यापनं प्रकुर्वन्ति । **तं**-एतादृशम् । **रुचिरभारतवर्षदेशम्**-सुन्दरभारतदेशम् । **वन्दे**-नमामि ॥१५॥

भावार्थ--जहाँ स्वाध्याय में दत्तचित्त होकर लगे हुए शिक्षा प्रदान निरत परम चतुर प्रौढ़ सुविज्ञ विद्वानों द्वारा अल्पवयस्क किंवा उच्चवयस्क छात्र समूह शास्त्रों का अध्ययन कर रहे हैं ऐसे उस सुन्दर भारत धरा की हम वन्दना करते हैं ॥१५॥

अध्यात्मधर्मपथतत्त्वविदो विदन्त-
आचार्यवर्यचरणाः सकलाः प्रसिद्धाः ।
ज्ञानं प्रजार्थमतुलं ददतीति यत्र
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥१६॥

वैभवबोधिनी--अध्यात्मधर्मेति.....

अध्यात्मधर्मपथतत्त्वविदः-अध्यात्मधर्ममार्गतत्त्वज्ञा अर्थात् आत्म-परमात्मतत्त्वज्ञानविषयकमर्मज्ञाः । **विदन्तः**-विद्वान्सः । सकलाः-अखिलाः । **प्रसिद्धाः**-विख्याताः । **आचार्यवर्यचरणाः**-देशिकवर्य्याः । **प्रजार्थम्**-जनतार्थम् । **अतुलम्**-असीमम् सीमारहितम् । **ज्ञानम्**-दिव्योपदेशम्। **ददति**-प्रददति । **यत्र**-यस्मिन् स्थाने । **तम्**-एतादृशम् । **रुचिरभारतवर्षदेशम्**-सुन्दरभारतवर्षदेशम् । **वन्दे**-अभिवादये ॥१६॥

भावार्थ--जिस स्थान पर अध्यात्मधर्म-पथप्रदर्शक सभी परम विख्यात विभिन्न सम्प्रदाय के आचार्यचरणों द्वारा जागतिक जीवों को अतुलित ज्ञान दिया जाता है उस परम सुन्दर भारतदेश की हम वन्दना करते हैं ॥१६॥

शान्तिं सुखं भुवि तनोति यथा जनेभ्यः
सत्प्रेरणामपि करोति तथैव नित्यम् ।
एतादृशं निखिलदानपरं प्रसिद्धं
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ।।१७।।

वैभवबोधिनी--शान्तिमिति.....

यथा-येन प्रकारेण । **जनेभ्यः**-जनसाधारणेभ्यः । **भुवि**-पृथिव्याम्। **सुखम्**-आनन्दम् । **शान्तिम्**-आत्मतुष्टिम् । **तनोति**-वितनोति, अर्थात् विस्तारयति । **तथा**-तेनैव प्रकारेण । **नित्यम्**-प्रतिदिनम् । **सम्प्रेरणामपि**-सन्मार्गदर्शनमपि । **करोति**-विदधाति । **निखिलदानपरम्**-सर्वस्वदान-परायणम् । **प्रसिद्धम्**-विख्यातम् । **तम्**-एतादृशम् । **रुचिरभारतवर्षदेशम्**-सुन्दरभारतस्वदेशम् । **वन्दे**-वन्दनां करोमि ।।१७।।

भावार्थ--जैसे पृथ्वीतल पर समस्त विश्व के सभी जनों के लिये शान्ति और सुख का विस्तार करता है ठीक वैसे ही ''एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः । स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।।'' मनु-स्मृति वचनानुसार नित्य सत्प्रेरणा (मार्ग-दर्शन) भी करता है । ऐसे सर्वस्व दान परायण सुप्रसिद्ध उस सुन्दर भारत भूमण्डल की हम वन्दना करते हैं।।१७।।

क्रीडन्ति यत्र लघुबालकबालिकाश्च
गायन्ति गायकवराश्चतुराः सुगीतम् ।
नृत्यन्ति नृत्यकुशलाः खलु नर्तकाश्च
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ।।१८।।

वैभवबोधिनी--क्रीडन्तीति.....

यत्र-यस्मिन् भारते । **लघुबालकबालिकाश्च**-अल्पवयस्क-बालकबालिकाश्च । **क्रीडन्ति**-क्रीड़ां कुर्वन्ति । **चतुराः**-कुशलाः । **गायकवराः**-गायकगणेषु वराः श्रेष्ठा इत्यर्थ । **सुगीतम्**-मधुरगायनम् । **गायन्ति**-शास्त्रीयपरम्परानुसारेण गानं कुर्वन्ति । **खलु**-इति निश्चयेन । **नृत्यकुशलाः**-

नृत्यकला-दक्षाः। **नर्तकाश्च**-नृत्यकर्तारः। **नृत्यन्ति**-शास्त्रीयनृत्यं कुर्वन्ति। ईदृशम् **तं रुचिर-भारतवर्षदेशम्**-(अहम्) **वन्दे**-नमामीत्यर्थः ॥१८॥

भावार्थ--जहाँ पर छोटे-छोटे बालक बालिकायें आदर्श रूप ललित क्रीड़ायें करते हैं और चतुर श्रेष्ठ गायक जन सुन्दर शास्त्रीय गान करते हैं तथा नृत्य कुशल नर्तक शास्त्रपद्धति के अनुरूप नृत्य करते हैं ऐसे उस सुन्दर भारत को हम नमन करते हैं ॥१८॥

युध्यन्त आशु नववीरवरा बलिष्ठाः
शत्रूञ्जयन्ति नितरां समरे प्रवीणाः ।
नानाऽस्त्रशस्त्रकुशलाश्च भजन्ति राष्ट्रं
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥१९॥

वैभवबोधिनी--युध्यन्त-इति.....

(यत्र) **समरे**-आहवे-रणाङ्गणे वा । **प्रवीणाः**-चतुराः । **बलिष्ठाः**-बलवन्तः । **नववीरवराः**-नूतनवीरश्रेष्ठाः । **आशु**-झटिति । **युध्यन्ते**-समरं कुर्वन्ति । **शत्रून्**-अरीन् । **जयन्ति**-विजयन्ते । **नानाऽस्त्रशस्त्रकुशलाः**-विविधशस्त्रास्त्रचतुराः । **नितराम्**-सततम् । **राष्ट्रम्**-स्वदेशम् । **भजन्ति**-सेवन्ते । इत्थंभूतं **तं रुचिरभारतवर्षदेशम्**- **वन्दे**-नमस्करोमि ॥१९॥

भावार्थ--जिस भारत की रम्य धरा पर युद्ध में प्रवीण बलवान् नवयुवक श्रेष्ठ वीर शत्रुगणों को शीघ्र ही पराजित कर देते हैं, वे शस्त्रास्त्र सञ्चालन करने में अति कुशल निरन्तर राष्ट्र (देश) की सेवा करते हैं ऐसे उस सुरमणीय भारत धरा की हम वन्दना करते हैं ॥१९॥

कुर्वन्ति यत्र खलु शासनसुव्यवस्थां
नेतार उत्तमगुणा जगति प्रसिद्धाः ।
शान्तिप्रियाः सुमतयः कुशला वरिष्ठा
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥२०॥

वैभवबोधिनी--कुर्वन्तीति.....

यत्र-भारतवर्षे । **खलु**-निश्चयेन । **शान्तिप्रियाः**-शान्तिप्रेरकाः। **सुमतयः**-सुबुद्धियुक्ताः, अर्थात् मेधाविनः । **कुशलाः**-दक्षाः । **वरिष्ठाः**-

श्रेष्ठाः । जगति-संसारे । **प्रसिद्धाः**-विख्याताः । **उत्तमगुणाः**-श्रेष्ठगुणाः । **नेतारः**-देशसेवकाः । **शासनसुव्यवस्थाम्**-देशसञ्चालनसुव्यवस्थाम् । **कुर्वन्ति**-विदधति । **तं**-एतादृशम् । **रुचिरभारतवर्षदेशम्**-सुन्दरतम-भारतदेशम् । **वन्दे**-नमामीत्यर्थः ॥२०॥

भावार्थ--जिस भारत में शान्तिप्रिय बुद्धिमान् कुशल और श्रेष्ठ तथा भारत विख्यात उत्तम गुणों वाले प्रशासनकार्यकुशल देशभक्त सुविज्ञ प्रशासक शासन की सुव्यवस्था करते हैं। ऐसे परम सुन्दरतम भारतदेश की हम वन्दना करते हैं ॥२०॥

नार्यस्तु धर्मपरिपालनदत्तचित्ता
गोविन्दभक्तिनिरताश्च पतिव्रतास्ताः ।
वीराङ्गना अतिशुभा निवसन्ति यत्र
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥२१॥

वैभवबोधिनी--नार्यस्त्विवति.....

यत्र-भारते । **धर्मपरिपालनदत्तचित्ताः**-धर्माचरणसंलग्नमनस्काः । **च**-पुनः । **श्रीसर्वेश्वरगोविन्दभक्तिनिरता**-भगवद्भक्तिसंलग्नाः । **पतिव्रताः**-पातिव्रतधर्मपरायणाः । **अतिशुभाः**-अतिश्रेष्ठाः । **ताः**-एतादृश्यः । **वीराङ्गनाः**-शौर्यशालिन्यः । **नार्यः**-स्त्रियः । **निवसन्ति**-वासं कुर्वन्ति । **तम्**-ईदृशम् । **रुचिरभारतवर्षदेशम्**-मनोरमभारतदेशम् । **वन्दे**-अभिवादये ॥२१॥

भावार्थ--धर्म परिपालन में अभिरत है मन जिनका सर्वेश्वर श्रीगोविन्द भक्ति परायणा पतिव्रता और वीराङ्गना मङ्गल स्वरूपा नारियाँ जहाँ निवास करती हैं, ऐसे उस परम सुन्दर भारतदेश की हम वन्दना करते हैं ॥२१॥

वेदाः पुराण-नय-तर्कपरा अमूल्याः
सूत्र-स्मृतिप्रभृतयो रसबोधकाश्च ।
ग्रन्था इमे जगति शब्दपरा हि यत्र
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥२२॥

वैभवबोधिनी--वेदाश्चेति.....

यत्र-यस्मिन् देशे । **वेदाः**-निगमाः श्रुतयश्च । **पुराण-नयतर्कपराः सूत्र-स्मृतिप्रभृतयः**-अष्टादशपुराणादिन्यायब्रह्मसूत्रमन्वादिधर्मशास्त्रप्रभृतयः। **रसबोधकाश्च**-परमरसानन्दकर्तव्यज्ञानप्रदातारश्च । **इमे**-एते । **जगति**-संसारे । **हि**-इति निश्चयेन । **अमूल्याः**-महत्वपूर्णाः । **शब्दपराः**-वाङ्मय-स्वरूपाः । **ग्रन्थाः**-शास्त्राणि सन्ति । **ईदृशं तं रुचिरभारतवर्षदेशम्**-सुन्दरं भारतम् । **वन्दे**-नमामि ॥२२॥

भावार्थ--जिस देश में वेद-पुराण महाभारत नीति शास्त्र और न्याय शास्त्र तथा वादरायण ब्रह्मसूत्र पातञ्जल योगसूत्र, नारदभक्तिसूत्र नारदपञ्चरात्र एवं मन्वादि धर्मशास्त्र वाङ्मयस्वरूप ग्रन्थ विद्यमान हैं, ऐसे उस मनोहर भारतदेश को हम नमस्कार करते हैं ॥२२॥

देवालया अपि सुभव्यतमा मनोज्ञाः
श्रेष्ठाः पुरातनतमाः शुभदर्शनीयाः ।
सन्ति प्रिया हरिकथा रसदाश्च यत्र
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ॥२३॥

वैभवबोधिनी--देवालया-इति.....

यत्र-यस्मिन् देशे । **प्रियाः**-सुन्दरतमाः । **हरिकथाः**-भगवत्कथाः। **रसदाश्च**-भगवदीयरसप्रदाः । **शुभदर्शनीयाः**-मङ्गलमयदर्शनीयाः । **पुरातनतमाः**-अतिप्राचीनाः । **श्रेष्ठाः**-अत्युत्तमसुष्ठुतमाः । **मनोज्ञाः**-मनोरमाः चेतोहराः । **सुभव्यतमाः**-अतिविशालाः । **देवालया अतिः**-श्रीहरि-मन्दिराणि-अपि । **सन्ति**-विद्यन्ते । **तम्**-तमेव । **रुचिरभारतवर्षदेशम्**-सुन्दरतमं भारतस्वदेशम् । **वन्दे**-अभिवादये ॥२३॥

भावार्थ--जिस भारतदेश में मनोरम हरिकथा रस प्रदान करने वाले मङ्गलमय दर्शनों वाले अति प्राचीन श्रेष्ठ और मन को मुग्ध करने वाले बड़े-बड़े विशाल देव मन्दिर भी हैं, ऐसे उस परम पवित्र भारत की हम वन्दना करते हैं ॥२३॥

तीर्थानि दिव्य विविधानि सुमञ्जुलानि
धामानि सुन्दरतमानि च सन्ति यत्र ।
पापप्रणाशनपराण्यतिपावनानि
वन्दे च तं रुचिरभारतवर्षदेशम् ।।२४।।

वैभवबोधिनी--तीर्थानीति.....

यत्र-यस्मिन् देशे । **पापप्रणाशनपराणि**-अघौघप्रशमनपराणि । **अतिपावनानि**-अतिपवित्राणि । **सुन्दरतमानि**-मनोहराणि । **धामानि**-जगन्नाथ-रामेश्वर-द्वारावती-बदरीनाथेति स्थलानि । **च**-पुनः । **सुमञ्जुलानि**-अतिमनोहराणि । **दिव्यविविधानि**-श्रेष्ठतमनानाप्रकाराणि । **तीर्थानि**-तीर्थस्थलानि । **सन्ति**-विद्यन्ते । **तं**-एवंविधं । **रुचिरभारतवर्षदेशम्**-परमसुन्दरभारतदेशम् । (अहम्) **वन्दे**-नमस्करोमि ।।२४।।

भावार्थ--जिस पुण्यमय देश में समस्त पापों को परिशमन करने वाले परम पवित्र सुन्दरतम श्रीजगन्नाथ, रामेश्वर, द्वारका, श्रीबदरीनाथ आदि धाम तथा अति मनोहर विविध दिव्य तीर्थ स्थल हैं, ऐसे उस परम पवित्र भारत राष्ट्र की हम वन्दना करते हैं ।।२४।।

प्राच्यां जगन्नाथपुरी ह्यवाच्यां
रामेश्वरो द्वारवती प्रतीच्याम् ।
यत्रोत्तर श्रीबदरीविशाल-
स्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ।।२५।।

वैभवबोधिनी--प्राच्यामिति.....

प्राच्याम्-पूर्वदिशि । **जगन्नाथपुरी**-जगदीशनगरी । **हि**-तेनैव-प्रकारेण । **अवाच्याम्**-दक्षिणदिशि । **श्रीरामेश्वरः**-सेतुबन्ध-श्रीरामेश्वर-ज्योतिर्लिङ्गविशेषः । **प्रतीच्याम्**-पश्चिमदिशि । **द्वारवती**-द्वारका । **उत्तरे**-उत्तरदिशायाम् । **श्रीबदरीविशालः**-श्रीनर-नारायणधाम । **यत्र**-यस्मिन् भारते, एतानि चतुर्विधधामानि सन्ति । **तं**-एतादृशम् । **सुभव्यरूपं**-परम-विशालम् । **भारतम्**-भारतदेशम् । **नौमि**-नमामि ।।२५।।

भावार्थ--जिस भारतदेश में पूर्व की ओर श्रीजगन्नाथपुरी दक्षिण की ओर श्रीसेतुबन्ध रामेश्वर, पश्चिम दिशा की ओर श्रीद्वारका और उत्तर दिशा में श्रीबदरीनारायण हैं ऐसे उस परम विशाल प्रदेश श्रीभारतवर्ष को हम प्रणाम करते हैं ॥२५॥

हरेरयोध्या मथुरा च माया
काशी च काञ्ची फलदा ह्यवन्ती ।
द्वारावती यत्र लसन्ति पुर्य-
स्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२६॥

वैभवबोधिनी--हरेरिति.....

यत्र-यस्मिन् प्रदेशे । **अयोध्या, मथुरा, माया**-हरिद्वारम् । **काशी, काञ्ची, अवन्ती**-उज्जयनी । **द्वारावती** । **फलदाः**-फलप्रदाः । **हरेः**-भगवतः । **पुर्यः**-सप्तनगर्यः । **लसन्ति**-परिशोभन्ते । **तं**-एतादृशम् । **सुभव्यरूपम् भारतम्**-सविस्तीर्णरूपम् भारतदेशम् । **नौमि**-नमामि ॥२६॥

भावार्थ--जिस भारतदेश में अयोध्या, मथुरा, माया, (हरिद्वार), काशी, काञ्ची, अवन्तिका (उज्जैन) और द्वारका शुभ फल प्राप्त कराने वाली भगवान् की ये सात पुरी हैं ऐसे उस परम विशाल भारतवर्ष को हम प्रणाम करते हैं ॥२६॥

श्रीद्वादशेशाः शिवलिङ्गरूपा
ज्योतिः स्वरूपा विलसन्ति यत्र ।
सर्वार्थसिद्धिप्रियदा मनोज्ञा-
स्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२७॥

वैभवबोधिनी--श्रीद्वादशेशा-इति.....

यत्र-यस्मिन् भारते । **सर्वार्थसिद्धिप्रियदाः**-सर्वार्थसिद्धिप्रदातारः । **मनोज्ञाः**-चेतोहराः । **श्रीद्वादशेशाः**-द्वादशशिवद्योतकाः । **शिवलिंगरूपाः**-शिवलिङ्गस्वरूपाः । **ज्योतिः स्वरूपाः**-ज्योतिर्लिङ्गाः । **विलसन्ति**-

सुशोभन्ते । **तम्**-एतादृशम् । **सुभव्यरूपम्-भारतम्**-अतिविस्तृतभारतवर्षम्। **नौमि**-प्रणमामि ॥२७॥

भावार्थ--जिस भव्य विशाल भारत में सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ओंकारेश्वर, वैद्यनाथ, भीमशंकर, रामेश्वर, नागेश्वर, विश्वनाथ, त्र्यम्बकेश्वर, केदारनाथ और घुश्मेश्वर नाम वाले सर्वार्थसिद्धिप्रद परम मनोहर द्वादश शिव स्वरूप ज्योतिर्लिङ्ग हैं ऐसे उस परम विशाल भारतवर्ष को हम प्रणाम करते हैं ॥२७॥

वृन्दावनं दिव्यवनं हरेश्च
लीलाविहारस्थलमस्ति यत्र ।
गोवर्द्धनो गोधनमञ्जुधाम
तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२८॥

वैभवबोधिनी--वृन्दावनमिति.....

यत्र-यस्मिन् भारते । हरेः-भगवतोयुगलात्मकस्य श्रीराधाकृष्ण-चन्द्रस्य । **दिव्यवनम्**-सच्चिदान्दमयं विपिनम् । **श्रीवृन्दावनम्**-श्रीवृन्दा-रण्यम् । **लीलाविहारस्थलम्**-क्रीडाविहारस्थलम् । **च**-पुनः । **गोधन-मञ्जुधाम**-गोधनमनोहरधाम । **श्रीगोवर्धनः**-श्रीगिरिराज-गोवर्धनोऽस्ति । **तं**-एतादृशम् । **सुभव्यरूपम्**-अतिविस्तृतम् । **भारतम्**-भारतदेशम् । **नौमि**-प्रणमामि ॥२८॥

भावार्थ--जिस भारतदेश में सर्वेश्वर श्रीहरि (भगवान-श्रीराधा-कृष्ण) का लीला विहार स्थल परम दिव्य श्रीवृन्दावन धाम और गोधन का मनोहर धाम श्रीगोवर्धन है ऐसे उस परम विशाल भारत देश को हम प्रणाम करते हैं ॥२८॥

श्रीपुष्करं कोटिसुतीर्थतीर्थं
प्रयागराजोऽद्भुतचित्रकूटः ।
साक्षादयोध्या प्रभुधाम यत्र
तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२९॥

भावार्थ--जिस भारतदेश में पूर्व की ओर श्रीजगन्नाथपुरी दक्षिण की ओर श्रीसेतुबन्ध रामेश्वर, पश्चिम दिशा की ओर श्रीद्वारका और उत्तर दिशा में श्रीबदरीनारायण हैं ऐसे उस परम विशाल प्रदेश श्रीभारतवर्ष को हम प्रणाम करते हैं ॥२५॥

हरेरयोध्या मथुरा च माया
काशी च काञ्ची फलदा ह्यवन्ती ।
द्वारावती यत्र लसन्ति पुर्य-
स्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२६॥

वैभवबोधिनी--हरेरिति.....

यत्र-यस्मिन् प्रदेशे । **अयोध्या, मथुरा, माया**-हरिद्वारम् । **काशी, काञ्ची, अवन्ती**-उज्जयनी । **द्वारावती** । **फलदाः**-फलप्रदाः । **हरेः**-भगवतः। **पुर्यः**-सप्तनगर्यः । **लसन्ति**-परिशोभन्ते । **तं**-एतादृशम् । **सुभव्यरूपम् भारतम्**-सविस्तीर्णरूपम् भारतदेशम् । **नौमि**-नमामि ॥२६॥

भावार्थ--जिस भारतदेश में अयोध्या, मथुरा, माया, (हरिद्वार), काशी, काञ्ची, अवन्तिका (उज्जैन) और द्वारका शुभ फल प्राप्त कराने वाली भगवान् की ये सात पुरी हैं ऐसे उस परम विशाल भारतवर्ष को हम प्रणाम करते हैं ॥२६॥

श्रीद्वादशेशाः शिवलिङ्गरूपा
ज्योतिः स्वरूपा विलसन्ति यत्र ।
सर्वार्थसिद्धिप्रियदा मनोज्ञा-
स्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२७॥

वैभवबोधिनी--श्रीद्वादशेशा-इति.....

यत्र-यस्मिन् भारते । **सर्वार्थसिद्धिप्रियदाः**-सर्वार्थसिद्धिप्रदातारः। **मनोज्ञाः**-चेतोहराः । **श्रीद्वादशेशाः**-द्वादशशिवद्योतकाः । **शिवलिंगरूपाः**-शिवलिङ्गस्वरूपाः । **ज्योतिः स्वरूपाः**-ज्योतिर्लिङ्गाः । **विलसन्ति**-

सुशोभन्ते । **तम्**-एतादृशम् । **सुभव्यरूपम्**-**भारतम्**-अतिविस्तृतभारतवर्षम्। **नौमि**-प्रणमामि ॥२७॥

भावार्थ--जिस भव्य विशाल भारत में सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ओंकारेश्वर, वैद्यनाथ, भीमशंकर, रामेश्वर, नागेश्वर, विश्वनाथ, त्र्यम्बकेश्वर, केदारनाथ और घुश्मेश्वर नाम वाले सर्वार्थसिद्धिप्रद परम मनोहर द्वादश शिव स्वरूप ज्योतिर्लिङ्ग हैं ऐसे उस परम विशाल भारतवर्ष को हम प्रणाम करते हैं ॥२७॥

वृन्दावनं दिव्यवनं हरेश्च
लीलाविहारस्थलमस्ति यत्र ।
गोवर्द्धनो गोधनमञ्जुधाम
तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२८॥

वैभवबोधिनी--वृन्दावनमिति.....

यत्र-यस्मिन् भारते । हरेः-भगवतोयुगलात्मकस्य श्रीराधाकृष्ण-चन्द्रस्य । **दिव्यवनम्**-सच्चिदान्दमयं विपिनम् । **श्रीवृन्दावनम्**-श्रीवृन्दा-रण्यम् । **लीलाविहारस्थलम्**-क्रीडाविहारस्थलम् । **च**-पुनः । **गोधन-मञ्जुधाम**-गोधनमनोहरधाम । **श्रीगोवर्धनः**-श्रीगिरिराज-गोवर्धनोऽस्ति । **तं**-एतादृशम् । **सुभव्यरूपम्**-अतिविस्तृतम् । **भारतम्**-भारतदेशम् । **नौमि**-प्रणमामि ॥२८॥

भावार्थ--जिस भारतदेश में सर्वेश्वर श्रीहरि (भगवान-श्रीराधा-कृष्ण) का लीला विहार स्थल परम दिव्य श्रीवृन्दावन धाम और गोधन का मनोहर धाम श्रीगोवर्धन है ऐसे उस परम विशाल भारत देश को हम प्रणाम करते हैं ॥२८॥

श्रीपुष्करं कोटिसुतीर्थतीर्थं
प्रयागराजोऽद्भुतचित्रकूटः ।
साक्षादयोध्या प्रभुधाम यत्र
तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥२९॥

वैभवबोधिनी--श्रीपुष्करमिति.....

यत्र-यस्मिन् भारते । **कोटिसुतीर्थतीर्थम्**-यावन्निखिलभुवनतीर्थगुरुपदप्रतिष्ठितम् जगत्सृष्टिकारकब्रह्मदेवनिवासस्थलं, श्रीहंसभगवतोऽवतारस्थलञ्च अर्थात् सकलतीर्थगुरुं श्रीपुष्करम् । तथा च **प्रयागराजः**-गङ्गा-यमुना-सरस्वती-त्रिवेणीसंगमरूपः । **अद्भुतचित्रकुटः**-अतिविचित्रोऽतिसुरम्यचित्रकूटेति-विख्यातः तीर्थविशेषः, यत्र हिनिखिलब्रह्माण्डनायक-निखिलजगन्नियामक-राजीवलोचन-नयनाभिरामस्य भगवतः श्रीरामचन्द्रस्य निवास आसीत्। अतएव विलक्षणः । पुनश्च यत्रैव **प्रभुधाम**-श्रीरामचन्द्रस्य जन्मस्थली । **साक्षादयोध्या**-प्रत्यक्षरूपेण समवस्थितादिव्यावतरणवसुधाऽयोध्यापुरी । **तम्**-एतादृशम् । **सुभव्यरूपम्**-अतिविशालम् । **भारतम्**-भारतदेशम् । **नौमि**-प्रणमामि ॥२९॥

भावार्थ--जिस भारत में कोटि-कोटि तीर्थों को भी पावन बनाने वाला अर्थात् सकल तीर्थगुरु निखिलजगत्सृष्टा श्रीब्रह्मदेव की दिव्य निवासवसुधा श्रीहंस भगवान् की प्राकट्य स्थली श्रीपुष्करराज और तीर्थराज श्रीप्रयागराज तथा अतीव रमणीय चित्रकूट है, जहाँ वनवास काल में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने १२ वर्ष निवास किया था । इसी प्रकार भगवान् श्रीराम की अवतार स्थली श्रीअयोध्यापुरी भी सुशोभित है ऐसे उस परम विशाल भारतदेश को हम प्रणाम करते हैं॥२९॥

देवैरुपास्यं मुनिभिश्च सेव्यं
धीरैः समीड्यं कविभिः सुगीतम् ।
वीरै र्वरेण्यं भुवने सुरम्यं
श्रीभारतं नौमि मुकुन्दधाम ॥३०॥

वैभवबोधिनी--देवैरूपास्यमिति.....

देवैरुपास्यम्-सुरवृन्दैरुपास्यम्। **मुनिभिश्च**-ऋषिभिश्च । **सेव्यम्**-उपास्यम् । **धीरैः**-धीर पुरुषैः । **समीड्यम्**-संस्तुत्यम् । **कविभिः**-कविजनैः। **सुगीतम्**-सुष्ठुप्रकारेण प्रगीतम् । **वीरैः**-भटैः, वीरपुरुषैः । **वरेण्यम्**-वरणीयम्।

भुवने-लोके । **सुरम्यम्**-सुरमणीयम् । **मुकुन्दधाम**-मुकुं मोक्षं ददातीति मुकुन्दस्तस्य मुकुन्दस्य धाम मुकुन्दधाम मुकुन्दनिवास इति तात्पर्यार्थः । **श्रीभारतम्**-श्रीभारतदेशम् । **नौमि**-नमस्करोमि ॥३०॥

भावार्थ--देवताओं द्वारा उपासनीय, ऋषि-मुनियों द्वारा परिसेव्य, धीरपुरुषों द्वारा स्तुति करने योग्य कविजनों द्वारा गीयमान, वीरपुरुषों द्वारा वरण करने योग्य इस समग्र लोक में अति रमणीय भगवद्धाम रूप ऐसे श्रीभारत को हम नमस्कार करते हैं ॥३०॥

श्रीरामचन्द्रप्रभुराविरासी-
न्नयेन यत्रोत्तमदिव्यभूमौ ।
संस्थापितो येन हि लोकधर्म-
स्तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥३१॥

वैभवबोधिनी--श्रीरामचन्द्रप्रभुरिति.....

यत्रोत्तमदिव्यभूमौ-यत्रोत्तमदिव्यावनौ । **श्रीरामचन्द्रप्रभुराविरासीत्**-श्रीरामचन्द्रप्रभुः प्रादुर्बभूव । **येन**-श्रीरामभद्रेण । **हि**-इति निश्चयेन । **नयेन**-नीतिपूर्वकम् । **लोकधर्मः**-वेदादिशास्त्रप्रतिपादितलोकाचारधर्मः । **संस्थापितः**-प्रतिष्ठापितः । **सुभव्यरूपम्**-अतिविशालरूपम् । **तं**-एतत्प्रकारकम् । **भारतम्**-भारतवर्षम् । **नौमि**-नमस्कारं करोमि ॥३१॥

भावार्थ--इस दिव्य धराधाम पर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम ने अवतार लेकर नीति पूर्वक वेदादि शास्त्र विहित लोक धर्म (मर्यादा) की संस्थापना की उस भव्य विशाल भारत को हम नमस्कार करते हैं ॥३१॥

गीतोपदिष्टा हरिणा च यत्र
कृष्णेन पूर्वं सदनुग्रहेण ।
धनञ्जयार्थं भुवने जनार्थं
तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥३२॥

वैभवबोधिनी--गीतोपदिष्टेति.....

यत्र-भारते । **पूर्वम्**-प्राक् । **हरिणा**-पुराणपुरुषोत्तमेन भगवता श्रीकृष्णेन । **धनञ्जयार्थम्**-अर्जुनार्थम् । **च**-पुनः । **भुवने**-लोके । **जनार्थम्**-जनकल्याणार्थम् । **सदनुग्रहेण**-परमदिव्यानुकम्पया । **गीतोपदिष्टा**-गीताज्ञानं संश्रावितम् । **तं**-एतादृशम् । संभव्यरूपम्-अतिविशालम् । **भारतम्**-भारत-वर्षम् । **नौमि**-नमनं करोमि ॥३२॥

भावार्थ--जिस भारत में सर्वेश्वर कृपामय श्रीहरि श्रीकृष्ण भगवान् ने परम कृपा कर महाभारत काल में अर्जुन तथा उसको निमित्त बनाकर सम्पूर्ण संसार के ही कल्याणर्थ श्रीगीताजी का परम दिव्य उपदेश किया था उस भव्य भारत को हम नमस्कार करते हैं ॥३२॥

देशाः समग्राः श्रुतिधर्मशिक्षां
सम्प्राप्नुवन्तीति महामहत्त्वम् ।
सत्प्रेरणां शास्त्रयुताञ्च यस्मात्
तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ।।३३।।

वैभवबोधिनी--देशा इति.....

समग्राः-सर्वे । **देशाः**-प्रदेशाः । **यस्मात्**-भारतात् । **श्रुतिधर्म-शिक्षाम्**-वैदिकधर्मशिक्षाम् । **संप्राप्नुवन्ति**-अभिलभन्ते । **च**-पुनः । **शास्त्रयुताम्**-शास्त्रसम्मताम् । **सत्प्रेरणाम्**-सत्परामर्शम् । **प्राप्नुवन्ति-इति महामहत्वम्**-आदर्शरूपमिदम् । एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः । स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः । इति मनुनाप्युक्तं मनुस्मृतौ । **सुभव्यरूपम्**-अतिविशालरूपम् । **तम्**-एतादृशम् । **भारतम्**-भारतवर्षम्। **नौमि**-नमस्करोमि ॥३३॥

भावार्थ--सभी देशों के निवासी इस भारत से शास्त्र सम्मत आध्यात्मिक धर्म की शिक्षा एवं सत्प्रेरणा प्राप्त करते हैं ऐसे उस विशालतम भारतवर्ष को हम नमस्कार करते हैं ॥३३॥

सदाऽऽश्रयो वै शरणागतानां
हिंसारतानां नहि यत्र पूजा ।
विमुक्तहिंसो लभते प्रतिष्ठां
तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ।।३४।।

वैभवबोधिनी--सदाश्रय इति.....

शरणागतानाम्-शरणागतजनानाम् । **सदाश्रयः**-आश्रयप्रदानं करोतीत्यर्थः, अर्थात् शरणदः । **यत्र**- भारते । **हिंसारतानाम्**-हिंसकजनानाम्। **पूजा**-प्रतिष्ठा । **नहि**-नैव वर्तते । **विमुक्तहिंसः**-हिंसारहितः । **प्रतिष्ठाम्**-सन्मानम् । **लभते**-प्राप्नोति । **सुभव्यरूपम्**-वृहत्स्वरूपम् । **तम्**-एतादृशम्। **भारतम्**-भारतदेशम् । **नौमि**-नमामि ॥३४॥

भावार्थ--जिस भारतदेश में शरणागतज जनों को सदा ही आश्रय मिलता रहा है, हिंसक समुदाय का यहाँ सम्मान कथमपि नहीं, हिंसा रहित पुरुषों का ही यहाँ सम्मान होता है, ऐसे भारत को हम नमस्कार करते हैं॥३४॥

सन्तो गृहस्था वटवश्च छात्राः
संन्यासिनो वैष्णवसत्तमा वै ।
शुद्धा विरक्ता विचरन्ति यत्र
तं भारतं नौमि सुभव्यरूपम् ॥३५॥

वैभवबोधिनी--सन्त इति.....

सन्तः-साधुपुरुषाः । **गृहस्थाः**-गृहस्थजनाः । वटवः-ब्रह्मचारिणो लघुवयस्का बालकाः । **च**-पुनः । **छात्रा**-विद्यार्थिनः । **संन्यासिनः**-परिव्राजकाः । संन्यासिमहात्मानः । **वैष्णवसत्तमाः**-परमश्रेष्ठा वैष्णवजनाः। **शुद्धाः**-पवित्राः । **विरक्ताः**-संसारासक्तिरहिताः, अर्थात् विरक्तवैष्णवसन्तः। **यत्र**-यस्मिन् भारते । **विचरन्ति**-विहरन्ति किंवा परिभ्रमन्ति । **तं**-एतादृशम्। **सुभव्यरूपम्**-अति-विशालम्। **भारतम्**-भारतदेशम् । **नौमि**-नमामि ॥३५॥

भावार्थ--जिस भारत में शुद्ध स्वरूप अर्थात् पवित्रान्तःकरण सन्तजन, गृहस्थ, सन्यासी, लघुरूपात्मक अर्थात् बाल ब्रह्मचारी, छात्रसमूह, वैष्णवजन तथा विरक्त वैष्णव सन्त महापुरुष परिभ्रमण करते हैं, ऐसे उस भारतदेश को हम प्रणाम करते हैं ॥३५॥

अथ देवभारती वैभव वर्णनम्

वन्दे वरदां शुद्धां शारदाम् ।
निर्जरनिकरैरर्चितचरणां, चर्चितचन्दनहर्षितसुमुखाम् ॥
गुणगणनिलयां विमलां ललितां, सुरवागीशां हँसारूढाम् ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणः, श्रीदां सरसां वीणाहस्ताम् ॥३६॥

वैभवबोधिनी-वन्दे-इति.....

वरदाम्-वरप्रदात्रीम् । **शुद्धाम्**-शुद्धस्वरूपाम् । **शारदाम्**-सरस्वतीम्। **वन्दे**-अभिवादये। **श्रीदाम्**-लक्ष्मीप्रदाम्। **सरसाम्**-रससहिताम् अर्थात्-आनन्दरूपाम्। **वीणाहस्ताम्**-वीणाधारिणीम्। **गुणगणनिलयाम्**-गुणगणसन्निधानाम् । **विमलाम्**-निर्मलाम् । **ललिताम्**-सुन्दरतमाम् । **सुरवागीशाम्**-सुरवाण्यधिष्ठात्रीम् । **हँसारुढाम्**-हँसवाहिनीम् । **चर्चित-चन्दनहर्षितसुमुखाम्**-विलेपितचन्दनप्रमुदिताननाम् । **निर्जरनिकरैः**-देववृन्दैः । **अर्चितचरणाम्**-पूजितचरणाम् । ईदृशीं शुद्धां वरदां शारदाम् । **श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः**- । **वन्दे**-अभिवादये ॥३६॥

भावार्थ--लक्ष्मी प्रदाता सौम्य स्वरूपा, अपने हस्तकमल में वीणा धारण किये हुए गुणगणों की निधि, निर्मल, सुन्दर स्वरूपा, देववाणी की अधिष्ठात्री, हँसवाहिनी, चन्दनचर्चित सुन्दर मुखारविन्दवाली, देवगणों द्वारा संपूजित शुद्धस्वरूपा वरप्रदात्री देवी श्रीशारदा (श्रीसरस्वती) की आचार्यश्री अभिवन्दना करते हैं ॥३६॥

सुरभाषेयं हरिमुखगीता ।
विधि-भव-वृन्दारककलकण्ठै,-रनिशं स्वर्गे सम्परिपीता ॥
श्रुति-भावुक-बुधनिकरै र्मधुरं, चेतसि नितरां नित्यं नीता ।
राधासर्वेश्वरशरणेन, सानन्दं सा मनसाऽधीता ॥३७॥

वैभवबोधिनी--सुरभाषेयमिति.....

इयं सुरभाषा-इयं देववाणी । हरिमुखगीता-भगवद्मुखगीता । **विधि-भव-वृन्दारककलकण्ठै**-ब्रह्म-शिव-देववृन्दमधुरकण्ठैः । **अनिशम्**-निरन्तरम् । **स्वर्गे**-देवलोके । **सम्परिपीता**-सम्यक्प्रकारेणप्रपीता। **श्रुति-भावुक-बुध-निकरैः**-वेद-भावुकजन-विद्वद्वृन्दैः । **चेतसि**-मनसि। **नितराम्**-सततम् । **मधुरम्**-मधुरतापूर्वकम् । **नित्यम्**-प्रतिदिनम् **नीता**-प्रयुक्ता। राधासर्वेश्वरशरणेन-श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यवर्येण । **सा**-सुरभाषा । **मनसा**-चेतसा । **सानन्दम्**-आनन्दपूर्वकम् । **अधीता**-स्वाध्याय-रूपेण परिगृहीता ॥३७॥

भावार्थ--यह देववाणी भगवान् श्रीहरि के मुखारविन्द से गाई गई है। ब्रह्मा, शिव प्रभृति देववृन्दों के कलकण्ठों द्वारा स्वर्ग में दिनरात पान की जाती है अर्थात् परस्पर में इसी संस्कृत वाणी में वार्तालाप करते हैं । वेदादिशास्त्र तथा भावुकजन और विद्वानों के मधुर रूप से नित्य निरन्तर चित्त में समाई हुई है । श्रीआचार्यचरण द्वारा आनन्द पूर्वक व मन से अध्ययन की जाती है ॥३७॥

संस्कृतभाषाशास्त्रं गेयम् ।
यन्मननेन प्रचुरं पुण्यं, सम्भवति घ्रुवमित्यवधेयम् ।।
जीवनलक्ष्यं जनकर्तव्यं, श्रुतिविज्ञानं सम्यग्ज्ञेयम् ।
राधासर्वेश्वरशरणेन, सुरभाषाऽमृतमनिशं पेयम् ।।३८।।

वैभवबोधिनी--सस्कृतभाषेति.....

संस्कृतभाषाशास्त्रम्-स्वाध्यायरूपेण देववाणीशास्त्रम् । **गेयम्**-गातुं योग्यमिति गेयमर्थात् मननीयम् । यन्मननेन-यच्चिन्तनेन । **प्रचुरम्**-विपुलम् । **पुण्यम्**-सुकृतम् । **सम्भवति**-सञ्जायते । इति **ध्रुवम्**-निश्चय-मिति। **अवधेयम्**-ज्ञेयम् । **जीवनलक्ष्यम्**-जीवनोद्देश्यम् । **जनकर्तव्यम्**-मानवकर्तव्यम् । **श्रुतिविज्ञानम्**-वेदविज्ञानम् । **सम्यग्ज्ञेयम्**-सम्यक्प्रकारेण बोद्धव्यम् । **श्रीराधासर्वेश्वरशरणेन**-श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यचरणेन । **सुरभाषाऽमृतम्**-देवभाषापीयूषम् । **अनिशम्**-नित्यम् । **पेयम्**-पातुं योग्यं पेयमर्थात् स्वाध्यायरूपेण तदनुशीलनं कर्तव्यमिति ॥३८॥

भावार्थ--संस्कृत भाषा के शास्त्रों को जानना चाहिये जिसके मनन-चिन्तन से निश्चित ही पुण्य होता है यही जीवन का लक्ष्य और मानव का कर्तव्य हैं । श्रुतियों (वेदों) का अनन्त ज्ञान इनमें निहित है इसे भली प्रकार जान लेना उचित है । आचार्यश्रीचरणों एवं उत्तमजनों द्वारा देवभाषा रूप अमृत का सदा ही पान करना अभीष्ट है ॥३८॥

सर्वेश्वर ! सुखधाम ! नाथ ! मे, संस्कृतरुचिरस्ति ।
संस्कृतमनने संस्कृतवदने, संस्कृतवरणे संस्कृतशरणे,
चेतो नितरां भवतात्कृपया, मयाऽभिलाषोऽस्ति ।।
श्रुतिशास्त्रेषु मनुशास्त्रेषु, नयशास्त्रेषु रसशास्त्रेषु,
प्रगतिस्तीव्रा भवतादिति मेंप्रचुर - भावनाऽस्ति ।।
लेखनपटुता प्रवचनपटुता, कर्मणिपटुता सेवापटुता,
सततं माधव ! भवतादिह मे परम याचनाऽस्ति ।।
वचने मृदुता चेतसि रसता, स्वात्मनि वरता दृष्टौ समता,
राधासर्वेश्वरशरणस्य प्रबलकामनाऽस्ति ।।३९।।

वैभवबोधिनी--सर्वेश्वर इति.....

सर्वेश्वर ! सुखधाम ! नाथ !--हे सर्वेश्वर-सुखनिधे । प्रभो !। **मे**-मम । **संस्कृतरुचिः**-संस्कृतभाषायामिच्छा । **अस्ति**- वर्तते । **संस्कृत-मनने**-देववाणीसंस्कृतभाषाचिन्तने । **संस्कृतवदने**-सुरभारतीभाषणे । **संस्कृतवरणे**-देवभाषाग्रहणे । **संस्कृतशरणे**-संस्कृतसमाश्रयणे । **कृपया**-अनुग्रहेण । **मम**-मदीयम् । **चेतः**-मनः । **नितराम्**-निरन्तरम् । **भवतात्**-भूयात् । **अभिलाषा**-आकाङ्क्षा । **अस्ति**-वर्तते । **श्रुतिशास्त्रेषु**-वैदिक-शास्त्रेषु । **मनुशास्त्रेषु**-मन्वादिधर्मशास्त्रेषु । **नयशास्त्रेषु**-नीतिशास्त्रेषु किंवा न्यायदर्शनशास्त्रेषु। **रसशास्त्रेषु**-रसपरकग्रन्थेषु । **तीव्राप्रगतिः**-अमन्दा प्रगतिः । **भवतात्**-इति। **मे**-मम । **प्रचुर भावना**-अमितश्रद्धा । **अस्ति**-वर्तते । **लेखनपटुता**-लेखनचातुरी । **प्रवचनपटुता**-भाषणचातुरी । **कर्मणिपटुता**-सत्कर्मसम्पादने चातुरी । **सेवापटुता**-सेवाधर्मे चातुरी । **माधव !**--हे माधव । **सततम्**-

अनवरतम् । **भवतात्**-प्रभवतु । **इह**-अस्मिन् संसारे । **मे**-मम । **परम याचना**-महनीय अभ्यर्थना । **अस्ति**- वर्तते । **वचने मृदुता**-भाषणे मधुरता। **चेतसि रसता**-मनसि सरसता । **स्वात्मनि वरता**-निजात्मनि श्रेष्ठता । **दृष्टौसमता**-दर्शने समता । **राधासर्वेश्वरशरणस्य**-श्रीमदाचार्यचरणस्य । बलवती । **प्रबलकामना**-अतिशय अभिलाषा । अस्ति-वर्तते ॥३९॥

भावार्थ--हे श्रीसर्वेश्वर सुखसदन प्रभो ! हमारी संस्कृत भाषा में अभिरुचि है । संस्कृत भाषा के मनन, भाषण, वरण, शरण आदि में आपकी कृपा से हमारा चित्त लगे ऐसी अभिलाषा है श्रुति शास्त्रों, मन्वादि शास्त्रों, नीति शास्त्रों, अथवा न्यायदर्शनशास्त्रों, वाणी शास्त्रों में तीव्र प्रगति हो ऐसी हमारी प्रबल भावना है । लेखन में प्रवचन में, कर्म और सेवा आदि में हमें प्रवीणता प्राप्त हो, हे माधव! ऐसी हमारी परम याचना है । हमारी वाणी में मधुरता, हमारे चित्त में सरसता और आत्मा में श्रेष्ठता तथा दृष्टि में समता हो, ऐसी श्रीमदाचार्यचरणों की महती कामना है ॥३९॥

अमरभारतीमभिवन्देऽहम् ।
निगमकदम्बैः सम्परिगीतां, मुनिवृन्दैरपि सेव्यां सततम् ॥
हरिमुखपङ्केरुहनिर्झरितां, सुधास्वरूपां पेयां प्रचुरम् ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणो, धीरै-श्छात्रै र्गेयां मधुरम् ॥४०॥

वैभवबोधिनी--अमरभारतीमिति.....

अमरभारतीम्-देववाणीम् । **अहम्** । **अभिवन्दे**-अभिवादये । **निगमकदम्बैः**-समग्रवेदशास्त्रैः । **सम्परिगीताम्**-सम्यक्प्रकारेण प्रगीताम्। **मुनिवृन्दैरपि**-ऋषिमुनिजनैरपि । **सततम्**-निरन्तरम् । **सेव्याम्**-समाराध्याम्। **हरिमुखपङ्केरुहनिर्झरिताम्**-श्रीभगवन्मुखारविन्दात् प्रकटिताम् । **सुधास्वरूपाम्**-अमृतरूपाम् । **प्रचुरम्**-विपुलम् । **पेयाम्**-पातुं योग्याम् । **श्रीराधासर्वेश्वरशरणः**-श्रीमदाचार्यदेशिकवरः । कथयति । **धीरैः**-विद्वज्जनैः । **छात्रैः**-विद्यार्थिभिश्च । **मधुरम्**-रसपरिप्लुतम् । **गेयाम्**-गातुं योग्याम् वन्दे, इति ॥४०॥

भावार्थ--देववाणी की हम वन्दना करते हैं । यह देववाणी वेदमन्त्रों द्वारा परिगीयमान और मुनिजनों द्वारा सतत परिसेव्य भगवन्मुखारविन्द से निर्झरित अमृत रूप तथा प्रचुरमात्रा में पान करने योग्य श्रीमदाचार्यचरण संकेत करते हैं कि ऐसी मधुर वह देववाणी विद्वानों व छात्र समूहों द्वारा गान करने योग्य है ॥४०॥

संस्कृतवचनं हितमाचरितम् ।
श्रीहरिरसनारसितं सेव्यं, परमवरेण्यं विधिभवभणितम् ॥
ऋतंभरञ्च श्रुतिगणसिद्धं, सरस्वतीकरवीणाक्वणितम् ।
मानवमानसजीवनमद्भुत,-ममरैः पीतं मुनिभिः पठितम् ॥
प्रज्ञावद्भिः सम्परिगीतं, स्फीतं शुद्धं नवरसभरितम् ।
राधासर्वेश्वरशरणेन, धीरैश्छात्रैः पेयं त्वरितम् ॥४१॥

वैभवबोधिनी--संस्कृतवचनमिति.....

संस्कृतवचनम्-सुरभाषावाक्यम् । **आचरितम्**-व्यवहृतम् । **हितम्**-कल्याणकरं भवति । **श्रीहरिरसनारसितम्**-श्रीभगवन्मुखोद्गीतम् । **सेव्यम्**-परिसेवनीयम् । **परमवरेण्यम्**-परमवरणीयम् । **विधिभवभणितम्**-ब्रह्म-शिवादिनिगदितम् । **ऋतंभरञ्च**-ज्ञानपरिपूरितञ्च । श्रुतिगणसिद्धम्-वेदप्रसिद्धम् । **सरस्वतीकरवीणाक्वणितम्**-शारदाहस्तवीणाझङ्कृतम् । **मानवमानसजीवनम्**-मानवचित्तसर्वस्वम् । **अद्भुतम्**-विचित्रम् । **अमरैः**-देवगणैः । **पीतम्**-परिपीतम् । **मुनिभिः**-ऋषिभिः । **पठितम्**-अधीतम् । **प्रज्ञावद्भिः**-विद्वद्भिः । **सम्परिगीतम्**-सम्यक्प्रकारेण परिगीतम् । **स्फीतम्**-स्पष्टम् किंवा सुसंस्कृतम् । **शुद्धम्**-पवित्रम् किंवा सुसंस्कृतम् । **नवरसभरितम्**-नूतनरसप्रपूरितम् किंवा वीर-हास्यादि-नवरस समाहितम् । **राधासर्वेश्वरशरणेन**-श्रीमदाचार्यचरणेन । **धीरैः**-मनीषिभिः । **छात्रैः**-विद्यार्थिभिश्च । **त्वरितम्**-झटिति । **पेयम्**-पानीयम् ॥४१॥

भावार्थ--संस्कृत भाषा का सतत व्यवहार (स्वाध्याय) परम कल्याण कारक है । यह भाषा श्रीहरिरसना से रसित, सेव्य, परम वरेण्य,

ब्रह्मा और शंकर प्रभृति देवों द्वारा कथित ज्ञान से परिपूर्ण, वेदों द्वारा सिद्ध, श्रीसरस्वतीजी के करकमलों में नित्य शोभायमान, दिव्य वीणा के स्वरों से झंकृत, मानव के मानस का सर्वस्व, परमाद्भुत, देववृन्दों द्वारा पान किया गया अर्थात् सम्यक् प्रकार से उच्चरित तथा ऋषि महर्षियों द्वारा पठित, विद्वानों द्वारा गायन किया जाने वाला परम मनोहर शुद्ध स्वरूप, नित्य नूतन रस से परिपूर्ण अथवा शृङ्गार-वीर-हास्यादि नव रस से भरी हुई है । जिसके लिये श्रीमदाचार्यचरण निर्देश करते हैं कि विद्वत्-पुरुषों एवं छात्रों द्वारा निरन्तर मनन करने योग्य है ॥४१॥

संस्कृतसरणिः समुपादेया ।
वैदिकसंस्कृतिधर्माचारै,-र्भरितेयञ्च सरणिर्ज्ञेया ॥
अस्यां प्रचुरं ज्ञानं निहितं, सुतरां विबुधभारती ध्येया ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणः, कथयति संस्कृतसृतिरवधेया ॥४२॥

वैभवबोधिनी--संस्कृतसरणिरिति.....

संस्कृतसरणिः--संस्कृतप्रणालिः । **समुपादेया**-परमोपयोग्या । **वैदिकसंस्कृतिधर्माचारैः**-वेदपुराणादिप्रतिपादित-भारतीय-सनातनसंस्कृति-धर्माचार-विचारैः । **भरितेयञ्च**-परिपूर्णेयञ्च । सरणिः-पद्धतिः । **ज्ञेया**-अवगन्तव्या । **अस्याम्**-संस्कृतभाषायाम् । **प्रचुरम्**-विपुलम् । **ज्ञानम्**-अनन्तज्ञान-विज्ञानम् । **निहितम्**-समाहितम् । **सुतराम्**-अतः । **विबुध-भारती**-देववाणी । **ध्येया**-ध्यातुं योग्या । **श्रीराधासर्वेश्वरशरणः**-श्रीमदा-चार्यचरणः । **कथयति**-निगदति । **संस्कृतसृतिः**-संस्कृतपद्धतिः । **अवधेया**-अवधारणीया, अर्थात् सर्वदा चेतसि विचिन्तनीया ॥४२॥

भावार्थ--संस्कृत पद्धति परम उपादेय है । वैदिक संस्कृति धर्म और आचार से परिपूर्ण है । इस पद्धति को सम्यक् प्रकार जानना चाहिये । इस भाषा में प्रचुर ज्ञान निहित है, इसलिये सुरभारती का ध्यान करना आवश्यक है--श्रीमदाचार्यचरणों का कथन है कि संस्कृत भाषा को भली प्रकार अपनाना चाहिये ॥४२॥

संस्कृतश्रवणं श्रेयस्करणम् ।
अगणितजन्मान्तरसमुपार्जित,--बहुविधपातकसंहतिहरणम् ।।
विबुधभारतीपरमाराधक,--पावनमानसनवरसभरणम् ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणो, निगदति शास्त्रं संसृतितरणम् ।।४३।।

वैभवबोधिनी--संस्कृतश्रवणमिति.....

संस्कृतश्रवणम्--देववाणीश्रवणम् । **श्रेयस्करणम्**-परममङ्गलप्रदम् । **अगणितजन्मान्तरसमुपार्जितबहुविधपातकसंहतिहरणम्**-असंख्यजन्म-जन्मान्तरसंचितनानाविधदुरितसमूहशमनम् । **विबुधभारती-परमाराधकपावनमानसनवरसभरणम्**--देववाणी-परमोपासकपवित्र-मानसनूतनरसप्रपूरितम् । **श्रीराधासर्वेश्वरशरणः**-श्रीमदाचार्यचरणः । **निगदति**-कथयति । **शास्त्रम्**-संस्कृतशास्त्रम् । संसृतितरणम्-संसारसागर-तरणमस्ति ।।४३।।

भावार्थ--संस्कृत श्रवण करना परम हितकर है । इससे अनेक जन्म--जन्मान्तरों के संचित नानविध पाप समूहों का विनाश होता है । देववाणी के परमाराधक जन के पावन मानस में नूतन रस का नव संचार होता है । श्रीमदाचार्यचरणों का यही भाव है कि यह हमारे समस्त शास्त्र यही संकेत करते हैं कि इस देववाणी संस्कृत का श्रवण ही संसृति (संसार) से पार करने अर्थात् उसके जन्म-मरण के चक्र का परिशमन वाला है ।।४३।।

संस्कृतक्षेत्रं मङ्गलकारम् ।
यत्र हि निवसनमात्रेणैव, सुलभं पुण्यं वारं वारम् ।।
स्वान्ते प्रभवति परमानन्दः, श्रीगोविन्दं स्मारं स्मारम् ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणः, सत्यं ब्रूते सारं सारम् ।।४४।।

वैभवबोधिनी--संस्कृतक्षेत्रमिति.....

संस्कृतक्षेत्रम्--संस्कृतस्थानम् । **मङ्गलकारम्**-सर्वानन्दप्रदम् । **हि**-इति निश्चयेन । **यत्र**-यस्मिन्क्षेत्रे । **निवसनमात्रेणैव**-निवासमात्रेणैव । **वारं**

वारम्-मुहुर्मुहुः । **पुण्यम्**-धर्मम् । सुलभम्-अनायासेन लभ्यं भवतीति । श्रीगोविन्दम्-परमात्मानम् । **स्मारम्-स्मारम्**--पौनः पुन्येन स्मृत्वा एवं संकीर्त्य । **स्वान्ते**-हृदये अन्तःकरणे वा । **परमानन्द**-अत्यन्ताह्लादः । **प्रभवति**-संजायते । इति **श्रीराधासर्वेश्वरशरणः**-श्रीमदाचार्यचरणः । **सारं-सारम्**-तत्त्वं-तत्त्वम् । **सत्यम्**-यर्थार्थम् । **ब्रूते**-कथयति ॥४४॥

भावार्थ--जिस क्षेत्र (स्थल) पर संस्कृत का मनन होता है वह संस्कृत-क्षेत्र परम मङ्गलमय है, जिस क्षेत्र में निवास करने से बारम्बार पुण्य की प्राप्ति होती है और श्रीगोविन्द नाम का स्मरण कर अन्तःकरण में परमानन्द की संप्राप्ति होती है--श्रीमदाचार्यचरण यही सार तत्त्व और परम सत्य है ऐसा वर्णन करते हैं ॥४४॥

अमृतरूपं संस्कृतस्तवनम् ।
पापविखण्डनपरशुसममचिरं, सम्प्रददाति विद्याभवनम् ॥
लोका भजन्ति भाषामपराम,--हो विमुच्य सुरवागवनम् ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणः, कथयति तदिदं संस्कृतलवनम् ॥४५॥

वैभवबोधिनी--अमृतरूपमिति.....

संस्कृतस्तवनम्-संस्कृतनिगदनम् । **अमृतरूपम्**-अमृतस्वरूपम् । **पापविखण्डनपरशुसमम्**-दुरितविनाशनपरशुसमानम् । **विद्याभवनम्**-विद्याकेन्द्रम् । **अचिरम्**-शीघ्रम् । **संप्रददाति**-सम्यक् प्रकारेण ददातीत्यर्थः । **सुरवागवनम्**-वेदवाणीसंरक्षणम् । **विमुच्य**-त्यक्त्वा । **अहो**-इति खेदे । **लोकाः**-जनाः । **अपराम्**-अन्याम् । **भाषाम्**-आंग्लादिभाषाम् । **भजन्ति**-सेवन्ते । श्रीराधासर्वेश्वरशरणः-श्रीमदाचार्यचरणः । **कथयति**-निगदति । **इदं तत्**-एतत्सर्वम् । **संस्कृतलवनम्**-संस्कृतभाषोच्छेदनम्, अर्थात् संस्कृत-भाषां प्रति कुठाराघातं कुर्वन्ति, इति निष्कर्षः ॥४५॥

भावार्थ--संस्कृत स्तवन अमृत स्वरूप है । यह पापों के विनाश करने में फरसा-शस्त्र के समान है और शीघ्र ही विद्या प्रदान करता है । बड़े आश्चर्य की बात है कितने ही विभ्रान्तजन ऐसी देव भाषा का संरक्षण (सेवन)

न करके उसे त्याग कर अपर भाषाओं का अध्ययन करते हैं--इस पर श्रीमदाचार्य चरणों का संकेत हैं कि वे जन मानो संस्कृत भाषा के प्रति कुठाराघात करते हैं ॥४५॥

संस्कृतमननं ददाति सुफलम् ।
सदोपनीतैः प्रेक्षावद्भिः, सुरवाक्पठनं प्रभवत्यमलम् ॥
सर्वविधं संहरति पातकं, यच्छति शान्तिं ध्रुवामविरलम् ।
राधासर्वेश्वरशरणो, विदधात्यनिशं मननं सरलम् ॥४६॥

वैभवबोधिनी--संस्कृतमननमिति.....

संस्कृतमननम्-सस्कृतसेवनम् । **सुफलम्**-सुष्ठु फलम् । **सदोपनीतैः**-यज्ञोपवीतधारकैः । **प्रेक्षावद्भिः**-विदद्भिः । **सुरवाक्पठनम्**-देववाण्या अध्ययनम् । **अमलम्**-निर्मलम् । **प्रभवति**-भवत्येव । **सर्वविधम्**-सर्वप्रकारेण । **पातकम्**-दुरितम् । **संहरति**-विनाशं करोति । **परं पदम्**-भगवल्लोकम् । अचलम्-ध्रुवम् । **शान्तिम्**-आत्मतुष्टिम् । **यच्छति**-परिददाति। **श्रीराधासर्वेश्वरशरणः**-श्रीमदाचार्यचरणः **उपदिशति यदिदमनिशम्**-निरन्तरम् । **मननम्**-अनुशीलनम् । **सरलम्**-सुकरम् । **विदधाति**-करोति ॥४६॥

भावार्थ--संस्कृत मनन करना सुन्दर फलप्रद है । यज्ञोपवीत से सुशोभित विद्वानों द्वारा देववाणी का सुन्दर स्वाध्याय मङ्गलरूप है, जो समस्त पातकों को हरण करता है । निश्चय ही वह शाश्वत शान्ति परम पद प्रदान करता है । श्रीमदाचार्यचरण उपदेश करते हैं कि यह सस्कृत वाङ्मय रूप मनन अतिशय सुगम है जिसको विद्वज्जन सर्वदा करते हैं ॥४६॥

मुकुन्दगीता सुरवृन्दसेवितां
बुधैरुपास्यां कविचित्तसंस्थिताम् ।
पुरातनामप्यथनित्यनूतनां
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ॥४७॥

वैभवबोधिनी--मुकुन्दगीतामिति.....

मुकुन्दगीताम्--गोविन्दपरिगीयमानाम् । **सुरवृन्दसेविताम्**-देवगणसंसेविताम् । **बुधैरुपास्याम्**-विद्वद्वृन्दैः परिसेव्याम् । **कविचित्तसंस्थिताम्**-कविजनमानसप्रतिष्ठिताम् । **अथ**-अनन्तरम् । **पुरातनाम्**-प्राचीनाम्। **अपि**-तथापि । **नित्यनूतनाम्**-सर्वदानवनवायमानाम् । **देवभारतीम्**-तां देववाणीम् । **हृदि**-स्वान्ते । **सदा**-सर्वदा । **अहं भजे**-सेवे अर्थात् संस्कृत-स्वाध्यायं करोमीत्यर्थः ॥४७॥

भावार्थ--भगवान् मुकुन्द के मुखारविन्द से परिगीयमान, देवगणों द्वारा परिसेवित, विद्वानों द्वारा उपासनीय, कविजनों के चित्त में संस्थित, अति प्राचीन होते हुए भी नित्य नवनवायमान, ऐसी उस देववाणी को हम हृदय में सदा ही भजन अर्थात् स्मरण करते हैं ॥४७॥

मुनीन्द्रवृन्दै र्गुणशीलयोगिभिः
प्रबुद्धलोकै रसिकै र्महात्मभिः ।
हृदा वरेण्यां रससारसागरां
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ॥४८॥

वैभवबोधिनी--मुनीन्द्रवृन्दैरिति.....

गुणशीलयोगिभिः-श्रीमद्भागवतोक्तद्वादशगुणोपेतैः सरलस्वभावैः तपोनिष्ठयोगिजनैः । **मुनीन्द्रवृन्दैः**-ऋषि-मुनिनिकरैः । **प्रबुद्धलोकैः**-विवेकशीलजनैः । **रसिकैः**-रसिकवरैः । **महात्मभिः**-महद्भिः साधुभिः । **हृदा**-मनसा । **वरेण्याम्**-वरणीयाम् । **रससारसागराम्**-आनन्दसारसिन्धुरूपाम् । **हृदि**-स्वान्ते । **देवभारतीम्**-सुरभारतीम् । **सदा**-सर्वदा । **अहं भजे**-अहं स्मरामि ॥४८॥

भावार्थ--गुण और शील ही है स्वभाव जिनका ऐसे योगिजन मुनिजनों द्वारा एवं परम ज्ञानी रसिक महात्माओं द्वारा हृदय से जो वरण करने योग्य है रस सागर उस देवभारती का हृदय में हम सदा ही सेवन करते हैं ॥४८॥

परम्परा-संस्कृतिबोधकारिणी-
मनन्तविज्ञानविवेकदायिनीम् ।

रसावहां गौरववृद्धिशालिनीं
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ।।४९।।

वैभवबौधिनी--परम्परेति.....

परम्परासंस्कृतिबोधकारिणीम्--वैदिकपरम्परासंस्कृतिप्रकाश-कारिणीम् । **अनन्तविज्ञानविवेकदायिनीम्**-अमितज्ञान-विज्ञान-प्रदायि-नीम् । **रसावहाम्**-रसप्रदाम् । **गौरववृद्धिशालिनीम्**-महत्वाभिवृद्धिपराम्। **देवभारतीम्**-सुरभारतीम् । **हृदि**-मानसे । **सदा**-सर्वदा । **अहं भजे**-मननं करोमि ।। ४९।।

भावार्थ--परम्परागत संस्कृति का ज्ञान कराने वाली, अनन्त विज्ञान और ज्ञान को देने वाली, रसप्रद महत्वपूर्ण देव भारती का हम सदा-सर्वदा हृदय में चिन्तन करते हैं ।।४९।।

श्रुति-स्मृतिज्ञानविधानधारिणीं
समग्रभूमौ सुखशान्तिवाहिनीम् ।
सुधामयीं तां मनुजाऽघहारिणीं
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ।।५०।।

वैभवबोधिनी--श्रुतिस्मृतीति.....

श्रुति-स्मृतिज्ञानविधानधारिणीम्--वेद-स्मृतिज्ञानस्वरूपप्रका-शिनीम् । **समग्रभूमौ**-निखिलभूमण्डले । **सुखशान्तिवाहिनीम्**-सुखशान्ति-प्रकाशिनीम् । **सुधामयीम्**-अमृतमयीम् । **मनुजाघहारिणीम्**-मानवदुरित-विनाशिनीम् । **ताम्**-एतादृशीम् । **देवभारतीम्**-संस्कृतभाषाम् । **हृदि**-मानसे। **सदा**-सर्वदा । **अहं भजे**-स्मरामि ।।५०।।

भावार्थ--जिसमें श्रुति-स्मृतियों का अनन्त ज्ञान-विज्ञान निहित है, समस्त संसार में सुख-शान्ति प्रदायक अमृत स्वरूपा, मनुष्यों के पापों को हरण करने वाली उस देव भारती का हम अपने मन में सदा ही मनन करते हैं ।।५०।।

समग्रभाषाजननीमधीश्वरीं
प्रजाकरीं मुक्तिकरीं महेश्वरीम् ।

रसालरूपां रसदानतत्परां
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ।।५१।।

वैभवबोधिनी --समग्रभाषाजननीमिति.....

समग्रभाषाजननीम्-समस्तभाषामातरम् । **अधीश्वरीम्**-ईश्वरीम्। **प्रजाकरीम्**-उत्पादयित्रीम् । **मुक्तिकरीम्**-मोक्षकरीम् । **महेश्वरीम्**-परमेश्वरीम्। **रसालरूपाम्**-मधुरस्वरूपाम् । **रसदानतत्पराम्**-रसप्रदानसन्नद्धाम्। **देवभारतीम्**-सुरभाषाम् । **सदा**-सर्वदा । **अहम्**। **हृदि**-स्वान्तःकरणे । **भजे**-सेवे ।।५१।।

भावार्थ--जो समस्त भाषाओं की जननी है । सर्वाधिष्ठात्री परमेश्वरी और अनन्त ज्ञान-विज्ञान उत्पन्न करने वाली तथा मुक्ति प्रदान करने वाली महेश्वरी है एवं मधुरस्वरूपा है, रस प्रदान करने में तत्पर है ऐसी उस देव भारती का हम हृदय में सदा ही सेवन करते हैं ।।५१।।

भवाब्धिसंतापहरां भवेश्वरी-
मपारभारापहरां सुधाभराम् ।
अनन्तविद्वज्जनतोषसम्प्रदां
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ।।५२।।

वैभवबोधिनी--भवाब्धिसंतापहरामिति.....

भवाब्धिसन्तापहराम्-संसारार्णवविपद्विनाशिनीम् । **भवेश्वरीम्**-जगदीश्वरीम् । **अपारभारापहराम्**-अनन्तदुःखापहराम् । **सुधाभराम्**-अमृतस्वरूपाम् । **अनन्तविद्वज्जनतोषसम्प्रदाम्**-अगणितवुधजनतुष्टिप्रदाम्। **तां देवभारतीम्**-ईदृशीं सुरभारतीम् । **सदा**-सर्वदा । **हृदि**-मानसे । **अहम्** । **भजे**-अनुशीलनं करोमि ।।५२।।

भावार्थ--संसार सागर के संताप को हरण करने वाली, जगदीश्वरी तथा अपार दुःख को दूर करने वाली, अमृत स्वरूप एवं अनन्त विद्वानों को प्रसन्नता प्रदान करने वाली, उस देव भारती का हम सदा ही अपने मन में स्मरण करते हैं ।।५२।।

विचारमूढाय पथप्रदर्शिनीं
प्रपन्नविघ्नौघविनाशकारिणीम् ।
कवीन्द्रचित्तेषु मुदा विलासिनीं
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ॥५३॥

वैभवबोधिनी--विचारमूढायेति.....

विचारमूढाय-अज्ञजनाय । **पथप्रदर्शिनीम्**-सन्मार्गप्रदायिनीम् । **प्रपन्नविघ्नौघविनाशकारिणीम्**-शरणागतजनपातकपुञ्जविनाशकर्त्रीम् । **कवीन्द्रचित्तेषु**-कवीन्द्रवृन्दहृदयेषु । **मुदा**-हर्षेण । **विलासिनीम्**-निवासिनीम्। **देवभारतीम्**-अमरभारतीम् । **हृदि**-हृदये । **सदा**-सर्वदा । **अहम्**। **भजे**-आराधयामि ॥५३॥

भावार्थ--अज्ञजनों को पथ प्रदर्शन कराने वाली, शरणागत जनों के पाप समूह को विनाश करने वाली, कवि जनों के चित्त में प्रसन्नता प्रकट करने वाली ऐसी उस अमर भारती का हम अपने अन्तःकरण में भजन करते हैं ॥५३॥

असीमरूपां शरणप्रसन्नता-
हितामिताऽऽनन्दकरीं सुरेश्वरीम् ।
निरन्तरं सर्वफलप्रदायिनीं
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ॥५४॥

वैभवबोधिनी--असीमरूपामिति.....

असीमरूपाम्-परमदिव्यस्वरूपाम् । **शरणप्रसन्नताहितामितानन्दकरीम्**--शरणागतजनप्रसन्नतार्थमहानन्दकरीम् । **सुरेश्वरीम्**-देवेश्वरीम्। **निरन्तरम्**-सदा । **सर्वफलप्रदायिनीम्**-वांछितसमस्तफलप्रदाम् । **देवभारतीम्**-सुरभारतीम् । **सदा**-सर्वदा । **हृदि**-मानसे । **अहम्** । **भजे**-सेवे ॥५४॥

भावार्थ--दिव्य स्वरूप, शरणागतजनों की प्रसन्नता के लिये परमानन्द प्रदान करने वाली, जगदीश्वरी, निरन्तर समस्त फल प्रदान करने वाली उस देव भारती का हम सदा ही हृदय में भजन स्मरण करते हैं ॥५४॥

समस्तवेदाऽगमधर्मदर्शन-
सुबोधिनीं शास्त्रमतिप्रदां प्रियाम् ।
अतीवमाधुर्य्यभरां भवेश्वरीं
भजे सदाऽहं हृदि देवभारतीम् ।।५५।।

वैभवबोधिनी--समस्तेति.....

समस्तवेदागमधर्मदर्शनसुबोधिनीम्-निखिलवेदादिशास्त्रधर्म-दर्शनज्ञानप्रदाम् । **शास्त्ररतिप्रदाम्**-शास्त्रेषु बुद्धिप्रदायिनीम् । **प्रियाम्**-प्रियस्वरूपाम् । **अतीवमाधुर्यभराम्**-अतीवानन्दपरिपूर्णाम् । **भवेश्वरीम्**-जगदीश्वरीम् । **देवभारतीम्**-अमरभारतीम् । **हृदि**-मानसे । **सदा**-सर्वदा । **अहम्** । **भजे**-सेवे, अर्थात् देवभाषां पठामीति निष्कर्षः ।।५५।।

भावार्थ--समस्त वेदों एवं शास्त्रों के धर्म का भली प्रकार ज्ञान कराने वाली, शास्त्रों मे सद्बुद्धि प्रदान करने वाली, अति मधुर जगदीश्वरी उस अमर भारती का हम हृदय में सदा ही ध्यान करते हैं ।।५५।।

भारतभारत्योराधारभूता-गकारत्रयी--

गीता--गंगा--गावश्च

(श्रीमद्भगवद्गीता)

समुद्गता कृष्णमुखारविन्दात्
या भारतेऽध्यात्मपवित्रधाम्नि ।
गीताऽर्थदा सा हरिभक्तिरूपा
नित्यं तनोत्यच्युतभक्तितत्त्वम् ।।५६ ।।

वैभवबोधिनी--समुद्गतेति.....

अध्यात्मपवित्रधाम्नि-आध्यात्मिकपावनतीर्थस्वरूपे । **भारते**-भारतदेशे । **कृष्णमुखारविन्दात्**-भगवतः श्रीकृष्णस्य मुखाम्बुजात् । **समुद्गता**-प्रादुर्भूता । **या**-गीता । **हरिभक्तिरूपा**-भगवद्भक्तिस्वरूपा । **अर्थदा**-धर्मार्थकाममोक्षेतिपुरुषार्थचतुष्टयप्रदायिनी किंवा--

उपास्यरूपं तदुपासकस्य च
कृपाफलं भक्तिरसस्ततः परम् ।
विरोधिनो रूपमथैतदाप्ते र्ज्ञेया
इमेऽर्था अपि पञ्च साधुभिः ।।

इति श्रीभगवन्निम्बार्काचार्यप्रणीत ''वेदान्तकामधेनुदशश्लोकी'' शास्त्रे परिवर्णितपञ्चार्थप्रबोधिका । **सा**-श्रीमद्भगवद्गीता हरिमुखवाणी । **अच्युतभक्तितत्त्वम्**-श्रीराधामाधवपराभक्तिसारम् । **नित्यम्**-प्रतिदिनम्-तनोति-विस्तारयति ।।५६।।

भावार्थ--आध्यात्मिक ज्ञानसम्पन्न परमपावन भारतवर्ष में भगवान् श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से प्रादुर्भूत, हरिभक्तिस्वरूपा तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन पुरुषार्थचतुष्टय को अथवा श्रीभगवन्निम्बार्कविरचित ''वेदान्तकामधेनुदशश्लोकी'' में प्रतिपादित पञ्चार्थ को प्रदान करने वाली

भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा
गीता का अर्जुन को उपदेश

महाराज भगीरथ
की तपश्चर्या पर
भगवान् विष्णु के
चरण कमलों से
भगवती गंगा
का शिव की
जटा पर अवतरण
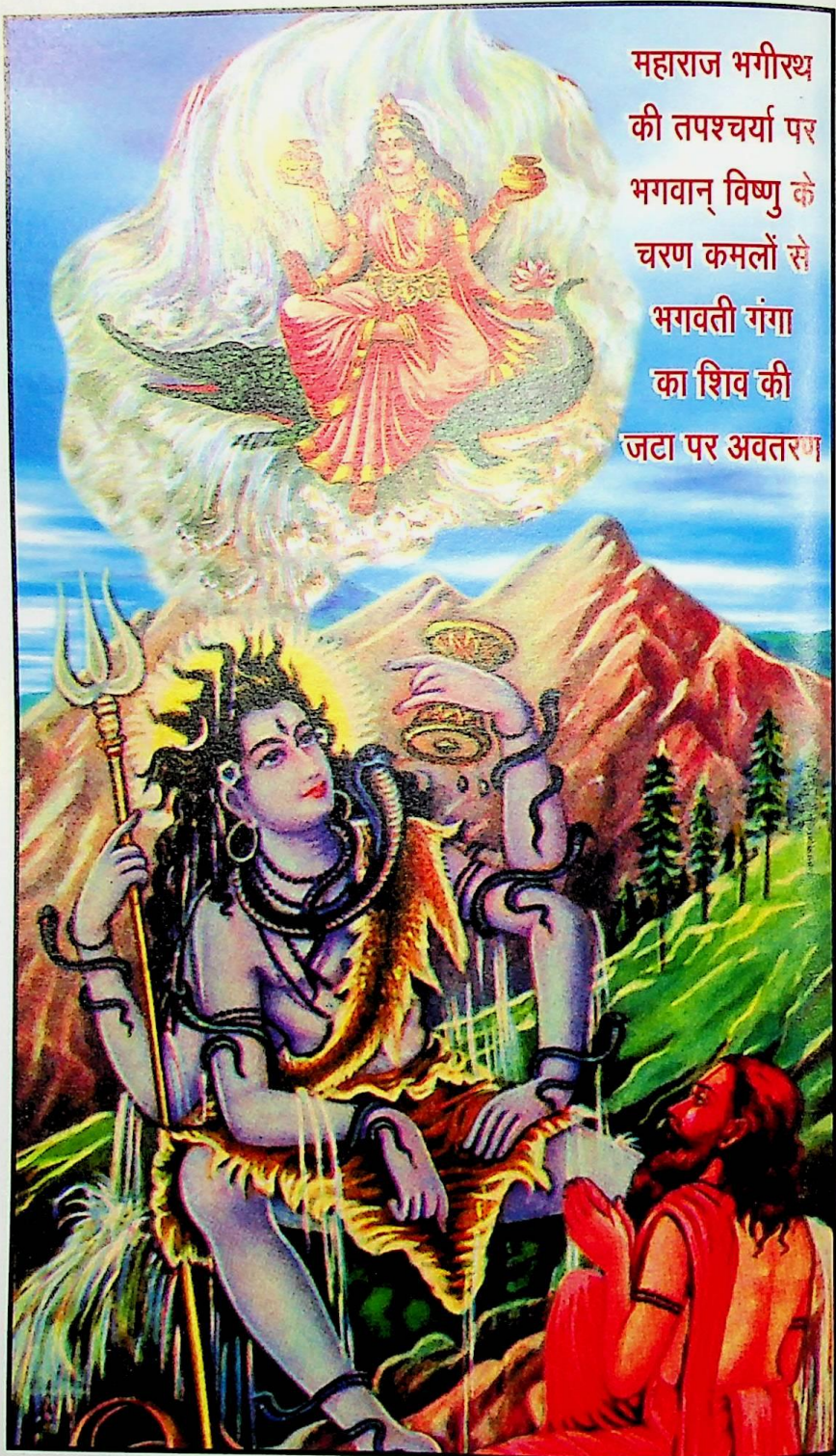
जो गीता है, वह सर्वदा भगवद्भक्तितत्त्व का विस्तार करने वाली दिव्य वाणी है ॥५६॥

श्रीमद्धरे र्या ह्युपदेशवाणी
पीयूषवर्षां विदधाति भूमौ ।
श्रुत्यर्थशुद्धाऽद्भुतमञ्जुसारा
गीता च सा वै जयताज्जगत्याम् ॥५७॥

वैभवबोधिनी--श्रीमद्धरेतिति.....

हि-इति निश्चयेन । **श्रीमद्धरेः**-श्रीमत्सर्वेश्वरश्यामसुन्दर-प्रभोः। **उपदेशवाणी**-सदुपदेशात्मिका वाणी सुधास्वरूपा तथा च लोकहिताय कृतोपदेशवचनम् । **भूमौ**-पृथिव्याम् । **पियूषवर्षा**-भक्तिरसामृतवृष्टिम् । **विदधाति**-करोति । **च**-पुनः । **श्रुत्यर्थशुद्धाऽद्भुतमञ्जुसारा**-वेदार्थपूता-ऽद्भुतदिव्यरूपा । **सा**-गीता भगवद्वाणी । **जगत्याम्**-भुवने । **जयतात्**-जयतु विजयतामित्यर्थः ॥५७॥

भावार्थ--निश्चय ही भगवान् श्रीकृष्ण की उपदेशात्मक यह दिव्य वाणी (श्रीगीता) पृथ्वीतल पर भक्तिरसामृत की वर्षा करती है और समस्त वेदादि शस्त्रों की शुद्ध दिव्य साररूप जो गीता उसकी जय हो ॥५७॥

विद्वज्जनै र्भक्तजनैश्च नित्यं
स्वाध्यायरूपेण सुसेव्यमाना ।
श्रेयस्करोत्याशु महामनोज्ञ-
मेवंविधा सा जयतीह गीता ॥५८॥

वैभवबोधिने--विद्वज्जनैरिति.....

विद्वज्जनैः-विद्वद्वृन्दैः । **भक्तजनैः**-भगवद्भक्तैः । **च**-पुनः । **स्वाध्यायरूपेण**-पठन-पाठन-श्रवण-मनन-निदिध्यासादिना । **सुसेव्यमाना**-सम्यक्तयाऽऽराध्यमाना । **नित्यम्**-प्रतिदिनम् । **महामनोज्ञम्**-परममनोरममर्थादतीवश्रेष्ठतमम् । **आशु**-झटिति। **श्रेयः**-कल्याणम्। **करोति**-विधत्ते। **एवंविधा**-ईदृग्विधा । **सा**-गीता । **इह**-लोके । **जयति**-विजयते ॥५८॥

भावार्थ--विद्वान् और भक्तजनों द्वारा स्वाध्याय रूप से नित्यप्रति परिसेवित तथा अतिशीघ्र ही परम मनोहर श्रेष्ठतम कल्याण करने वाली ऐसी जो श्रीमद्भगवद्गीता है उसकी लोक में जय हो ॥५८॥

पीताऽर्जुनेन प्रचुरं सतृष्णं
मुमुक्षुभिश्चाऽतितरां वरेण्या ।
सुधास्वरूपा सुभगा सुगीता
या भारते सर्वभुवि प्रसिद्धा ॥५९॥

वैभवबोधिनी--पीतेति.....

अर्जुनेन-पृथापुत्रेण धनञ्जयेन। **सतृष्णम्**-सपिपासम् । **प्रचुरम्**-पुष्कलं विपुलं वा । **पीता**-पानं कृता । **च**-अथ । **मुमुक्षुभिः**-मोक्षं मुक्तिमिच्छुभिरुत्तमैः साधकैरपि । **अतितराम्**-बहुतराम् पीता । **वरेण्या**-श्रेष्ठतमा। **सुधास्वरूपा**-अमृतमयी । **सुभगा**-परमश्रेष्ठा । **सुगीता**-सम्यक्-प्रकारेण प्रगीता-अर्थात् समुपदिष्टा । **या**-गीता । **भारते**-भारतवर्षे । **सर्वभुवि**-समस्तभूमण्डले । **प्रसिद्धा**-विख्यातास्तीतिभावार्थः ॥५९॥

भावार्थ--जिसका अर्जुन ने मनन पूर्वक अपने अन्तःकरण द्वारा बहुत पान किया और मुमुक्षुजनों द्वारा निरन्तर रूप से अनुशीलन की गई परम वरणीय तथा अमृत स्वरूपा एवं सुन्दरतया गान की गई जो गीता है वह भारत में ही नहीं अपितु विश्वभर में अतिशय विख्यात है ॥५९॥

गीता महाकल्पलतोपदिष्टा
कृत्वाऽर्जुनं लक्ष्यमुदात्तशिष्यम् ।
लोकार्थमीशेन रहस्यरूपा
सेव्या सुधीरैर्मनसा रसाऽऽढ्या ॥६०॥

वैभवबोधिनी--गीतेति.....

लोकार्थम्-लोकहिताय । **उदात्तशिष्यम्**-उत्कृष्टशिष्यम् । **अर्जुनम्**-कौन्तेयमर्थात्कुन्तिपुत्रमर्जुनम् । **लक्ष्यम्**-उद्देश्यम् । **कृत्वा**-विधाय।

महाकल्पलता-कल्पतरोरपिविलक्षणा । **रहस्यरूपा**-उपनिषद्रूपा अर्थात् रहस्यमयज्ञानभक्तिकर्मस्वरूपा । **रसाऽऽढ्या**-श्रीहरिमुखाम्भोजरसपरिपूर्णा । **गीता**-श्रीमद्भगवद्गीता । **ईशेन**-लीलापुराणपुरुषोत्तमेन भगवता श्रीकृष्णेन। **उपदिष्टा**-श्राविता। **सा**-गीता । **सुधीरैः**-रसज्ञैः । **मनसा**-चेतसा । **सेव्या**-सेवनीया ॥६०॥

भावार्थ--लोकहितार्थ प्रियशिष्य अर्जुन को निमित्त बनाकर भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा उपदिष्ट महाकल्पलतारूप रसपरिपूर्ण गीता, धीरपुरुष विद्वानों द्वारा मन से अनवरत सेवनीय एवं मननीय है ॥६०॥

(श्रीगंगा)

गङ्गां भजे त्रिपथगां सुरवृन्दसेव्यां
गोविन्दचारुचरणस्रुतपुण्यरूपाम् ।
श्रीमन्महेश्वरजटापरिशोभमानां
योगीन्द्रतापसमुनीन्द्रकदम्बपूज्याम् ॥६१॥

वैभवबोधिनी--गङ्गामिति.....

गोविन्दचारुचरणस्रुतपुण्यरूपाम्-भगवतः श्रीकृष्णस्वरूपस्य महाविष्णो ललितचरणाभ्यां विनिसृतेन पावनस्वरूपाम् । **श्रीमन्महेश्वरजटा-परिशोभमानाम्**-श्रीमन्महादेवस्य जटायां सुशोभमानाम् । **योगीन्द्रतापस-मुनीन्द्रकदम्बपूज्याम्**-योगीन्द्रतपस्विमुनीन्द्रवृन्दैः समर्च्यमानाम् । **सुरवृन्द-सेव्याम्**-देवगणैः सेव्यमानाम् । **त्रिपथगाम्**-त्रिपथगामिनीम् । **गङ्गाम्**-भागीरथीम् । **भजे**-भजामि स्मरामीति यावत् ॥६१॥

भावार्थ--भगवान् श्रीकृष्ण के युगलचरणारविन्द से समुत्पन्न परम पुण्यस्वरूपा तथा भगवान् शङ्कर की दिव्य जटाओं में सुशोभित एवं योगी-तपस्वी-मुनीजनों द्वारा पूजनीया देव-समूह द्वारा परिसेवित त्रिपथगामिनी गङ्गा का हम निरन्तर भजन स्मरण करते हैं ॥६१॥

भूतेशशोभितहिमालयराजमानां
　　श्रीधामभारतधरातलरम्यमाणाम् ।
स्वाम्बुप्रदानदुरितक्षयकारिणीञ्च
　　गङ्गां भजे प्रतिदिनं करुणावताराम् ।।६२।।

वैभवबोधिनी--भूतेशशोभितहिमालयराजमानामिति.....

भूतेशशोभितहिमालयराजमानाम्-शिवसमलङ्कृतहिमालय-संस्थिताम् । **श्रीधामभारतधरातलरम्यमाणाम्**-श्रीनिकेतनभारतभूमौ सञ्चारिणीम् । **च**-अथ । **स्वाम्बुप्रदानदुरितक्षयकारिणीम्**-निजवारिप्रदानेन पापप्रणाशिनीम् । **करुणावताराम्**-करुणास्वरूपाम् । **गङ्गाम्**-जाह्नवीम् । **प्रतिदिनम्**-अहर्निशम् । **भजे**-सेवे ।

भावार्थ--भगवान् शङ्कर से अति सुशोभित हिमालय की दिव्य पर्वत मालाओं में प्रवाहित होती हुई तथा परम कमनीय भारत की पवित्र भूमि को अलंकृत करती हुई और अपने निर्मल दिव्य जल से पाप पुञ्जों का ध्वंस करने वाली दयामयी श्रीगङ्गाजी का प्रतिदिन भजन सेवन करते हैं ।।६२।।

श्रीजाह्नवीं सकलतापहरां वरिष्ठां
　　श्रीकृष्णभक्तिमतिदां भवमुक्तिकर्त्रीम् ।
धाराप्रवाहशुभनादरसप्रदात्रीं
　　गङ्गां नमाम्यहरहोऽपरिमेयशोभाम् ।।६३।।

वैभवबोधिनी--श्रीजाह्नवीमिति.....

सकलतापहराम्-निखिलक्लेशविनाशिनीम् । **वरिष्ठाम्**-श्रेष्ठाम् । **श्रीकृष्णभक्तिमतिदाम्**-श्रीकृष्णप्रीतौ बुद्धिप्रदाम् । **भवमुक्तिकर्त्रीम्**-भवबन्धननिवारिणीम् । **धाराप्रवाहशुभनादरसप्रदात्रीम्**-स्वकीयधाराप्रवाह-शुभनादेन परमानन्ददायिनीम् । **अपरिमेयशोभाम्**-निरतिशयशोभाम् । **जाह्नवीम्**-जह्नुसुताम् । **गङ्गाम्**-श्रीभागीरथीम् । **अहरहः**-अहोरात्रम् । **नमामि**-नमस्करोमि ।।६३।।

भावार्थ--समस्त पाप-तापों का निवारण करने वाली परम श्रेष्ठ तथा भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्य भक्ति में सुद्बुद्धि प्रदायिनी तथा संसार बन्धन से छुड़ाने वाली और अपनी निर्मल धारा प्रवाह के शुभ निनाद से आनन्द देने वाली अनुपम शोभायुक्त जह्नुसुता श्रीगङ्गाजी को निशिदिन नमन करते हैं॥६३॥

स्वच्छाऽम्बुसीकरसमूहसुशान्तिदां नः
सर्वार्थसिद्धिफलदां सरिदग्रगण्याम् ।
भागीरथीं विमलविष्णुपदीं परेशां
गङ्गां सदा परिभजामि स्वकीयचित्ते ॥६४॥

वैभवबोधिनी--स्वच्छाम्बुसीकरसमूहसुशान्तिदामिति.....

नः-अस्माकम् । **स्वच्छाम्बुसीकरसमूहसुशान्तिदाम्**-निर्मलजल-कणसमूहैः परमशान्तिप्रदाम् । **सर्वार्थसिद्धिफलदाम्**-निखिलसम्पतिसिद्धि-फलप्रदाम् । **सरिदग्रगण्याम्**- निखिलसुपावननदीप्रमुखाम् । **परेशाम्**-परात्पराम् । **विमलविष्णुपदीम्**-भागीरथीम् गङ्गाम् । **स्वकीयचित्ते**-स्वमानसे। **सदा**-निरन्तरम् । **परिभजामि**-सम्भजामि ॥६४॥

भावार्थ--हमें अपने निर्मल जल कण समूह से शान्ति प्रदान करने वाली समग्रसिद्धिप्रदाता सम्पूर्ण पावनतम नदियों में प्रमुख, परात्परस्वरूप परमनिर्मल विष्णुपदी भागीरथी श्रीगङ्गाजी का अपने चित्त में सदा भजन करते हैं ॥६४॥

स्वान्ते महागुणवतीं श्रुतिशास्त्रपेयां
दिव्यप्रभां भगवतीममृतस्वरूपाम् ।
आनन्ददां समुदितां विमलाम्बुधारां
गङ्गां नमामि नितरां मनसा गरिष्ठाम् ॥६५॥

वैभवबोधिनी--स्वान्ते-इति.....

महागुणवतीम्-अनन्तगुणशालिनीम् । **श्रुतिशास्त्रगेयाम्**-वेदादि-शास्त्रप्रतिपादिताम् । **दिव्यप्रभाम्**-अनिर्वचनीयशोभाम् । **अमृतस्वरूपाम्**-सुधारूपिणाम् । **विमलाम्बुधाराम्**-निर्मलजलधाराधारिणीम् । **आनन्ददाम्**-

परमकमनीयसुखदाम् । **समुदिताम्**-प्रकटिताम् । **गरिष्ठाम्**-वरिष्ठाम् । **भगवतीम्**-भगवत्स्वरूपाम् **गङ्गाम्**। **मनसा**-चेतसा । **नितराम्**-अनवरतम्। **नमामि**-वन्दे ॥६५॥

भावार्थ--अनन्त-गुणवाली वेदादिशास्त्रों द्वारा वर्णित दिव्यप्रभायुक्त सुधास्वरूप निर्मलधारा वाली आनन्दप्रदायिनी प्रत्यक्ष प्रकट रूप में संस्थित परम श्रेष्ठ भगवती भागीरथी श्रीगङ्गाजी का निरन्तर हृदय से नमन करते हैं॥६५॥

(गो-माता)

श्रीकृष्णहस्ताम्बुजवेणुनादैः
सम्पुष्टगात्रा सुरधामरूपा ।
या भारतश्रीः परिपूजनीया
गौः कामधेनु जयतीहलोके ॥६६॥

वैभवबोधिनी--श्रीकृष्णहस्तम्बुजवेणुनादैरिति.....

श्रीकृष्णहस्ताम्बुजवेणुनादैः-श्रीकृष्णकरकमलविराजित-मुरली-मधुरशब्दैः । **सम्पुष्टगात्रा**-परिपुष्टाऽङ्गा । **सुरधामरूपा**-देवाधिष्ठानस्परूपा। **भारतश्रीः**-भारतस्य शोभारूपेण संस्थिता । **परिपूजनीया**-परिसेवनीया । **या कामधेनुः**-मनोवाञ्छितफलदात्री । **गौः**-धेनुः । **इहलोके**-अस्मिन् लोके। **जयति**-विजयते ॥६६॥

भावार्थ--श्रीकृष्ण करकमल विराजित वंशी के मधुर शब्द श्रवण से परिपुष्ट शरीर वाली, देवताओं की आश्रय स्वरूपा और जो भारत की शोभा स्वरूप है तथा सब प्रकार से परिपूजनीय ऐसी कामधेनु गोमाता की इस लोक में सदा जय हो ॥६६॥

नित्यं स्रवन्ती प्रियदुग्धधारां
यद्गोमये पुण्यतमे धरित्र्याम् ।
लक्ष्म्या निवासः खलु वर्तते सा
गौः कामधेनु जयतीहलोके ॥६७॥
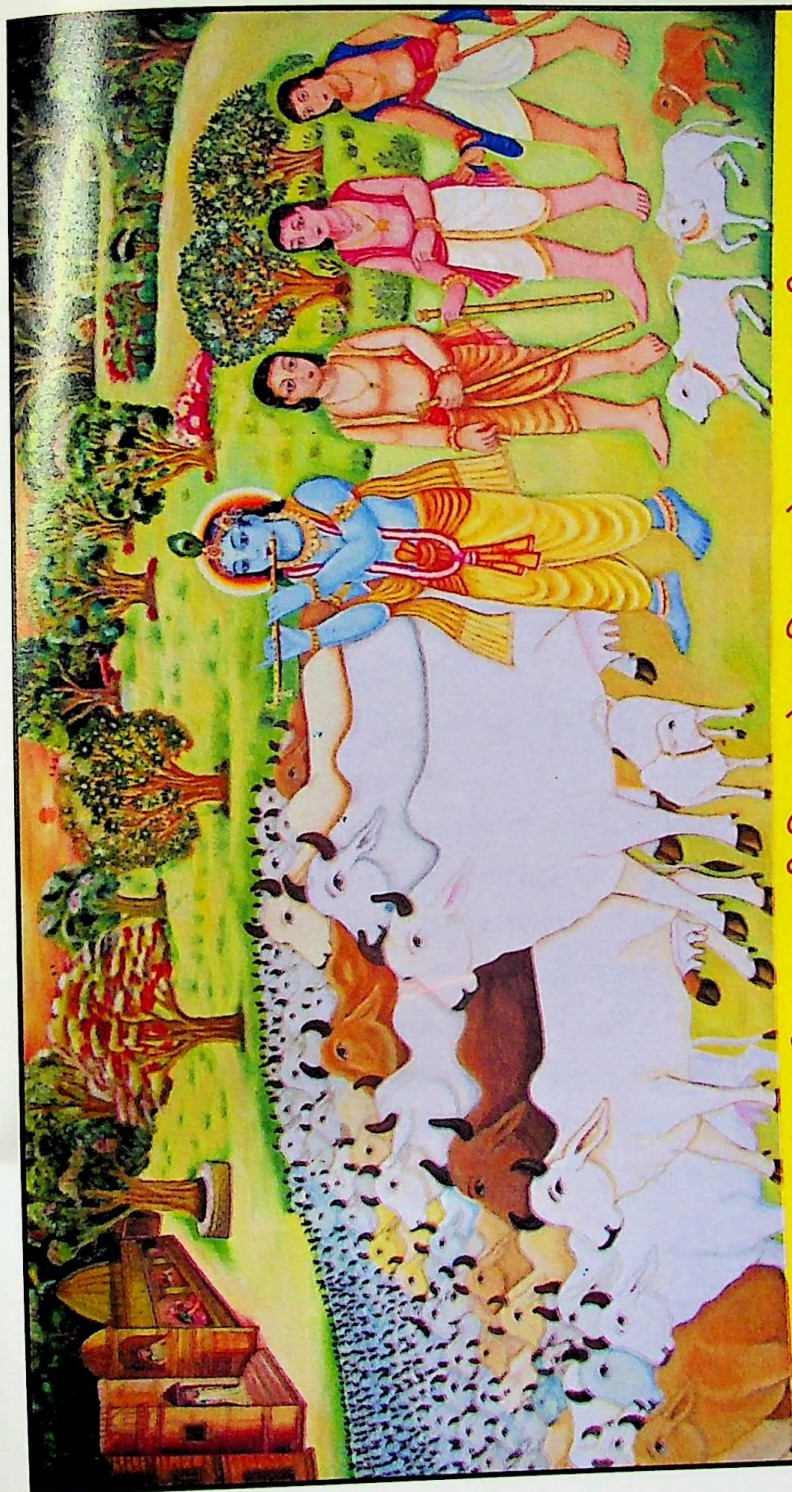
गोवृन्द को अपनी मधुर मुरली निनाद से प्रमुदित करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण

वैभवबोधिनी--नित्यमिति.....

धरित्र्याम्-पृथिव्याम् । **नित्यम्**-प्रतिदिनम् । **प्रियदुग्धधाराम्**-मधुरदुग्धधाराम् । **स्रवन्ती**-प्रवाहयन्ती । **पुण्यतमे**-परमपवित्रे । **यद्गोमये**-यस्या गव्ये । **लक्ष्म्याः**-श्रियः । **निवासः**-स्थिति र्वतते । **खलु**-निश्चयेन। **सा कामधेनुः**-मनोऽभिलषितफलप्रदात्री । **गौः**-धेनुः । **इहलोके**-अस्मिन् लोके । **जयति**-विजयते ॥६७॥

भावार्थ--भूतल पर नित्यप्रति मधुरतम दुग्धधारा प्रदान करने वाली और जिसके पुण्यतम गोमय अर्थात् गोबर में लक्ष्मी का निवास है । उस मनोवांछित फल देने वाली गोमाता की इस लोक में सर्वत्र जय हो ॥६७॥

वेदादिशास्त्राणि वदन्ति यस्या
माहात्म्यमाप्ता मुनिसाधवश्च ।
पयस्विनी पातकनाशिनी सा
गौः कामधेनु र्जयतीहलोके ॥६८॥

वैभवबोधिनी--वेदादिशास्त्राणीति.....

वेदादिशास्त्राणि-श्रुति-स्मृति-पुराणादीनि शास्त्राणि । **आप्ताः**-यथार्थवक्तारः । **मुनिसाधवश्च**-मुनयः साधुपुरुषाः सज्जनाश्च । **यस्याः**-धेनोः । **माहात्म्यम्**-महिमानम् । **वदन्ति**-निगदन्ति । **पयस्विनी**-दुग्धदात्री। पातकनाशिनी-पापप्रणाशिनी । **सा कामधेनुः**-इच्छितफलदात्री । **गौः**-धेनुः। **इहलोके**-अस्मिन् संसारे । **जयति**-जयोऽस्तु ॥६८॥

भावार्थ--वेदादि शास्त्र तथा यथार्थ वक्ता महापुरुष एवं मुनिजन और सज्जन पुरुष जिस गौ के माहात्म्य का वर्णन करते हैं । अमृतस्वरूप दूध देने वाली, समस्त पापों का नाश करने वाली उस गोमाता की समस्त विश्व में सदा जय हो ॥६८॥

अघ्न्या सदा सा परिरक्षणीया
माता महामङ्गलविग्रहा च ।
सर्वैरुपास्या नवनीतकोषा
गौः कामधेनु र्जयतीहलोके ॥६९॥

वैभवबोधिनी-- अध्न्येति.....

महामङ्गलविग्रहा-परममङ्गलस्वरूपा । **नवनीतकोषा**-नवनीत-निधिः दुग्ध-दधि-घृतपरिपूर्णा। **च**-अथ । **अघ्न्या**-अवध्या । **माता**-मातृस्व-रूपा । **सदा**-सर्वदा। **परिरक्षणीया**-परिपालनीया । **सर्वैरुपास्या**-सर्वजनै-रुपासनीया । सा कामधेनु गौः । इह-अस्मिन् । लोके-**जयति**-विजयते॥६९॥

भावार्थ--महामंगलविग्रहस्वरूप, नवनीतनिधि (दूध, दही, मक्खन, घृत की कोष अर्थात् खजाना रूप) सर्वतोभावेन अवध्य समस्त मानव समुदाय द्वारा उपासनीय गोमाता सदा ही रक्षा करने योग्य है । ऐसी परमपुण्यमयी कामधेनु गोमाता की इस संसार में जय हो ॥६९॥

गोपालवाणीश्रवणेन हृद्या
व्रजे व्रजन्ती खलु विश्वमाता ।
वरीयसी भारतवर्षरम्ये
गौः कामधेनु जयतीहलोके ॥७०॥

वैभवबोधिनी--गोपालवाणीश्रवणेनेति.....

गोपालवाणीश्रवणेन-श्रीकृष्णवचनश्रवणेन । **हृद्या**-मनोहरा । **भारतवर्षरम्ये**-भारतवर्षस्य मनोहरे । **व्रजे**-व्रजमण्डले । **व्रजन्ती**-गच्छन्ती। **खलु**-निश्चयेन । **विश्वमाता**-विश्वभरणपोषणकर्त्री । **वरीयसी**-गरीयसी । **गौः**-कामधेनुः। **इहलोके**-अस्मिन् संसारे । **जयति**-सर्वोत्कर्षेण वर्तते ॥७०॥

भावार्थ--भगवान् श्रीकृष्ण की वाणी श्रवण मात्र से परम प्रफुल्लित भारतवर्ष में तथा भारतवर्ष की पवित्र धरा पर अवस्थित सर्वोपरि धाम व्रज-मण्डल में विचरण करती हुई विश्वमाता परम श्रेष्ठ कामधेनु गोमाता की इस निखिल जगत् में सर्वदा जय हो ॥७०॥

जनमानस को उद्‌बोधन करते हुए
जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्री ''श्रीजी'' महाराज

अथ जनान्प्रत्युद्बोधनम्

भारते भारती भाति भास्कराऽऽभा विभासते ।
भव्यो भागवतो धर्मो भूयो भूयो निभाल्यते ।।७१।।

वैभवबोधिनी--भारत इति.....

भारते-भारतवर्षे । **भारती**-सुरभाषा । **भाति**-प्रकाशते । **भास्करा-ऽऽभा**-सूर्यकान्तिः । **विभासते**-परिशोभते । **भागवतः**-भगवद्विषयकः । **धर्मः**-वेदादिशास्त्रप्रतिपादितसद्धर्मः । **भव्यः**-विशिष्टस्वरूपात्मकः । **भूयोभूयः**-मुहुर्मुहुः । **निभाल्यते**-विचार्यते ।।७१।।

भावार्थ--यह देव भाषा संस्कृत भारत में अपनी अनुपम गरिमा से परम सुशोभित है । मरीचिमाली भगवान् सूर्य का दिव्य आलोक जहाँ सर्वत्र परव्याप्त है । जिस भारत का सर्वस्व परम भागवत धर्म है और यही भागवत धर्म भारतवासियों द्वारा पुनः-पुनः सेवनीय है ।।७१।।

भ्रष्टाचारता ये तु दण्डनीयाश्च भारते ।
सन्तु ते जनसामान्या विशिष्टा वा प्रशासकाः ।।७२।।

वैभवबोधिनी--भ्रष्टाचाररता इति.....

भारते--भारतवर्षे । **ये**-जनाः । भ्रष्टाचाररताः-भ्रष्टाचारपरायणाः । सन्ति । **ते**-सर्वे । **जनसामान्याः**-साधारणनागरिकजनाः । **वा**-अथवा । **विशिष्टाः**-विशिष्टपुरुषाः । **च**-पुनः । प्रशासकाः- । **सन्तु**-प्रभवन्तु । ते सर्वे **दण्डनीयाः**-दण्डयोग्याः सन्ति ।।७२।।

भावार्थ--भारत में जो जन भ्रष्टाचार परायण है, उनमें चाहे वे जन साधारण हों अथवा विशिष्ट पुरुष हों तथा प्रशासक हों वे सभी दण्ड पाने योग्य है ।।७२।।

धर्माचार्यैः प्रबोद्धव्या जनता या कुमार्गगा ।
तथैव साधुभि र्नित्यं प्रेरणीया सदैव सा ।।७३।।

वैभवबोधिनी--धर्माचार्यैरिति.....

धर्माचार्यैः-देशिकवर्यैः । **या जनता**-या प्रजा । **कुमार्गगा**-कुत्सितपथगामिनी । **सा प्रबोद्धव्या**-उपदेष्टव्या शिक्षितव्या । **तथैव**-तेनैव प्रकारेण । **साधुभिः**-साधुजनैः । **नित्यम्**-अहर्निशम् । **सा**-जनता । **सदैव**-सर्वदैव । **प्रेरणीया**-शिक्षणीया ॥७३॥

भावार्थ--जो जनता कुमार्ग की ओर जा रही है वह धर्माचार्यों द्वारा उपदेश पाने योग्य है, वैसे ही साधुजनों द्वारा सदैव नित्य सत्प्रेरणा प्राप्त करने योग्य है ॥७३॥

मातृवर्गैः स्वदेशेऽस्मिन् शिक्षणीयाश्च सर्वदा ।
वयस्का बालका नार्यः सदाचारपुरस्सरम् ॥७४॥

वैभवबोधिनी--मातृवर्गैरिति.....

स्वदेशेऽस्मिन्-अस्मिन् भारते । **मातृवर्गैः**-मातृवृन्दैः । **वयस्काः**-प्रौढाः । **बालकाः**-अर्भकाः किंवा स्वल्पावस्थासम्पन्नाबालस्वरूपात्मकाः बालकाः । **नार्यः**-स्त्रियः । **सदाचारपुरस्सरम्**-सदाचार-पूर्वकम् । **सर्वदा**-सदैव । **शिक्षणीयाः**-शिक्षया सम्यक् रूपेण प्रबो-द्धव्याः ॥७४॥

भावार्थ--हमारे इस भारतदेश में (मातृवर्ग ही घर में बालक-बालिकाओं की प्रथम गुरु है) मातृवर्ग से छोटे बालक बालिकायें अथवा पुत्रवधू आदि सदाचार पूर्वक सर्वदा शिक्षा प्राप्त करने योग्य है ॥७४॥

तथा हि पितृवर्गैश्च योजनीयाः स्वकर्मणि ।
बालक युवका वृद्धा नार्यश्च बालिकाः सदा ॥७५॥

वैभवबोधिनी--तथेति.....

तथाहि-तेनैव प्रकारेण । **पितृवर्गैश्च**-पितृवृन्दैश्च । **बालकाः**-अल्पवयस्का बालरूपा माणवकाः । **युवकाः**-युवावस्था ऽऽपन्नाः तरुणाः । **वृद्धाः**-वृद्धपुरुषाः । नार्यश्च-स्त्रियश्च । **बालिकाः**-कुमार्यः । **सदा**-सर्वदैव । **स्वकर्मणि**-स्वकार्ये । योजनीया-प्रेरणीयाः ॥७५॥

भावार्थ--वैसे ही अर्थात् मातृवर्ग की भाँति ही पितृवर्ग को भी चाहिये कि बालक, बालिका, युवक, वृद्ध या स्त्रीजन (पुत्र वधू) आदि को अपने कर्म में प्रेरित करें ॥७५॥

शिक्षकैः कविभि र्नित्यं शिक्षणीया जना ध्रुवम् ।
सेवापरायणैरेभिः प्रशासक-चिकित्सकैः ॥७६॥

वैभवबोधिनी--शिक्षकैरिति.....

शिक्षकैः-शिक्षकजनैः । **कविभिः**-कविजनैः । **प्रशासकैः**-प्रशासकजनैः । **चिकित्सकैः**-भिषग्वरैः । **सेवापरायणैः**-सेवासंलग्नैः । **एभिः**-सर्वैः । **नित्यम्**-प्रतिदिनम् । **जनाः**-मनुजाः । **ध्रुवम्**-निश्चयेन । **शिक्षणीयाः**-शास्त्रशिक्षया प्रबोधनीयाः ॥७६॥

भावार्थ--शिक्षकजन, कविवर, प्रशासक और वैद्यप्रवर इन सब महानुभावों को सेवा पारायण होकर नित्यप्रति जनता को शिक्षा देनी चाहिये ॥७६॥

वैदिकी संस्कृति र्ज्ञेया भारतीयै र्जनैः सदा ।
एवमध्यात्मबोधश्च धारणीयः स्वमानसे ॥७७॥

वैभवबोधिनी--वैदिकीति.....

भारतीयैः-भारतवासिभिः । **जनैः**-नरैः । **सदा**-सर्वदा । **वैदिकी संस्कृतिः**-वैदिकी परम्परा । **ज्ञेया**-अवगन्तव्या । **एवम्**-अनेनैव प्रकारेण । **स्वमानसे**-स्वान्तःकरणे । **च**-इतरबोधकः । **अध्यात्मबोधः**-आध्यात्मिकज्ञानञ्च । **धारणीयः**-परिपालनीयः ॥७७॥

भावार्थ--भारतीय जनसमुदाय को वैदिकी संस्कृति को जानना परमावश्यक है और इसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान का भी अपने अन्तःकरण में धारण करना परम कर्तव्य है ॥७७॥

देवालया रक्षणीया धर्मग्रन्थाश्च साधुभिः ।
गावो नार्यश्च सम्पूज्याः सर्वदा सर्वमानवैः ॥७८॥

वैभवबोधिनी--देवालया इति.....

देवालयाः-मन्दिराणिः । **च**-तथा । **धर्मग्रन्थाः**-धर्मशास्त्राणि । **साधुभिः**-साधुजनैः । **रक्षणीयाः**-रक्षितुं योग्याः । **सर्वमानवैः**-सर्वजनैः । **सर्वदा**-सदैव । **गावः**-गोमातरः । **च**-अन्यार्थवाचकः । **नार्यः**-स्त्रियश्च । **सम्पूज्याः**-समादरणीयाः ॥७८॥

भावार्थ--साधुजनों द्वारा मन्दिर एवं धर्मग्रन्थों की सुरक्षा होनी चाहिये। सभी मनुष्यों द्वारा सर्वदा गोमाता एवं स्त्रीजन पूज्य और सन्मान के योग्य है ॥७८॥

त्याज्या हिंसा जनै र्देशे सेव्या भारतसंस्कृतिः ।
शरणागतलोकाश्च रक्षणीया सदा मुदा ॥७९॥

वैभवबोधिनी--त्याज्येति.....

देशे-अस्मिन् भारतवर्षे । **जनैः**-नरैः । **हिंसा**-हिंसावृतिः । **त्याज्या**-हेया । **भारतसंस्कृतिः**-भारतीयशास्त्रपरम्परा । **सेव्या**--सेवनीया, अर्थात् समाचरणीया । **मुदा**-प्रसन्नतया । **सदा**-सर्वदा । **च**-तथा । **शरणागत-लोकाः**-समाश्रितजनाः । **रक्षणीयाः**-परिपालनीयाः ॥७९॥

भावार्थ--धर्मप्राण इस भारत में मानव समुदाय द्वारा हिंसा वृत्ति का निरोध अपेक्षित है और भारतीय-संस्कृति का सेवन परमावश्यक है । प्रसन्नता पूर्वक सदैव शरणागतजनों की रक्षा होनी चाहिये ॥७९॥

अवनीयानि तीर्थानि वनानि विविधानि च ।
तथैव खगवृन्दानि पशुवृन्दानि मानवैः ॥८०॥

वैभवबोधिनी--अवनीयानीति.....

मानवैः-जनैः । **विविधानि**-नाना प्रकाराणि । वनानिः-उद्यानानि। **च**-पुनः । **तीर्थानि**-पवित्रतीर्थस्थलानि । **तथैव**-तेनैव प्रकारेण । **खगवृन्दानि**-पक्षीसमूहाः । **पशुवृन्दानि**-पशुयूथानि । **अवनीयानि**-रक्षणीयानि, अर्थात् परमावश्यकरूपेण सुरक्षितानि प्रभवन्तु ॥८०॥

भावार्थ--मनुष्यों द्वारा नाना प्रकार के वन उद्यान एवं तीर्थ स्थल तथा पक्षी और पशुओं की रक्षा करना परमावश्यक है ॥८०॥

जान्हवी-यमुना-रेवा-क्षिप्रादीनां पवित्रता ।
सरितां सरसाञ्चेह रक्षणीया प्रशासकैः ॥८१॥

वैभवबोधिनी--जान्हवीति.....

जान्हवी-गङ्गा । **यमुना**-सूर्यतनया । **रेवा**-नर्मदा । **क्षिप्रादीनाम्**-क्षिप्राप्रभृतीनाम् । **सरिताम्**-नदीनाम् । **सरसाम्**-सरोवराणाम् । **पवित्रता**-पावनता अर्थान्नानाविधप्रदूषणनिवारणता। **इह**-अस्मिन् देशे । **प्रशासकैः**-प्रशासकजनैः । **रक्षणीया**-रक्षाऽर्हा ॥८१॥

भावार्थ--इस देश में प्रशासकों द्वारा गङ्गा, यमुना, नर्मदा, क्षिप्रा प्रभृति नदी और सरोवरों की पवित्रता की सुरक्षा होनी चाहिये ॥८१॥

एवञ्च ह्यवनीयास्ते सर्वमङ्गलसम्प्रदाः ।
गोवर्द्धन-हिमाद्र्यादिपर्वता भुवि संस्थिताः ॥८२॥

वैभवबोधिनी--एवञ्चेति.....

एवम्-अनेनैव प्रकारेण । **च**-पुनः । **सर्वमङ्गलसम्प्रदाः**-सर्वमङ्गलदातारः । **भुवि**-पृथिव्याम् । **संस्थिताः**-स्थिरीभूताः । **गोवर्धन-हिमाद्र्यादिपर्वताः**-गिरिराजहिमाचलादिभूधराः । **ते**-सर्वेऽपि । **हि**-इति निश्चयेन । प्रशासकैः । **अवनीयाः**-संरक्षणीयाः ॥८२॥

भावार्थ--इसी प्रकार सर्व मङ्गलदायक गोवर्धन हिमालयादि पर्वत जो पृथ्वी पर अवस्थित हैं, वे भी प्रशासकों द्वारा संरक्षणीय हैं ॥

पर्यावरण-संरक्षा कर्तव्या देशनायकैः ।
तद्रक्षणप्रमादेन ध्रुवा हानिस्तु जायते ॥८३॥

वैभवबोधिनी--पर्यावरणसंरक्षेति.....

देशनायकैः-स्वदेशप्रशासनादिव्यवस्थाकार्यतत्परैर्जनैः । **पर्यावरणसंरक्षा**-नभस्स्थल-जल-वायु-विविध-लता-तरु-औषध-

तृणाद्यखिलानि पर्यावरणरूपात्मकानि सन्ति। तत्-तेषां सर्वेषां सम्यक् प्रकारेण संरक्षणं विधातव्यमिति। **तद्रक्षणप्रमादेन**-तेषां सर्वाङ्गतया संरक्षण-परमोपेक्षाकरणेन। **ध्रुवा हानिः**-तु-इति निश्चयात्मकेन महती क्षतिः। **जायते**-सम्प्रजायते, अर्थात् प्रमवतीति निष्कर्शः।

भावार्थ--अपने भारतदेश के जो विवेकी प्रशासक महानुभाव हैं, उनके द्वारा पर्यावरण में प्रदूषण की जो चिन्तनीय समस्या है उसका समग्रविधा से समाधान किया जाना नितान्त अपेक्षित है। यदि इसमें तनिक भी शिथिलता की गई तो देश में निश्चयात्मक रूप से बहुत बड़ी हानि हो सकती है। अतः इसमें सतर्क रहना अत्यन्त आवश्यक है।

स्मारकस्थानचिह्नानि रक्षणीयानि पूर्णतः ।
पुरातनानि सर्वाणि भारतेऽस्मिन्प्रशासकैः ।।८४ ।।

वैभवबोधिनी--स्मारकस्थानचिह्नानीति.....

अस्मिन्-इह, **भारते**- भारतवर्षे। **पुरातनानि**-अतिप्राचीनानि। **सर्वाणि**-निखिलानि। **स्मारकस्थानचिह्नानि**-ऐतिह्यदर्शनीयस्थानचिह्नस्थलानि। **प्रशासकैः**-स्वदेशप्रशासनव्यवस्थानिरतैः। **पूर्णतः**-सर्वतः किंवा समग्ररूपेण। **रक्षणीयानि**-अवनीयानि किंवा सर्वविधिना परमाश्यकरूपेण संरक्षणयोग्यरूपाणि सन्तीति संक्षिप्तभावः।

भावार्थ-जितने भी अपने भारत राष्ट्र में अतीव प्राचीनतम स्मारक स्थल विद्यमान हैं, उनका सर्वविधा से अपने उच्च प्रशासकों द्वारा संरक्षण किया जाना नितान्त अनिवार्य है।

राष्ट्रैराचरणीयञ्च मिथः सौहार्दमुत्तमम् ।
कदापि विग्रहो नैव कार्यो विवेकनिर्भरैः ।।८५।।

वैभवबोधिनी--राष्ट्रैरिति.....

राष्ट्रैः-सर्वदेशेः। **मिथः**-परस्परम्। **उत्तमम्**-सुन्दरम्। **सौहार्दम्**-प्रीतिभावः। **आचरणीयम्**-पालनीयम्। **विवेकनिर्भरैः**-ज्ञानसमाश्रितैः। **कदापि**-कस्मिन्नपि समये। **विग्रहः**-विद्रोहः। **नैव**-नहि। **कार्यः**-कर्तव्यः ॥८५॥

भावार्थ--विश्व के समस्त राष्ट्रों को परस्पर प्रेम भाव बर्तना चाहिये। विवेक का समाश्रय ग्रहण कर कभी भी विग्रह (युद्ध आदि) नहीं करने चाहिये ॥८५॥

सदाऽनुशासनं देशे निष्कपटं हितप्रदम् ।
तद्विधेयं यदाख्यातं शास्त्रे शासनपारगैः ॥८६॥

वैभवबोधिनी--यदेति.....

देशे-भारते । **सदा**-सर्वदा । **निष्कपटम्**-छलछिद्ररहितम् । **अनुशासनम्**-शासनम् । **हितप्रदम्**-मंगलप्रदम् । **शासनपारगैः**-शासनपारंगतैः। **शास्त्रे**-आम्नाये । **यदाख्यातम्**-यदुपदिष्टम् । **तद्विधेयम्**-तत्कर्तव्यम् ॥८६॥

भावार्थ--देश में सदा सर्वदा निष्कपट अनुशासन ही हितप्रद है ! शासन में प्रवीण महानुभावों द्वारा शास्त्रों में जो निर्देश किया हुआ है वही करना परम कर्तव्य है ॥८६॥

गोरक्षा सर्वथा कार्या प्रजाभिः शासकैः सदा ।
गोहननं निरोद्धव्यं दुस्सहं राष्ट्रघातकम् ॥८७॥

वैभवबोधिनी--गोरक्षेति.....

प्रजाभिः-प्रजाजनैः । **शासकैः**-शासकजनैः । **सदा**-सर्वदा । **सर्वथा**-सर्वप्रकारेण । **गोरक्षा**-गोसुरक्षा । **कार्या**-कर्तव्या । **दुस्सहम्**-असह्यम् । **राष्ट्रघातकम्**-देशविनाशकम् । **गोहननम्**-गोविनाशदुष्कृत्यम्। **निरोद्धव्यम्**-अवरोद्धव्यम् ॥८७॥

भावार्थ--प्रजाजन एवं प्रशासकों द्वारा सदा सब प्रकार से गोरक्षा होनी चाहिये । इस अति भयङ्कर राष्ट्र घातक गो-वध को सर्वविधरूप से अवश्य रोकना चाहिये अर्थात् इसका नितान्तरूपेण परिहार अत्यन्त आवश्यक है ॥८७॥

सद्ग्रन्थानां सदा छात्रैः सुसमाहितचेतसा ।
स्वाध्यायो गुरुसेवा च विधातव्या सुनिष्ठया ॥८८॥

वैभवबोधिनी--सद्ग्रन्थानामिति.....

छात्रैः-विद्यार्थिभिः । **सदा**-सर्वदा । **सुसमाहितचेतसा**-एकाग्रमनसा । **सद्ग्रन्थानाम्**-श्रेष्ठशास्त्राणाम् । **स्वाध्यायः**-शास्त्राऽभ्यासः । **च**-पुनः । **गुरुसेवा**-गुरुशुश्रुषा । **सुनिष्ठया**-श्रद्धापूर्वकम् । **विधातव्या**-प्रकर्तव्या ॥८८॥

भावार्थ--छात्रों को सुसमाहित चित्त से सदा सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय और गुरु-सेवा निष्ठापूर्वक करनी चाहिये ॥८८॥

त्याज्यं छात्रैरिदं सर्वमालस्यं व्यर्थचिन्तनम् ।
आन्दोलनं तथाऽतथ्यं दुर्व्यसनं कुभोजनम् ॥८९॥

वैभवबोधिनी--त्याज्यमिति.....

छात्रैः-छात्रवृन्दैः । **आलस्यम्**-प्रमादः । **व्यर्थचिन्तनम्**-व्यर्थमननम् । **आन्दोलनम्**-विरोधप्रदर्शनम् तथा-एवञ्च । **अतथ्यम्**-मिथ्याभाषणम् । **दुर्व्यसनम्**-मादकपदार्थसेवनम् । **कुभोजनम्**-कुत्सितान्नभोजनम् । **इदं सर्वम्**-सम्पूर्णम् । **त्याज्यम्**-हेयम्, अर्थात् सर्वथानिराकरणीयमित्यर्थः ॥८९॥

भावार्थ--विद्यार्थियों को आलस्य, व्यर्थचिन्तन, आन्दोलन, मिथ्याभाषण, दुर्व्यसन और दूषित भोजन इन सभी का परित्याग कर देना चाहिये ॥८९॥

मद्याऽऽमिषादिकं हेयं द्यूतोत्कोचनिषेवणम् ।
एतत्सर्वं वहिष्कार्य हिताहितविचारकैः ॥९०॥

वैभवबोधिनी--मद्याऽऽमिषादिकमिति.....

मद्याऽऽमिषादिकम्-मदिरामांसादिकम् । **द्यूतोत्कोचनिषेवणम्**-कैतवोत्कोचपरायणत्वम् । **हेयम्**-त्याज्यम् । **हिताहितविचारकैः**-शुभाशुभविमर्शकैः । **एतत्सर्वम्**-एतत्सम्पूर्णम् । **बहिष्कार्यम्**-निष्काशितव्यम् ॥९०॥

भावार्थ--मदिरा, माँस एवं जूआ खेलना, घूसखोरी करना आदि इन सब हेय वस्तुओं का परित्याग एवं हित और अनहित का विचार करने वाले व्यक्तियों द्वारा इन सबका बहिष्कार होना चाहिये ॥९०॥

तास्कर्यं सर्वथा त्याज्यं मिथ्याप्रजल्पनं तथा ।
एवमौद्धत्यनास्तिक्यं निखिलै र्मनुजैः सदा ।।६१।।

वैभवबोधिनी--तास्कर्यमिति.....

तास्कर्यम्-चौर्यं चौरवृत्तिः । **तथा**-तेनैव प्रकारेण । **मिथ्या-प्रजल्पनम्**-असत्यभाषणम् । **एवम्**-अनेनैव प्रकारेण । **औद्धत्यम्**-औद्दण्ड्यम्, उच्छृंखलवृत्तित्वम् । **नास्तिक्यम्**-परब्रह्मणि सर्वेश्वरे आस्था-राहित्यम् । **निखिलैः**-सम्पूर्णैः । **मनुजैः**-जनैः । **सदा**-सर्वदा । **सर्वथा**-सर्वप्रकारेण । **त्याज्यम्**-त्यक्तुं योग्यं त्याज्जमित्यर्थः ।।६१।।

भावार्थ--अनधिकार पूर्वक किसी वस्तु को हड़पना या चोरी करना, मिथ्या भाषण करना तथा उच्छृंखलवृत्ति और नास्तिकता ये सभी मानवमात्र द्वारा सदैव सर्वथा परित्याज्य होने चाहिये ।।६१।।

व्यापारे कपटं जह्याद्वस्तुमात्रे च मिश्रणम् ।
येन स्वकीयदेशस्य प्रतिष्ठा सुस्थिरा भवेत् ।।६२।।

वैभवबोधिनी--व्यापार इति.....

व्यापारे-क्रय-विक्रयकार्ये अर्थात् व्यापारव्यवहारे । **कपटम्**-कैतवम् । **च**-पुनः । **वस्तुमात्रे**-प्रत्येकपदार्थमात्रे । **मिश्रणम्**-मेलनम् । **जह्यात्**-परित्यजेत् । **येन**-यतः । **स्वकीयदेशस्य**-स्वीयभारतदेशस्य । **प्रतिष्ठा**-महिमा-किंवा गौरव-गरिमा । **सुस्थिरा**-सुदृढा । **भवेत्**-भूयादित्यर्थः ।।६२।।

भावार्थ--व्यापार में किसी भी प्रकार का कपट करना एवं वस्तु मात्र (प्रत्येक पदार्थ) में मिलावट करना आदि छोड़ देना चाहिये, जिससे अपने देश की प्रतिष्ठा अर्थात् गरिमा बनी रहे ।।६२।।

सर्वेश्वरे सदा भक्तिः कार्या सुखाभिवाञ्छकैः ।
दैन्यञ्चाऽऽस्तिक्यमत्यन्तं धारणीयं विचक्षणैः ।।६३।।

वैभवबोधिनी--सर्वेश्वर-इति.....

सुखाभिवाञ्छकैः-सुखाभिलाषुकैः । **विचक्षणैः**-विद्वद्भिः । **सदा**-सर्वदा । **सर्वेश्वरे**-अखिलेश्वरे । **भक्तिः**-प्रेमानुरक्तिः । **कार्या**-विधातव्या । **दैन्यम्**-दीनभावः । **आस्तिक्यम्**-आस्तिकता अर्थात् भगवत्सत्तायां विश्वास

इतिभावः । **अत्यन्तम्**-अपरिमितम् । **धारणीयम्**-धारितव्यम् ॥९३॥

भावार्थ--सुख चाहने वाले बुद्धिमानों को भगवान् श्रीसर्वेश्वर में दृढ विश्वास रखते हुये अत्यन्त दीन भावना के साथ उनकी भक्ति करनी चाहिये ॥९३॥

प्राध्यापकमहाभागैः पाठने पटुभिस्तथा ।
पाठनीयाः समे छात्रा निर्व्यलीकं शुभाशयैः ॥९४॥

वैभवबोधिनी--प्राध्यापकमहाभागैरिति.....

शुभाशयैः-शुद्धभावैरर्थात् शुद्धान्तःकरणैः । **पाठने**-अध्यापने । **पटुभिः**-कुशलैः । **प्राध्यापकमहाभागैः**-शिक्षकमहानुभावैः । **समे**-सर्वे । **छात्राः**-छात्रगणाः । **निर्व्यलीकम्**-कपटरहितम् । **पाठनीयाः**-अध्यापनीयाः ॥९४॥

भावार्थ--पढ़ाने में परमकुशल अध्यापक महानुभावों द्वारा निष्कपट और शुद्ध भाव से सभी छात्र पढ़ाये जाने चाहिये ॥९४॥

वैदिक्याध्यात्मिकी शिक्षा सर्वमङ्गलकारिणी ।
भारते नितरां भूयात्प्रमादस्तत्र घातकः ॥९५॥

वैभवबोधिनी--वैदिक्याध्यात्मिकीति.....

वेदिक्याध्यात्मिकी-शिक्षा--वेदादिशास्त्रप्रतिपादित-आत्म-परमात्म-तत्त्वज्ञानोद्बोधप्रदा शिक्षा । **सर्वमङ्गलकारिणी**-सर्वानन्दप्रदायिनी। **भारते**-भारतवर्षे । **नितराम्**-सदा । **भूयात्**-अस्तु । **तत्र**-तस्मिन् । **प्रमादः**-अनवधानता, अर्थादालस्यः । **घातकः**-विनाशकः प्रभवति ॥९५॥

भावार्थ--सर्वमङ्गल प्रदान करने वाली वैदिक परम्परानुगत आध्यात्मिकी शिक्षा भारत में निरन्तर हो इसमें प्रमाद करना परम घातक है ॥९५॥

दर्शनं चलचित्राणामसत्साहित्यचिन्तनम् ।
विज्ञैः कदापि नो कार्यं प्रबुद्धसुजनैः सदा ॥९६॥

वैभवबोधिनी--दर्शनमिति.....

सदा-सर्वदा । **चलचित्राणाम्**-दूरदर्शनाद्यश्लीलचित्राणाम् । लोकभाषायां फिल्म-सिनेमादिच्छायाचित्राणामित्यर्थः । **दर्शनम्**-अवलोकनम्। तथा च । **असत्साहित्यचिन्तनम्**-अहितकरसाहित्यावलोकनम् । असदुपन्यासादिपठन-पाठनमित्यर्थः । **प्रबुद्धसुजनैः**-बुद्धिसम्पन्नैः । **विज्ञैः**-प्रेक्षावद्भिः । **कदापि**-कस्मिन्नपि समये । न-नहि । **कार्यम्**-करणीयम् ॥६६॥

भावार्थ--चल चित्र (फिल्म सिनेमा) दूरदर्शन में अश्लील चित्र विकृत वार्ता प्रसंग आदि का अवलोकन तथा असत्साहित्य (उपन्यासादि) का पठन-पाठन विचारवान् विज्ञ पुरुषों को कभी नहीं करना चाहिए ॥६६॥

चारित्र्यं जीवने सम्यग्माधुर्यं वचने शुभम् ।
कारुण्यं समनुष्ठेयं लोकैः सर्वैश्च सर्वदा ॥६७॥

वैभवबाधिनी--चारित्र्यमिति.....

सर्वै-समस्तैः । **लोकैः**-जनैः । **सर्वदा**-सर्वस्मिन् समये । **जीवने**-जीवनकाले । **सम्यक्**-सम्यक् प्रकारेण । **चारित्र्यम्**-चरित्रबलम् । **च**-पुनः । **वचने**-वाण्याम् । **माधुर्यम्**-सौष्ठवम् । **शुभम्**-मङ्गलम् । **कारुण्यम्**-करुणाभावः । **समनुष्ठेयम्**-धारणीमित्यर्थः ॥६७॥

भावार्थ--सभी मनुष्यों को सब समय अपने जीवन काल में चरित्र-बल और वचन में मधुरता, तथा दैन्य भाव आदि इन सब शुभ कर्मों का पालन करना चाहिये ॥६७॥

युवकै मुर्ख्यता देशे सेवनीयाऽऽत्मसंस्कृतिः ।
हातव्ये परराष्ट्राणां सभ्यता-संस्कृती सदा ॥६८॥

वैभवबोधिनी--युवकैरिति.....

देशे--भारतवर्षे । **मुख्यतः**-प्रधानतः । **युवकैः**-वयस्कैः । **आत्मसंस्कृतिः**-स्वकीयसंस्कृतिः, अर्थात् भारतीयपरम्पराप्रणालिः । **सेवनीया**-परिपालनीया । **परराष्ट्राणाम्**-इतरदेशानाम् । सभ्यता च संस्कृतिश्च सभ्यतासंस्कृती । **सभ्यता**-भोजनाच्छादननिवासव्यवहारकर्तव्यादिपद्धतिः। **संस्कृतिः**-तत्रत्या प्रणाली । **सदा**-सर्वदा । **हातव्ये**-परित्यक्तव्ये (परराष्ट्र-सभ्यतासंस्कृतीति यावत्) ॥६८॥

भावार्थ--प्रधानतया इस देश के युवकजनों को अपनी संस्कृति अर्थात् भारतीय परम्परा प्रणाली का ही सेवन करना चाहिये । इतर राष्ट्रों की सभ्यता एवं संस्कृति का सर्वथा परित्याग करना अत्यन्त आवश्यक है ॥९८॥

राष्ट्राभिवृद्धये योग्यै र्युवकैः कार्यमुत्तमम् ।
नित्यमाचरणीयञ्च तत्परताऽभिपूर्वकम् ॥९९॥

वैभवबोधिनी--राष्ट्राभिवृद्धय इति....

योग्यैः-शिक्षितैः । **युवकैः**-वयस्कैः । **राष्ट्राभिवृद्धये**-देशसमुन्नतये। **च**-पुनः । **तत्परताऽभिपूर्वकम्**-मनोयोगेन । **उत्तमम्**-श्रेष्ठम् । **कार्यम्**-कर्तव्यम् । **नित्यम्**-प्रतिदिनम् । **आचरणीयम्**-परिपालनीयम् ॥९९॥

भावार्थ--समर्थ युवकजनों को देश की समुन्नति हेतु बड़ी तत्परता के साथ महत्वपूर्ण कार्यों में सदा संलग्न रहना चाहिए ॥९९॥

दीनार्त्तातुरलोकेभ्यो योगक्षेमार्थमञ्जसा ।
कर्त्तव्यः सर्वथा यत्न उत्तमैः पुरुषैः दृढः ॥१००॥

वैभवबोधिनी--दीनार्त्तातुरलोकेभ्य इति.....

उत्तमैः-श्रेष्ठैः । **पुरुषैः**-मानवैः । **दीनाऽर्त्ताऽतुरलोकेभ्यः**-दारिद्र्य-दुःखरोगाऽक्रान्तजनेभ्यः । **योगक्षेमार्थम्**-अलभ्यलाभोयोगः, योगस्य प्राप्तस्य रक्षणं क्षेमः, योगक्षेमः तदर्थम् । **अञ्जसा**-झटिति । **दृढ़ः**-कठोर अर्थात् प्रबलः । **यत्नः**-प्रयत्नः । **सर्वथा**-सर्वप्रकारेण । **कर्तव्यः**-करणीयः ॥१००॥

भावार्थ--श्रेष्ठ पुरुषों को दीन, दुःखी, रोगियों के योगक्षेम निर्वाह हेतु अविलम्ब सर्वविध रूप से दृढ़तम प्रयत्न करते रहना चाहिये ॥१००॥

पात्रता प्रियता नित्यं दीनताऽप्यथ शुद्धता ।
दया सरलता मर्त्यैं धारणीया स्वकान्तरे ॥१०१॥

वैभवबोधिनी--पात्रतेति.....

पात्रता-श्रेष्ठता । **प्रियता**-प्रीतिपरायणता । **दीनता**-अकिञ्चनता। **अपि**-अपिशब्दस्तु दृढतात्द्योतनार्थम् । **अथ**-अनन्तरम् । **शुद्धता**-पवित्रता। **दया**-करुणा । **सरलता**-सरलस्वभावपरायणता । **मर्त्यैः**-नरैः । **स्वकान्तरे**-स्वकीय मानसे । **नित्यम्**-सर्वदा । **धारणीया**-स्थापनीया ॥१०१॥

भावार्थ--सरलता, श्रेष्ठता, पवित्रता, दीनता, और दया तथा प्रियता सभी मनुष्यों को नित्य धारण करने योग्य है ॥१०१॥

भारतवर्षदेशस्याऽखण्डतार्थं सुनायकैः ।

तस्य गौरवरक्षार्थं यतनीयं निरन्तरम् ॥१०२॥

वैभवबोधिनी--भारतवर्षदेशस्येति.....

सुनायकैः-श्रेष्ठशासकैः । **भारतवर्षदेशस्य**-भारतदेशस्य । **अखण्डतार्थम्**-अखण्डतायै, अर्थात् अविभक्ततार्थम् तथा **तस्य**-भारतवर्षस्य । **गौरवरक्षार्थम्**-महत्वसुरक्षार्थम् । **निरन्तरम्**-सर्वदैव । **यतनीयम्**-प्रयत्नं करणीयम् ॥१०२॥

भावार्थ--श्रेष्ठ प्रशासकों द्वारा भारत की अखण्डता के लिये तथा उसके गौरव की रक्षा हेतु निरन्तर प्रयत्न करना चाहिये ॥१०२॥

उपाया विश्वशान्त्यर्थं यतनीयाश्च सज्जनैः।

संहारकाणि शस्त्राणि वर्जनीयानि सर्वतः ॥१०३॥

वैभवबोधिनी--उपाया इति.....

सज्जनैः-सत्पुरुषैः । **विश्वशान्त्यर्थम्**-विश्वशान्तिकामनार्थम् । **उपायाः**-उद्योगाः । **यतनीया**-प्रयत्नपूर्वकं करणीयाः । **संहारकाणि**-प्राणघातकानि । **शस्त्राणि**-शस्त्रास्त्राणि भीषण विस्फोटकानि, अणुबमादिप्रसिद्धानि प्रक्षेपणान्यस्त्राणि । **सर्वतः**-परितः । **वर्जनीयानिः**-त्याज्यानि ॥१०३॥

भावार्थ--सभी सज्जनों को विश्व शान्ति हेतु उपाय करना चाहिये। संहारकारी (प्राण घातक) अणुबम आदि विस्फोटक शस्त्रास्त्रों का निर्माण सर्वथा स्थगित करना आवश्यक है ॥१०३॥

शास्त्रविधि र्न हातव्यो यः सर्वमङ्गलप्रदः ।

तद्राहित्येन हानिः स्यादित्यत्र नास्ति संशयः ॥१०४॥

वैभवबोधिनी--शास्त्राविधिरिति.....

यः सर्वमङ्गलप्रदः--यः सर्वानन्दप्रदायकः । **शास्त्रविधिः**-शास्त्रविधानम् । **न**-नहि । **हातव्यः**-वर्जितव्यः । **तद्राहित्येन**-तदभावेन । **हानिः**-क्षतिः **स्यात्**-भवेत् । अस्मिन् विषये भगवता श्रीकृष्णेनाप्युक्तं धनञ्जयं प्रति

गीताशास्त्रे ।

य: शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न सः सिद्धिमवाप्नोति सुखं न परां गतिम् ।।

इत्यत्र-अस्मिन् विषये । संशयः-सन्देहः । नास्ति ॥१०४॥

भावार्थ--जो सर्व मङ्गल प्रद शास्त्र विधि है उसका परित्याग नहीं करना चाहिये । परित्याग करने से निस्सन्देह बड़ी हानि है ॥१०४॥

त्याज्यः पाश्चात्यवेषश्च छात्रै र्देशनिवासिभिः ।
भारतीयसुवेषो हि ग्राह्यः परमसात्विकः ।।१०५ ।।

वैभवबोधिनी--त्याज्य इति.....

देशनिवासिभिः-देशवास्तव्यैः । **छात्रैः**-विद्यार्थिभिः । **पाश्चात्यवेषः**- आंग्लप्रभृतिविदेशीयवस्त्रादिवेषः । **त्याज्यः**-हातव्यः । **हि**-इति निश्चयेन । **च**-तथा । **परमसात्विकः**-अतीवसुन्दरसात्विकस्वरूपात्मकः । **भारतीयसुवेषः**-भरतीयवेषः । **ग्राह्यः**-धारणीयः ॥१०५॥

भावार्थ--देश वासियों को छात्रों को पाश्चात्य वेष-भूषा का परित्याग कर परम सात्विक भारतीय वेषभूषा ही ग्रहण करना चाहिये ॥१०५॥

आप्तमार्गानुसारेण धर्मशास्त्राऽज्ञया बुधैः ।
व्यवस्थैतादृशी कार्या यद्यशो रक्षितं भवेत् ।।१०६।।

वैभवबोधिनी--आप्तेति.....

बुधैः-प्रज्ञावद्भिः श्रेष्ठैः पुरुषैः । **आप्तमार्गानुसारेण**-पुण्यश्लोकमहापुरुषनिर्दिष्टपथा । **धर्मशास्त्राऽज्ञया**-श्रुति-स्मृति-पुराणादिधर्मशास्त्रादेशेन। **एतादृशी**-एवंविधा । **व्यवस्था**-विधिस्वरूपात्मिका व्यवस्था । **कार्या**-विधेया। **यत्**-येन । **यशः**-देशस्य दिव्यधवलयशः, अर्थात् परमसुभगनिर्मलसुयशः । **रक्षितम्**-सुरक्षितम् । **भवेत्**-प्रभवेत् ॥१०६॥

भावार्थ--यथार्थवक्ता महापुरुषों द्वारा निर्दिष्ट मार्ग के अनुसार तथा ज्ञास्त्र कथित ओदश पर उत्तम पुरुषों को सुन्दर व्यवस्था देनी चाहिये जिससे हमारा एवं हमारे देश का उज्ज्वल यश प्रतिष्ठित रहे ॥१०६॥

पाश्चात्यपथमादायाऽचरन्ति ये जना द्रुतम् ।
भवन्तु सावधानास्ते तिष्ठन्तु स्वीयसंस्कृतौ ।।१०७।।

वैभवबोधिनी--पाश्चात्येति.....

ये जनाः-ये भारतवर्षवास्तव्या भारतीयपरमानादिसनातनवैदिक-हिन्दूसंस्कृति-सम्पोषका मनुजाः । **पाश्चात्यपथम्**-वैदेशिकसरणिम् । **आदाय**-गृहीत्वा। **आचरन्ति**-आचरणं कुर्वन्ति। **ते**-जनाः । **द्रुतम्**-झटित्येव। **सावधानाः**-सतर्काः । **भवन्तु**-जायन्ताम् । तथा च **स्वीयसंस्कृतौ**-स्वकीयशास्त्रोपदिष्ट-सनातनसंस्कृतौ । **तिष्ठन्तु**-स्थिता भवन्तु ॥१०७॥

भावार्थ--जो भारतीय जन पाश्चात्य विदेशी लोगों का अन्धानुकरण करके विपरीत आचरण करते हैं, उसे वे सर्वथा त्याग दें और अविलम्ब सावधान होकर स्वदेशस्थ अनादिवैदिकसनातन संस्कृति का पालन करने में तत्पर हो जाँय ॥१०७॥

पूर्वजानां दृढाऽऽस्थानां धर्मतत्त्वविदां सताम् ।
तपसोज्ज्वलपुण्यानां ग्राह्यो मार्गः सुखप्रदः ॥१०८॥

वैभवबोधिनी--पूर्वजानामिति.....

तपसा-तपश्चर्या । **उज्ज्वलपुण्यानाम्**-दिव्यस्वरूपाणाम् तथा चोत्तमश्लोकानाम् । **दृढाऽऽस्थानाम्**-सुदृढनिष्ठावताम् । **धर्मतत्त्वविदाम्**-वैदिकधर्मरहस्यमर्मज्ञानाम् । **सताम्**-श्रेष्ठपुरुषाणाम् । **पूर्वजानाम्**-ऋषीन्द्र-योगीन्द्र-मुनीन्द्रादिपरमामलात्ममहात्मनाम् । **सुखप्रदः**-परमानन्दप्रदायकः। **मार्गः**-पन्थाः । **ग्राह्याः**-प्राप्तव्य, अर्थात् समाचरणीयः ॥१०८॥

भावार्थ--तपश्चर्या से जिसका उज्ज्वल स्वरूप परम पुण्य रूप है, ऐसे परम आस्थावान् धर्मतत्त्ववेत्ता हमारे श्रेष्ठतम पूर्वज महापुरुषों द्वारा निर्दिष्ट सुखप्रद जो मार्ग है वही हम सबके लिये सर्वदा अनुसरणीय है ॥१०८॥

दुस्सङ्गः सर्वथा त्याज्यः संसेव्या साधुसङ्गतिः ।
अभिज्ञै र्नितरां लोकैः कर्तव्यमात्मचिन्तनम् ॥१०९॥

वैभवबोधिनी--दुस्सङ्ग इति.....

अभिज्ञैः-विज्ञैः कुशलैश्च । **लोकैः**-जनैः । **दुस्सङ्गः**-दुष्टपुरुषाणां सङ्गो दुस्सङ्ग कुसङ्गः । **सर्वथा**-सर्वतोभावेन । **त्याज्यः**-अग्राह्यः । **साधु-सङ्गतिः**-साधुपुरुषाणां सज्जनानां सङ्गतिः सत्सङ्गतिः । **संसेव्या**-सम्यक्रूपेण सेवनीया । **आत्मचिन्तनम्**-परमात्मचिन्तनमर्थात् भगवतः श्रीराधाकृष्णस्य

स्मरणं ध्यानं वा । **नितराम्**-निरन्तरम् । **कर्तव्यम्**-करणीयम् ॥१०९॥

भावार्थ--विज्ञजन व्यक्तियों का कर्तव्य है कि वे दुस्सङ्ग का सर्वथा त्याग करदें तथा उत्तम पुरुषों के पवित्र सत्सङ्ग में ही स्वयं को प्रवृत्त करें । सर्वदा सर्वेश्वर श्रीहरि की उपासना तथा उन्हीं का मङ्गलमय चिन्तन अपने जीवन का कर्तव्य समझें ॥१०९॥

तपसा लभ्यते शान्तिः तपसा लभ्यते सुखम् ।
तपसा लभ्यते कृष्णः तपस्तस्मात्समाचरेत् ॥११०॥

वैभवबोधिनी--तपसेति.....

तपसा-तपश्चर्यया, अर्थात् धारणा-ध्यान-समाधिप्रभृत्यष्टाङ्ग-योगैस्तथा च श्रीभगवन्नामसंकीर्तनजपानुष्ठानादिभिः तद्यथा-श्रीमद्भागवते--''श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् । अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्म-निवेदनम्'' इत्यादिसाधनैराराधनैश्च । **शान्तिः**-मानसिकी परमा शान्तिः । लभ्यते-प्राप्यते । **तपसा**-पूर्वोक्तशास्त्रोपदिष्टविविधोपासनादिश्रेष्ठसाधनैः । **सुखम्**-आत्म-परमात्मतत्त्व-विषयकपरमानन्दः, परमानन्दोऽयं श्रीभगवदुपा-सनयैव लभ्यते, यथोपनिषदि--''नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान् । तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् ॥'' **तपसा**-मनसा, वाचा, कर्मणा नैरन्तर्य्येण श्रीहरेरुपासनया । **कृष्णः**-पापानि विषयान्वा कर्षतीति कृषो धेनव इन्द्रियाणि वा कृषां नो नेता सर्वज्ञः सर्वप्रेरकः कृष्णोऽनन्तकोटिब्रह्माण्डाधीश्वरोजगन्नियन्ता सर्वेश्वरः पुराणपुरुषोत्तमो व्रजेन्द्रनन्दनो माधवः श्रीराधया सहितः श्रीकृष्णो यथोक्तं ''कृषि र्भू वाचकः शब्दोणश्च निवृत्तिवाचकः । तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते॥ ''कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्'' इति । लभ्यते-तद्दर्शनसौभाग्यं प्राप्यते । **तस्मात्**-एतस्मात्कारणात् । **तपः**-यथानिर्दिष्टप्रकारकं तपश्चरणम् । कर्तव्यम्--करणीयमेव ॥११०॥

भावार्थ--धारणा, ध्यान, समाधि आदि तपश्चर्याओं एवं श्रीप्रभु के श्रवण, कीर्तन, स्मरण आदि उत्तम साधनों से ही मानव को परम शान्ति प्राप्त होती है और इन्हीं पवित्र तपः साधनाओं से ही परमानन्द मिलता है तथा ये ही साधन निखिलभुवनमोहन सर्वेश्वर व्रजेश्वर आनन्दकन्द नन्दनन्दन

भगवान् श्रीकृष्ण के परम मञ्जुल मनोहर दर्शन कराने के माध्यम हैं । अतः इन्हीं पवित्र तपः साधनाओं में मानव को सर्वदा प्रवृत्त रहना आवश्यक है॥११०

प्राप्तव्यो वैदिको धर्मः सर्वलोकहितप्रदः ।

अमङ्गलहरो मर्त्यैः ज्ञान-विज्ञानप्रापकः ।।१११।।

वैभवबोधिनी--प्राप्तव्य इति.....

मर्त्यैः--मानवैः । ज्ञान-विज्ञानप्रापकः-अनन्तज्ञान-विज्ञान-प्रदायकः। **अमङ्गलहरः**-बहुजन्मार्जिताऽशुभसंस्कारविनाशकोऽर्थात् परमपुण्यकरः । **सर्वलोकहितप्रदः**-निखिलजनकल्याणकारी । **वैदिको धर्मः**-श्रुति-स्मृति-पुराण-सूत्र-तन्त्रादिवर्णिताऽनाद्यविच्छिन्नसनातनधर्मः । **प्राप्तव्यः**-ग्रहीतव्योऽर्थाज्जीवने सर्वदा समाचरणीय इति स्फुटम् ॥१११॥

भावार्थ--मानव मात्र द्वारा वैदिक-धर्म सर्वदा पालनीय है । यह वैदिक धर्म अनन्त ज्ञान-विज्ञान को प्रदान करने वाला है । इसके सेवन से समस्त अशुभ स्वतः नष्ट हो जाते हैं । यह धर्म प्राणीमात्र की हित-कामना करता है । ऐसे धर्म का आश्रय सर्वदा मङ्गलरूप है ॥१११॥

आचारहीनता देशे व्याप्ता लोकेषु दुस्सहा ।

ध्रुवं निवारणीया सा सभ्यैराचारतत्परैः ।।११२।।

वैभवबोधिनी--आचारहीनतेति.....

देशे-स्वदेशे भारतवर्षे । **लोकेषु**-जनेषु । **व्याप्ता**-परिव्याप्ता, अर्थात् विपुलरूपेण विद्यमाना वर्तते । **आचारहीनता**-शास्त्रोपदिष्टसदाचाररहितता। **दुस्सहा**-दुःखेन सह्यमाना । **सा**-आचारहीनता । **आचारतत्परैः**-सदाचार-सेवनरतैः । **सभ्यैः**-उत्तमैः पुरुषैः । **ध्रुवम्**-निश्चयात्मकरूपेण । **निवारणीया**-दूरी करणीया, अर्थात् सदाचारप्रचाराय निरन्तरं श्रेष्ठैः पुरुषै र्यतनीयमिति निष्कर्षः ॥११२॥

भावार्थ--अपने देश में प्रायः जन समुदाय में अत्यन्त दुस्सह जो आचारहीनता व्याप्त हो रही है उसके निवारण के लिये आचारनिष्ठ उत्तम महापुरुषों को निश्चित रूप से विशेष प्रयत्न करना चाहिये ॥११२॥

निरर्थकं प्रकुर्वन्ति स्वदेशे कलहं जनाः ।

विहाय विग्रहं तूर्णं यतन्तां सुखलब्धये ।।११३।।

वैभवबोधिनी--निरर्थकमिति.....

स्वदेशे-स्वकीय-भारत-देशे । **जनाः**-ये नराः । **निरर्थकम्**-निष्प्रयोजनम् । **कलहम्**-विवादम् । **प्रकुर्वन्ति**-विदधतीति सर्वथैवाऽहित-करम् । अतस्ते **विग्रहम्**-संघर्षम् । **तूर्णम्**-त्वरितमेव । **विहाय**-विमुच्य । **सुखलब्धये**-यथार्थसुखप्राप्तये । **यतन्ताम्**-यत्नमाचरन्तु ॥११३॥

भावार्थ--देश में कितने ही लोग व्यर्थ में कलह (संघर्ष) करते रहते हैं । उन सभी को स्वस्थ हृदय से विचार कर अविलम्ब ऐसे निरर्थक झगड़ों को छोड़कर परमार्थ सुख की प्राप्ति हेतु प्रयत्न करना चाहिये ॥११३॥

दृष्ट्वा चेखिद्यते चेतः स्वदेशे भ्रष्टजीवनम् ।
तन्निरोधाय कर्तव्या उपाया लोकनायकैः ॥११४॥

वैभवबोधिनी--दृष्ट्वेति.....

स्वदेशे-स्वीयभारते देशे । **भ्रष्टजीवनम्**-निकृष्टजीवनमर्थादिदानींत-नानामनेकेषां लोकानां गर्ह्यजीवनम् । **दृष्ट्वा**-विलोक्य । **चेतः**-मनः । **चेखिद्यते**-पौनः पुन्येन क्लिश्यते । **लोकनायकैः**-जनमूर्द्धन्यैरर्थात् विशिष्ट-महानुभावैः । **तन्निरोधाय**-तदवरोधनाय । **उपायाः**-उद्यमाः । **कर्तव्याः**-विधातव्याः ॥११४॥

भावार्थ--देश में अधिकांश लोगों का जीवन बड़ा ही भ्रष्ट एवं निकृष्ट है जिसे देखकर हृदय बड़ा ही दुःखी होता है । उत्कृष्ट धीर पुरुषों का कर्तव्य है कि वे इसके निरोध के लिये प्रबलतम प्रयत्न करें ॥११४॥

सच्छास्त्राणां सदाऽभ्यासो विधेयश्चैकचेतसा ।
येन मानसिको रोगो दूरं गच्छति निश्चितम् ॥११५॥

वैभवबोधिनी--सच्छास्त्राणामिति.....

सच्छास्त्राणाम्-उत्तमोत्तमशास्त्राणाम्, अर्थात् दिव्यज्ञानप्रदानां वेदपुराणादिशास्त्राणां किंवा श्रीमद्भागवत-रामायण-गीताप्रभृतिग्रन्थानाम्, आहोस्वित्--हिन्दी-व्रजभाषा-प्रादेशिक-विभिन्नभाषानिबद्धनां वाणीग्रन्था-नाम् । **अभ्यासः**-परिशीलनम्, अर्थात् ऊहापोहपूर्वकसम्यगालोडनम् । **एकचेतसा**-एकाग्रबुद्ध्या । **सदा**-अनवरतम् । **विधेयः**-मानवै र्विधातव्यः । **च**-अथ । **येन**-हेतुना । **मानसिकः**-मनोविषयकः । **रोगः**-आमयः ।

निश्चितं-ध्रुवम् । **दूरं गच्छति**-नश्यति । अत्राऽयं विचारः क्रियते यत् ''मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः'' अर्थादत्रभवबन्धनहेतुभूतं मनः श्रीभगवद्भावापत्तिरूपमोक्षप्राप्तिहेतुभूतमपि मन एव, अतो हि श्रीमद्भगवद्गीतायामपि धनञ्जयः परात्परपरब्रह्मपरमानन्दकन्दमुकुन्दमाधवं श्रीकृष्णं प्रति प्रार्थितवान् तद्यथा-''चञ्चलं हि मनः कृष्ण, प्रमाथि बलवद् दृढम् । तस्याऽहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ।'' एतावता मनः-स्थितिदर्शनं सुस्पष्टमेव । अत्राऽपि कौन्तयं प्रति भगवता गोविन्देन समुपदिष्टं यत् ''अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते'' वचनेऽस्मिन् श्रीहरिणा अभ्यासविषय एव प्रतिपादितः । तत्रापि ''अभ्यासः'' निगमागमपुराणादिधर्मशास्त्रप्रभृतिसमुपदिष्टसात्विकस्वरूपात्मकमनोनिग्रहरूप इति ॥११५॥

भावार्थ--मानव मात्र को चाहिये वे सर्वदा वेद-पुराण-भागवत-रामायण-गीता-वाणीग्रन्थ प्रभृति सद्ग्रन्थों का बड़ी लगन के साथ अभ्यास करें जिससे उनके नाना विकारमय उद्वेग निश्चित रूप से निस्सन्देह दूर हो जायेंगे ॥११५॥

ये सर्वान्प्रति सद्भावमाचरन्ति परस्परम् ।
प्रपूज्यास्ते परां शान्तिं लभन्ते नाऽत्र संशयः ॥११६॥

वैभवबोधिनी--ये सर्वानिति.....

ये-सर्वे जनाः । **सर्वान्प्रति**-समग्रमनुजान्प्रति न केवलं मानवमात्रं प्रति प्रत्युत सर्वान् चेतनाचेतनात्मकान् प्राणिमात्रं प्रति । **परस्परम्**-मिथः । **सद्भावम्**- साधीयसीं भावनाम् । **आचारन्ति**-प्रकुर्वन्ति । **ते**-एतादृशाः सर्वे जनाः । **प्रपूज्याः**-परमवन्दनीयाः । **पराम्**-परमाम् । **शान्तिम्**-आत्मतुष्टिम्। **लभन्ते**-सम्प्राप्नुवन्ति । **अत्र**-अस्मिन्प्रस्तुतप्रसङ्गे । **संशयः**-सन्देहः । **न**-नैवाऽस्तीति संक्षेपः ॥११६॥

भावार्थ--समस्त मानव मात्र को न केवल मनुष्य ही अपितु सम्पूर्ण प्राणी मात्र के प्रति परस्पर में सद्भाव रखना चाहिये । जो मानव ऐसा करते हैं वे निश्चय ही परम वन्दनीय हैं तथा उनके पवित्र जीवन में अवश्य ही निःसन्देह परम शान्ति प्राप्त होती है ॥११६॥

परोपकारमातिथ्यं सेवां सत्कारमेव च ।
समाचरन्तु देशेऽस्मिन्नितिशास्त्रानुशासनम् ।।११७।।

वैभवबोधिनी--परोपकारमिति.....

अस्मिन्-इह । **देशे**-भारतवर्षे । **परोपकारम्**-निखिलप्राणिनःप्रति-सदुपकारभावनाम् । **आतिथ्यम्**-अतिथिसमादरम् । **सेवाम्**-परिचर्यां सेवाभावनाम् । **च**-अनन्तरम् । **सत्कारम्**-गृहाऽगतसंमानम् । **एव**-निश्चयेन। **समाचरन्तु**-सम्यक्प्रकारेण विदधतु । **इति**-इदम् । **शास्त्राऽनुशासनम्**-श्रुति-स्मृति-पुराणादिधर्मशास्त्राणां विशिष्टतमोऽयमादेशः ।।११७।।

भावार्थ--अपने देश के निवासियों द्वारा परोपकार, आतिथ्य, सेवा, सत्कार भावना आदि सर्वदा आचरणीय है । श्रुति-स्मृति-पुराणादि धर्मशास्त्रों का यह दृढतम विशिष्ट आदेश है ।।११७।।

सर्वे प्रमुदिताः सन्तु सर्वे सन्तु विनिर्मलाः ।
सर्वे शमभिपश्यन्तु मा कश्चित्क्लेशमाप्नुयात् ।।११८।।

वैभवबोधिनी--सर्वे प्रमुदिता इति.....

सर्वे-समस्तचराचरप्राणिनः । **प्रमुदिताः**-प्रसन्नाः । **सन्तु**-भवन्तु। **सर्वे**-जीवजाताः । **विनिर्मलाः**-रोगरहिताः । **सन्तु**-भवन्तु । **सर्वे**-समे प्राणिनः । **शमभिपश्यतु**-कल्याणमभिपश्यन्तु । **कश्चित्क्लेशम्**-कोऽपि प्राणी दुःखम् । **मा**-नहि । **आप्नुयात्**-प्राप्नुयादित्यर्थः ।।११८।।

भावार्थ--प्राणी मात्र प्रसन्न हों, स्वस्थ हों तथा सभी सुख शान्ति देखें, कोई भी क्लेश (दुःख) के भागी न हों ।।११८।।

*

* भारत-भारती-स्तोत्रम् *

(१)

जयतु भारतं दिव्यभारतं
　　जयति भारती दिव्यभारतिः ।
जयतु भारतं श्रीविभूषितं
　　जयति भारती भूतिभूषिता ।।

(२)

जयतु भारतं देववन्दितं
　　जयति भारती विश्वभाविता ।
जयतु भारतं वेदवर्णितं
　　जयति भारती साधुसेविता ।।

(३)

जयतु भारतं भव्य-विस्तृतं
　　जयति भारती धीरभाषिता ।
जयतु भारतं वित्तपूरितं
　　जयति भारती भावुकैः स्तुता ।।

(४)

जयतु भारतं शास्त्रकीर्त्तितं
　　जयति भारती भक्तवर्णिता ।
जयतु भारतं भूसुराञ्चितं
　　जयति भारती मञ्जुशोभिता।।

(५)

जयतु भारतं भद्रसेवितं
　　जयति भारती भावनोदिता ।

जयतु भारतं ग्रन्थग्रन्थितं
जयति भारती विश्वविश्रुता ।।

(६)

जयतु भारतं वैभवान्वितं
जयति भारती धीमदादृता ।
जयतु भारतं साधकै र्वृतं
जयति भारती श्रेष्ठसाधिता ।।

(७)

जयतु भारतं पूर्णसंहतं
जयति भारती रत्नमण्डिता ।
जयतु भारतं धेनुभिस्ततं
जयति भारती भाग्यमोदिता ।।

(८)

जयतु भारतं सद्‌गुणान्वितं
जयति भारती भावभाविता ।
जयतु भारतं भीहरं श्रुतं
जयति भारती शान्तिशोभिता ।।

(९)

भारत-भारतीस्तोत्रं राष्ट्रभक्ति-विवेकदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

भारत-भारती-स्तोत्र

(हिन्दी भाषानुवाद)

दिव्य कान्ति से युक्त, परम शोभायमान भारतवर्ष की जय हो । असीम ऐश्वर्य सम्पन्न महाशोभारूप सुरभारती सरस्वती की जय हो ॥१॥

वेदों में जिसका वर्णन है, देव-समूह से सदा अभिवन्दित भारतवर्ष की जय हो । सम्पूर्ण जगत् जिसकी उपासना करता है, उत्तम पुरुषों द्वारा सर्वदा परिसेवित अर्थात् जिनके द्वारा निरन्तर जिसका अनुशीलन किया जाता है ऐसी सरस्वती रूपा देववाणी संस्कृत की सदा ही जय हो ॥२॥

अत्यन्त विशाल एवं जिसका महान् विस्तार है, नानाविध अनन्त सम्पदाओं का जो महाभण्डार है ऐसे भारतवर्ष की निरन्तर जय हो । वेदादि शास्त्रों के मर्मज्ञ धीर विद्वान् पुरुषों द्वारा जिसका गान किया जाता है, भावुकजनों द्वारा जिसकी नित्य-स्तुति की जाती है ऐसी देवभाषा भारती की सदा जय हो ॥३॥

समस्त शास्त्र जिसकी दिव्य धवल कीर्ति का गान करते हैं, सुयोग्य वेदज्ञ विप्रजनों द्वारा सर्वदा प्रपूजित भारत देश की सदा सर्वदा जय हो । श्रद्धालु भक्तों द्वारा जिसका विविध रूप से वर्णन किया जाता है, सुन्दर सुशोभित सरस्वती रूपा सुरभारती की सतत जय हो ॥४॥

श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा परिसेवित, नानाविध ग्रन्थों में जिसकी असीम महिमा का पर्याप्त उल्लेख है ऐसे सुरम्य भारतवर्ष की सर्वदा जय हो । यावन्मात्र समस्त विश्व में जिसकी असीम प्रतिष्ठा है, अपनी सात्विक भावना से ही जिसकी उपलब्धि होती है ऐसी सरस्वती भारती की प्रतिक्षण जय हो ॥५॥

दिव्यातिदिव्य वैभव से युक्त, सरस सात्विक साधक-समूह से

परिव्याप्त भारत की अनवरत जय हो । उत्तम विद्वज्जनों द्वारा जिसका सदा ही समादर किया जाता है, पुण्यश्लोक पुरुषों द्वारा जिसकी निरन्तर साधना की जावे ऐसी भास्वती सरस्वती सुरभाषा भारती की प्रतिपल जय हो जय हो ॥६॥

सभी प्रकार से जो पूर्णतया सुसंघटित है, अपरिमित गोवृन्द जिसकी पावन धरणी पर सतत विचरण करता हो ऐसे महावरिष्ठ भारतवर्ष की पुनः-पुनः जय हो । सुन्दरातिसुन्दर विविध रत्नों से सुशोभित, जिसकी उपलब्धि कहीं बड़े भाग्य से ही हो सकती है ऐसी परम शोभायमान भारती की सदा जय हो ॥७॥

अगणित श्रेष्ठ गुण-गणों से युक्त, आध्यात्मिक, आधिदैविक आधिभौतिक इन त्रिविध तापों का हरण करने वाला परम प्रख्यात जो भारतवर्ष उसकी सदा जय हो उत्तम भाव से ही जो प्रसन्न होती है, शान्त सुभग स्वरूप से परम सुशोभित देव भारती की अहर्निश जय हो ॥८॥

स्वकीय राष्ट्र भारतवर्ष की अनन्त भक्ति एवं शास्त्रों का दिव्य ज्ञान प्रदान करने वाला यह ''भारत-भारती-स्तोत्र'' जिसकी रचना आचार्यचरण द्वारा सम्पन्न हुई ॥९॥

भारतमातृगुणाष्टकम्

केशेन्द्रवन्दितां दिव्यां मुनिवृन्दै र्निसेविताम् ।
पूजितां विप्रवृन्दैश्च वन्दे भारतमातरम् ॥१॥
अनन्तैश्वर्यसम्पन्नां नानारत्नैश्च शोभिताम् ।
तप्तकाञ्चनदिव्याऽऽभां वन्दे भारतमातरम् ॥२॥
तपस्वि-योगिभि र्नित्यं ध्येयां गेयां सुमञ्जुलाम् ।
धीरै र्वीरै र्वरै र्भव्यां वन्दे भारतमातरम् ॥३॥
श्रीरामकृष्ण - पादाब्ज-मकरन्दसुवासिताम् ।
विमलां विष्णुरूपाञ्च वन्दे भारतमातरम् ॥४॥
श्रीधरां श्रीयुतां श्रीदां शान्ति-कान्तिगुणाऽन्विताम्।
श्रेयस्करीं सदा शुद्धां वन्दे भारतमातरम् ॥५॥
अमन्दाऽऽनन्ददां चारु कृष्णर्द्धि-सिद्धिसम्प्रदाम् ।
गो-विप्र-साधुभि र्हृद्यां वन्दे भारतमातरम् ॥६॥
श्रुतिशास्त्रगिरोद्गीतां नानाविद्या-कलाऽऽवृताम् ।
अध्यात्मदर्शनाऽऽधारां वन्दे भारतमातरम् ॥७॥
अतीववृहदाकारां - - परितोऽखण्डमण्डलाम् ।
चमत्कृतीन्दिराऽऽगारां वन्दे भारतमातरम् ॥८॥
सुख - शान्तिकरं स्तोत्रं भारतमातुरष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥९॥

भारतमातृगुणाष्टक

(हिन्दी भाषानुवाद)

ब्रह्मा, शिव, इन्द्रादि देवगणों द्वारा वन्दित, दिव्य स्वरूपा, मुनिवृन्द अर्थात् ऋषि-महर्षियों द्वारा परिसेवित और विद्वद्वृन्दों द्वारा परिपूजित श्रीभारतमाता की हम वन्दना करते हैं ॥१॥

अनन्तऐश्वर्यशालिनी मुक्ता-प्रवाल मणि-माणिक्यादि विविध रत्नों द्वारा परिशोभित अर्थात् जो रत्न गर्भा है और तपाये हुए स्वर्ण के समान दिव्य आभा (कान्ति) वाली ऐसी भारत-माता की हम वन्दना करते हैं ॥२॥

तपस्वी और योगीजनों द्वारा प्रतिदिन ध्यान और गान की जाने वाली, परम मनोहर तथा श्रेष्ठजन धीर-वीर पुरुषों से युक्त भारत-माता की हम वन्दना करते हैं ॥३॥

भगवान् श्रीराम और श्रीकृष्ण के चरणारविन्द-मकरन्द से परम सुवासित अर्थात् अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक सर्वेश्वर भगवान् श्रीराम-कृष्ण की यह परमपावन अवतरण स्थली है । अतीव निर्मल विष्णुस्वरूपा श्रीभारत-माता की हम वन्दना करते हैं ॥४॥

लक्ष्मी को धारण करने वाली, लक्ष्मी सम्पन्न, लक्ष्मी प्रदान करने वाली तथा शान्ति और कान्ति आदि गुणों से समायुक्त सदा सर्वदा कल्याण-कारिणी शुद्धस्वरूपा श्रीभारत-माता की हम वन्दना करते हैं ॥५॥

अजस्र-अखण्ड-आनन्द प्रदान करने वाली अतिशय सुन्दर सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की प्राप्ति कराने वाली रिद्धि-सिद्धि प्रदायिनी गो-ब्राह्मण और साधु-सन्तजनों से अत्यन्त सुशोभित ऐसी भारत-माता की हम वन्दना

करते हैं ॥६॥

वेदादि शास्त्रों की मन्त्रमयी दिव्य वाणी द्वारा प्रगीयमान विविध प्रकार की विद्या एवं कलाओं से परिपूर्ण और अध्यात्म दर्शन की आधारभूता भारत-माता की हम वन्दना करते हैं ॥७॥

वृहदाकार अर्थात् अति विस्तार स्वरूपा तथा अखण्डरूप मण्डलाकार (गोलाकार) आश्चर्यमयी अनन्त अक्षुण्ण लक्ष्मी का भण्डार ऐसी भारत-माता की हम वन्दना करते हैं ॥८॥

सुख शान्ति प्रदान करने वाले भारतमातृगुणाष्टक स्तोत्र की आचार्य-चरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा रचना की गई, जो सर्वदा मननीय है ॥९॥

युग्म-सिन्धु-वियन्नेत्रे शुभे वैक्रमवत्सरे ।
चैत्रमासे सिते पक्षे नवम्यां रविवासरे ॥१॥
''सन्त'' गोविन्ददासेन अजयमेरुवासिना ।
निम्बार्कपाक्षिकेत्याख्य-पत्रसम्पादकेन वै ॥२॥
निम्बार्काचार्यपीठस्य मया प्रचारमन्त्रिणा ।
श्रीमदाचार्यवर्याणां कृपया तदनुज्ञया ॥३॥
''वैभवबोधिनी'' टीका सर्वलोकसुखावहा ।
सम्पादिता यथाबुद्धिः सर्वेश्वरप्रसादतः ॥४॥

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

जयतु भारतम् जयतु भारती

जयतु भारत-संस्कृतिः

श्रीसर्वेश्वर प्रभु की	–	जय हो
भारतराष्ट्र की	–	विजय हो
संस्कृत भाषा का	–	प्रचार हो
श्रीमद्भगवद्गीता का	–	स्वाध्याय हो
अध्यात्मविद्या का	–	सञ्चार हो
श्रुतिशास्त्रोक्तज्ञान का	–	प्रसार हो
मानवता का	–	ज्ञान हो
गंगाजल का	–	नित्य पान हो
गोमाता की	–	जय हो
देवस्थानों की	–	सुरक्षा हो
अविद्या का	–	निवारण हो
सदाचार का	–	अवधारण हो

*

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

द्वारा विरचित-

* ग्रन्थमाला *

		प्रकाशित	श्लोक सं.
१.	श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातःस्तवराज पर (युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या	,,	
२.	श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	११८
३.	उपदेश - दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
४.	श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२)	,,	
५.	श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३६५
६.	श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०५
७.	श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	५८
८.	हिन्दु-संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
९.	भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३७
१०.	श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८६
११.	श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	४०
१२.	श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	२२
१३.	श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१५
१४.	भारत कल्पतरु (पद सं० ६६, दोहा सं० १६०)	,,	
१५.	श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६५
१६.	विवेक-वल्ली (पद सं० ४१६)	,,	
१७.	नवनीतसुधा (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
१८.	श्रीसर्वेश्वरशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०८
१९.	श्रीराधाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०३
२०.	श्रीनिम्बार्कचरितम् (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	

प्रकाशित श्लोक सं.

२१. श्रीवृन्दावनसौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ६०

२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी (पद सं.६४-दोहा सं.६२) ,,

२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम् (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, १०
(पद सं० २०)

२४. छात्र-विवेक-दर्शन (हिन्दी दोहा-पद्यात्मक) ,,
(दोहा सं० २४१)

२५. भारत-वीर-गौरव (हिन्दी-पद्यात्मक दोहा सं. १८१) ,,

२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,,
(दोहा सं० ३२)

२७. परशुराम-स्तवावली (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, १७
(दोहा सं० ४६, पद सं० ६)

२८. श्रीराधा-राधना (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, ५६
(पद सं० २८, दोहा सं० ५१)

२६. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १८

३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ३५

३१. श्रीराधामाधवरसविलास, महाकाव्य ,,
(दोहा सं० १०५३)

३२. गोशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १३५
(दोहा सं० ६३, पद सं० १४)

३३. श्रीसीतारामस्तवादर्शः (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, ८०
(दोहा सं. १०१, पद सं. १६)

३४. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम् अप्रकाशित ६३

कुल हिन्दी पद सं० २७८२ कुल श्लोक सं० १८२६

Computer Craft